ओ३म्

...य जगत में चमत्कार, विश्व इतिहास में पहली बार

यजुर्वेद के प्रथम १० अध्यायों का

ऋषिवर दयानन्द जी महाराज के भाष्य पर आधारित

सरल हिन्दी में

वेद काव्य

रचनाकार व प्रकाशक

चरित्रवान के सम्पादक व स्वामी ओम प्रकाश

द्वारा गुलशन मशीनरी कारपोरेशन जी. टी. रोड गाजियाबाद (उ० प्र०)



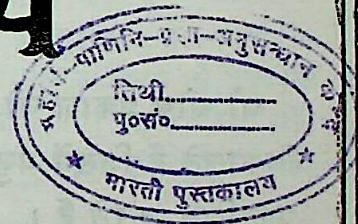
ओ३म्

साहित्य जगत में चमत्कार, विश्व इतिहास में पहली बार

जब तक वेद प्रचार न होगा, सुखी कभी संसार न होगा।
लक्ष्य अगर उपकार न होगा, देश का बेड़ा पार न होगा ॥

यजुर्वेद के प्रथम १० अध्यायों का
ऋषिवर दयानन्द जी महाराज के भाष्य पर आधारित
सरल हिन्दी में

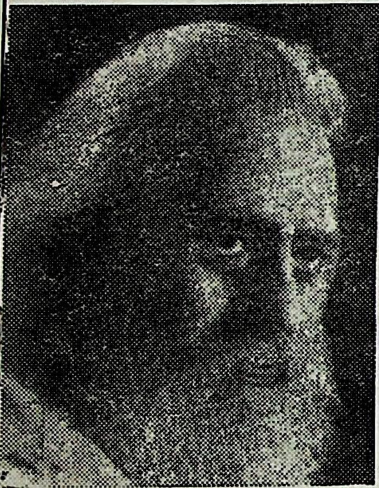
वेद काव्य



(चरित्रवान के १२०/- रु० के सहयोगियों को निःशुल्क)

रचनाकार व प्रकाशक
चरित्रवान के सम्पादक व स्वामी ओम प्रकाश
द्वारा गुडलक मशीनरी कारपोरेशन जी. टी. रोड गाजियाबाद (उ० प्र०)

स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती



(स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती)

संचालक समर्पण शोध संस्थान

४/४२ से० ५ राजेन्द्र नगर

साहिबाबाद (गाजियाबाद) (उ. प्र.)

सन्देश

श्री ओम प्रकाश जी आर्य गाजियाबाद में "चरित्रवान" नाम की एक पत्रिका निकालते हैं जिसमें यजुर्वेद के मन्त्रों की क्रमशः भावमय छन्दोबद्ध रचना को प्रकाशित करते हैं।

सामान्य व्यक्ति तक को वेदों से परिचय हो सके इसके लिए उनका वेद काव्य प्रकाशन का यह प्रयास सराहनीय व प्रशंसनीय है। श्री ओम प्रकाश जी आर्य की कवितायें सहज और सरल होती हैं, जो पाठक को मोहित करती है।

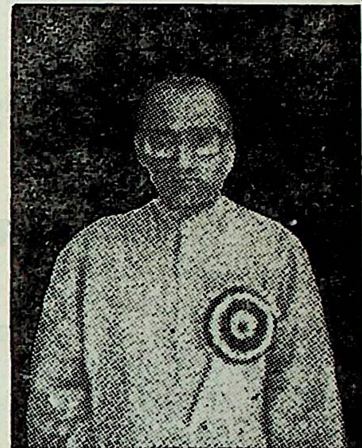
मैं उनकी काव्य प्रतिभा की चतुर्मुखी उन्नति चाहता हूं।

– दीक्षानन्द सरस्वती

स्थापित १९०८
रजिस्टर्ड १९१४

॥ ओ३म् ॥

तार—सार्वदेशिक
फोन : २७४७७१



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

(International Aryan League)

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,

नई दिल्ली—११०००२

(श्री आनन्द बोध सरस्वती)

श्री ओम प्रकाश जी,

सप्रेम नमस्ते !

आपका २४-८-९० का पत्र चरित्रवान पत्रिका की प्रति सहित प्राप्त हुआ। आपने चरित्र-वान पत्रिका का सम्पादन जिस योग्यता से किया है और चरित्र-निर्माण के विषय में उपयोगी सामग्री दी है; उसके लिए आर्यजनों का आशीर्वाद आपके साथ रहेगा। यह जानकर और प्रसन्नता हुई कि आप यजुर्वेद के प्रथम १० अध्यायों को सिक्खों की सुखमनि की तरह काव्य लय में प्रकाशित कर रहे हैं।

मुझे आशा है चरित्रवान के आगामी विशेषांकों में आप ऐसी सामग्री निरन्तर देते रहेंगे जिससे आर्य समाजों में नये रक्त का समावेश हो सकेगा।

पुनः शुभकामनाओं सहित,

भवदीय :
(स्वामी आनन्द बोध सरस्वती
प्रधान

श्री ओम प्रकाश जी
६१, तेलीवाड़ा, देहली गेट, गाजियाबाद

ओ३म्

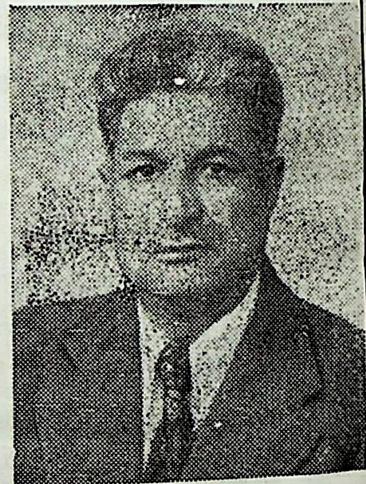
दूरभाष : ३४३७१८
५२७८८७

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आदरणीय भ्राता ओम प्रकाश जी,

सादर नमस्ते।



(श्री रामनाथ सहगल)

आपका पत्र दिनाँक ५-१०-९० का मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप लगन से चरित्रवान पत्र निकाल रहे हैं। आपने जुलाई, अगस्त, सितम्बर ९० की प्रतियों में आखिरी पृष्ठों पर यजुर्वेद का 'काव्य भाष्य' प्रति कापी तीन मन्त्र दिया है। मैंने इन्हें देखा है, मुझे बहुत पसन्द आया। यह जानकर कि आप २०० पेज का एक विशेषांक ६ रंग के कवर सहित बहुत बढ़िया कागज पर बड़े सुसज्जित रूप में निकाल रहे हैं, इसकी सफलता के लिए मैं अपनी ओर से तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

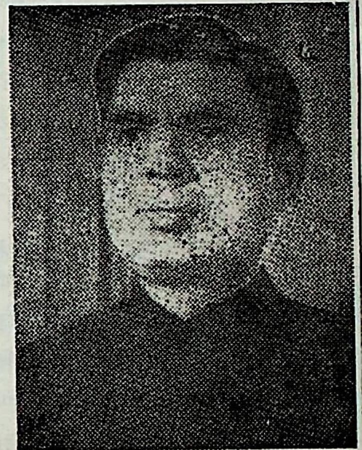
भवदीय

रामनाथ सहगल

मन्त्री

ओ३म्

साहाय्यमन्यस्य निजप्रकर्षः
(दूसरों की सहायता करने से अपनी उन्नति होती है)



(प्रशान्त वेदालंकार)

डा० प्रशान्त वेदालंकार

प्राध्यापक, हंसराज महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-११०००७

मान्य श्री ओम प्रकाश जी

मैंने चरित्रवान के कई अंक देखे हैं। आज का युग भौतिकता व नास्तिकता की आंधी में बह रहा है। ऐसे समय में चरित्रवान का प्रकाशन एक विशेष महत्व रखता है। उस आंधी को रोकने का सामर्थ्य भले ही इसमें न हो, पर उसकी तीव्र गति को कम करने का यह एक विनम्र प्रयास अवश्य है।

विशेष रूप से इसमें नियमित रूप से यजुर्वेद का हिन्दी काव्यानुवाद इस पत्रिका के महत्व को बहुत बढ़ा देता है। महर्षि दयानन्द ने इस युग को वेदों की ओर उन्मुख करने का महान प्रयत्न किया था। सर्वप्रथम उन्होंने यजुर्वेद का ही अनुवाद प्रस्तुत किया था। आपने भी यजुर्वेद का काव्यानुवाद प्रस्तुत करके वेद के सामान्य पाठक को अपनी ओर आकृष्ट किया है।

प्रत्येक पाठक के लिए वैदिक संस्कृत को समझना कठिन है, वे वेद के रहस्य से वंचित न रह जायें, इस दृष्टि से आपका यह प्रयत्न वरेण्य है। यजुर्वेद काव्य की भाषा मनोरम है, उसमें गेयता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका यह प्रयत्न बहुत ही श्लाघनीय है। इससे पाठक वैदिक ज्ञान को सुगमता से ग्रहण कर सकेंगे।

वैदिक ऋचाओं का अर्थ केवल ज्ञानवृद्धि के साथ व्यक्ति में उच्च भावनाओं को उत्पन्न करने में भी सहायक है। इसके लिए आप सचमुच बधाई के पात्र हैं।

मैं आपके इस प्रयत्न की सराहना करता हूँ।

भवदीय :
(प्रशान्त वेदालंकार)

अनेक शुभकामनाओं सहित।

निवास :
७/२, रूपनगर, दिल्ली-११०००७
दूरभाष : २९१ ४५२३
२५१ ६३०७

सरस शैली में वेद सन्देश



(श्री पं॰ सोमव्रत जी)

पृथ्वी के आंगन पर जब मानव ने पहली बार उषा की किरणों को थिरकते हुए देखा होगा, तो उसको कितना हर्ष-विभोर हुआ होगा, इसकी कल्पना अनुमान से बाहर है। मानव के जीवन में यह एक नया अध्याय था और इसके हर पन्ने पर उल्लास का नया रंग उभरा होगा। इस आनन्दमय भाव-भूमि को जब वेद के आलोक ने आलोकित किया होगा, तब मानवता के इतिहास में नये युग का आरम्भ हुआ होगा। यह नव युग का आरम्भ इतिहास का प्रकाश स्तम्भ है - ऋषियों ने वेदज्ञान का प्रचार किया ताकि प्रभु वाणी से लोग लाभ उठा सकें। लोग वेदगंगा में नहाकर जीवन की मलिनता को धोते रहें, इसलिए भारत का अतीत स्वर्ण युग था। मध्यकाल में लोगों के अज्ञान-वश वेद-गंगा का प्रवाह अवरुद्ध हो गया। ऋषिराज दयानन्द की कृपा से फिर वेद-गंगा जनता के घर-घर तक पहुँची। वेद-प्राण ऋषि के अनुयायियों ने वेद सन्देश को जन-भाषा के माध्यम से जनता के सम्मुख रखा।

श्री ओमप्रकाश "आर्य-सेवक" जी का वेद-प्रचार श्रृंखला में यह प्रयास नई शैली का सूत्रपात कर रहा है। इन्होंने मन्त्र के भाव को सरल, सुलभ-भूषित रूप में प्रस्तुत किया है। इनका लय-चयन लोक-प्रचलित है, इसलिये काव्यानुवाद के गायन में आनन्द अनुभव होगा। रचनाकार ने हर रचना के अन्त में "बोलिये वेद धर्म की जय, ऋषिवर दयानन्द की जय" जोड़कर वेदोद्धारक ऋषि का श्रद्धापूर्वक मानसिक अभिनन्दन किया है और वैदिक धर्म का प्रचार हो, यह रचनाकार का लक्ष्य है। वेद और दयानन्द भले ही शब्द शास्त्र की दृष्टि से अलग-अलग दो शब्द हैं परन्तु भावना के धरातल पर दोनों एक हैं। दयानन्द ऋषि को वेद के अलावा कुछ भी पसन्द नहीं है, क्योंकि दयानन्द वेदमय हैं। इसलिए रचनाकार हर रचना के अन्त में परम वेद-भक्त "दयानन्द" को स्मरण करता है। उसका यह स्मरण वेद-विस्मरण-दोष को धोयेगा।

वेद-मन्त्र का यह गायन रूपान्तरण उन लोगों के लिए है, जो बनी बनाई मिठाई का आस्वाद लेना चाहते हैं। जो लोग मिठाई बनाकर खाना चाहते हैं, उनके लिए वेद का द्वार खुला हुआ है।

—आचार्य सोमव्रत विद्याभास्कर, एम॰ए॰

धर्मपाल आचार्य
मुख्य संचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल उ॰ प्र॰
गुरूकुल महाविद्यायल पूठ, गाजियाबाद

सेवा में

श्रीमान ओम प्रकाश जी "आर्य सेवक"

सादर नमस्ते !

आपका यजुर्वेद का काव्यानुवाद देखने का सौभाग्य मिला, आपने यह कार्य करके आर्य जनता के ऊपर महान् उपकार किया है इससे जनमानस में वेदों के यथार्थ एवं महत्व को समझने में बहुत सहायता मिलेगी और ऋषि दयानन्द का स्वप्न पूरा हो सकेगा इस प्रकार के कर्मठ एवं लग्नशील आर्य सेवक के प्रति परमात्मा से प्रार्थना है कि शतआयु होवें। और ऋषि ऋण से उऋण होने में अपना जीवन समर्पित कर सकें। हमारी शुभकामनायें आपके साथ हैं।

—आचार्य धर्मपाल

वेद काव्य

लेखक के दो शब्द

आज सारा संसार इस बात पर सहमत है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और संसार का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ है। जब तक इसका प्रचार-प्रसार रहा सृष्टि के आदिकाल से करोड़ों वर्षों तक संसार का चक्रवर्ती शासन इसके आधार पर बड़ी उत्तमता से चलता रहा।

महाभारत का युद्ध

महाभारत के युद्ध में बड़े-बड़े योद्धा और विद्वान मारे जाने से वेद प्रचार के लोप होने से अज्ञान फैला। जैसे सूर्य के लोप होने से लोग घरों में प्रकाश के अपने-अपने साधन जुटाकर काम चलाते हैं ऐसे ही वेद ज्ञान के अभाव में लोगों ने आध्यात्मिक प्रकाश के लिए, जिसके मस्तिष्क में जैसा आया उसने वैसा मार्ग अपनाया।

सौ स्याने एक मत

जितने भी परिक्षार्थियों के प्रश्नोत्तर ठीक होंगे सभी आपस में मिल जायेंगे परन्तु जिनके उत्तर गलत होंगे आपस में एक दूसरे से नहीं मिलेंगे यह अकाट्य सत्य है। आज की सभी मजहबी पुस्तकों को इस कसौटी पर परखें और स्वयं निर्णय करें कि क्या विपरीत विचार रखने वाली सभी पुस्तकें सच्ची हो सकती हैं।

संगीत आत्मा की खुराक है

आज हमारे हिन्दू भाई, गीता, रामायण, हनुमान चालीसा बड़ी लगन से गाते हैं, काव्य का रस लेते हैं। सिख भाई जिनकी श्रद्धा मशहूर है सुखमनि का पाठ और ग्रन्थ साहिब बड़ी मधुर वाणी में लय बद्ध ढंग से पढ़ते हैं। वेद का पाठ सर्वसाधारण लोग संस्कृत का ज्ञान न होने से मस्ती में गाकर उसका रसास्वादन नहीं कर पाते और इस अलौकिक आनन्द से वंचित रह जाते हैं।

ईश्वर की महती कृपा और प्रेरणा

से इस कमी को पूरा कर दिया गया है, आप सब बहन-भाई, बेटे-बेटियाँ, युवा-युवतियाँ, मातायें और वृद्ध सज्जन वेद का काव्य पाठ बड़ी सरलता से सरल हिन्दी भाषा में गा कर, मस्ती के सागर में डुबकी लगा, अमृत का पान कर सकते हैं। जीवन को उज्जवल बना इसे मनचाही खुशियों से भर सकते हैं।

खोया खजाना

आपका खोया खजाना एक प्रहरी की भाँति ढूँढ़कर आपको समर्पित किया जा रहा है, लाभ उठाना आपका काम है। स्वयं पढ़ें उपहार स्वरूप, बहुओं-बेटियों, बेटों, इष्ट मित्रों को दें। वेद प्रचार होगा, परिवार स्वर्ग बनेंगे। आपका चक्रवर्ती शासन फिर लौट आयेगा।

जब वेद पढ़ेंगे

आयेगी जग में सदा बहार, जब वेद पढ़ेंगे।
चैन से सोयेगा संसार, जब वेद पढ़ेंगे॥
आयेगा सब में सद-आचार, जब वेद पढ़ेंगे—चैन से ...

आचरण भ्रष्ट न होंगे, भाई-भाई रुष्ट न होंगे।
चहूं ओर होगी जय-जय कार, जब वेद पढ़ेंगे---चैन से ...

देवियों को मान मिलेगा, किसी का न खून बहेगा।
होगा निर्मल आहार विहार, जब वेद पढ़ेंगे---चैन से ...

राग और द्वेष मिटेगा, आपस का प्यार बढ़ेगा।
कहीं न रहेगा भ्रष्टाचार, जब वेद पढ़ेंगे---चैन से ...

कहीं पर तनाव न होगा, कहीं भेदभाव न होगा।
चाहेंगे सब सब का उद्धार, जब वेद पढ़ेंगे---चैन से ...

खेतियां लहरायेंगी, घर में खुशियां आयेंगी।
भरे होंगे अन्न धन से भण्डार, जब वेद पढ़ेंगे--चैन से ...

रहेगा न कोई बेगाना, मित्र होगा सकल ज़माना।
हृदयों का होगा विस्तार, जब वेद पढ़ेंगे--चैन से ...

कहीं पर न होंगे दंगे, रहेंगे न भूखे नंगे।
आयेगा सब में शिष्टाचार, जब वेद पढ़ेंगे--चैन से ...

बलिदानी होंगे जीवन, करेंगे न्यौछावर तम मन।
पैदा न होंगे फिर ग़द्दार, जब वेद पढ़ेंगे---चैन से ...

जागरुकता आयेगी, भीरुता चली जायेगी।
होगी फिर अपनी ही सरकार, जब वेद पढ़ेंगे--चैन से ...

चलतें हैं कुछ लोग दुनियां जिस तरफ कहती उन्हें, ऐसे भी हैं लोग दुनियां पूछ कर चलती जिन्हें।



आदरणीय डा० वीरेन्द्र कपूर कुशल होम्योपेथ चिकित्सिक

- आप सेक्रेटरी लायन्स कलब,
- उपाध्यक्ष मानव सेवा संस्था,
- अध्यक्ष नागरिक एकता परिषद
- उपाध्यक्ष होम्योपेथी मेडीकल एसोसीएशन,
- मंत्री प्रान्तीय क्रेन्द्रीय आर्य युवक परिषद (उ०प्र०), मंत्री के. आ. यु. प. दिल्ली हैं।
- सामाजिक सेवाओं के लिए राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित हैं।

जिन्होंने वेद काव्य के प्रकाशन के लिये पाँच हजार रु० का सात्विक अनुदान प्रदान किया।

है जिनका धर्म भी सेवा है जिनका कर्म भी सेवा, उन्हें भगवान भंडारों की ताली सौंप है देता

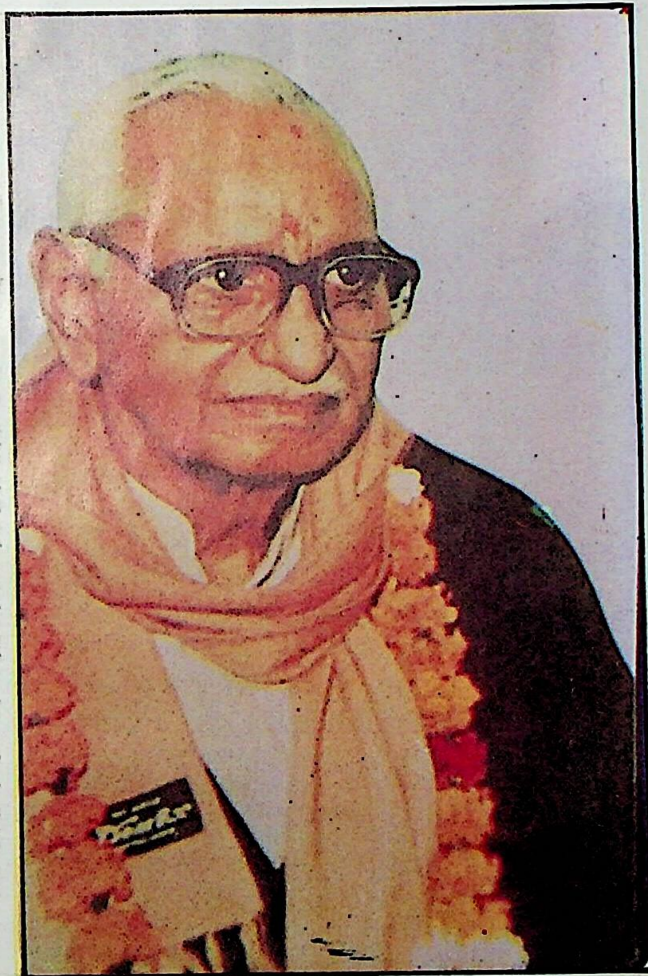


बायें से :- आर्यवीर श्री रविन्द्र कुमार जी एडवोकेट, श्री जितेन्द्र कुमार जी, श्री नरेन्द्र कुमार जी, श्री विरेन्द्र कुमार जी

- श्री रविन्द्र कुमार जी एडवोकेट हैं "सामाजिक सेवाओं के लिए राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित हैं"। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली के अंतरिग सदस्य और गाजियाबाद जनपद के महामंत्री है।
- श्री जितेन्द्र कुमार जी मकेनिकल इन्जीन्यर हैं "सामाजिक कार्यों में रीढ़ की हड्डी हैं"
- श्री नरेन्द्र कुमार जी एम. काम. एन. के. रीपेयरिंग्स चरित्रवान के प्रबन्धक हैं"।
- श्री वीरेन्द्र कुमार जी बी. ए. एल. एल. बी., जेनरेटर रीपेयर्स, युवा सम्राट हैं""

इन सब ने वेद काव्य के प्रकाशन के लिये पाँच हजार रु० का सात्विक अनुदान प्रदान किया।

प्रभू से प्यार करते जो, उसी की राह पे चलते जो, हों बाधायें हजारों पर सदा रहते हैं हंसते वह।



स्व० श्री अचरज लाल जी बजाज मोदीनगर

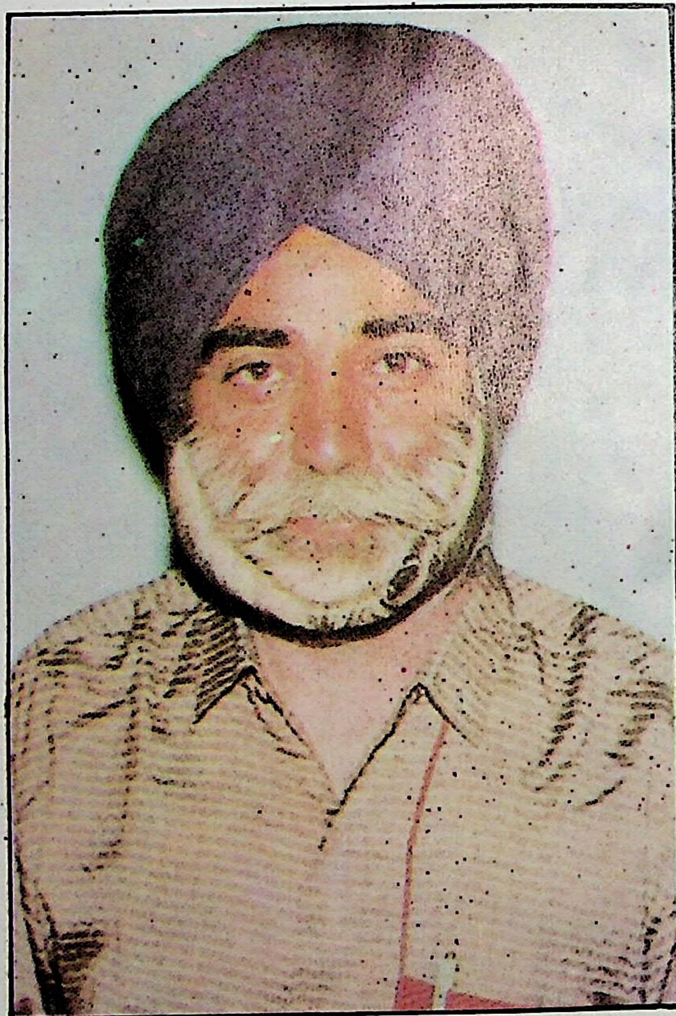
सौजन्य से● श्री जे० सी० बजाज ● श्री अशोक बजाज ● श्री अनिल बजाज

● श्रीमति निर्मल चावला ● चन्द्र खेतरपाल ने अपने पिता श्री जी की

पुण्य समृति के लिए यजुर्वेद काव्य के लिये पाँच हजार रु० का अनुदान प्रदान किया।

इन के गाजियाबाद अथवा मोदीनगर में बजाज पेट्रोल पंप है। स्व० बजाज जी ने कई आर्य समाजें स्थापित कीं। कई आर्य समाजों की बिलडिगें बनवाईं। सारी आयू आर्य समाज को समर्पित रहे। सारा परिवार आर्य विचारों का पोषक है।

मधुरता जिनकी वाणी में, हमेशा वास करती है। कृपा ईशवर की होती है वहीं लक्ष्मी बरसती है।



आदरणीय श्री सरदार परमजीत सिंह जी सेक्टर वार्डन सुरक्षा कोर गाजियाबाद।

- आप मानव सेवा संस्था के कर्मठ कार्य कर्ता, गुरु घर के अनन्य भक्त हैं।
- आप जहां भी बैठेंगे संतों, गुरुओं की वाणी की चंर्चा करेंगे।
- बातों बातों में जीवन के रहस्यों पर ऐसी मार्मिक चरचा करेंगे कि सुनने वाला घन्टों सुनते रहने पर भी और सुनने की इच्छा रखता है। वाणी में एक रस है मस्ती है। चेहरे पर मुस्कराहट हर मिलने वाले को प्रभावित करती है। वेद को श्री गुरूग्रंथ साहब की लय में काव्यबद्ध करने की योजना पर प्रसन्न होकर **आपने इस शुभ कार्य के लिये सहर्ष पाँच हजार रु० का सहयोग दिया।**

प्रभू जिन पर प्रसन्न होते हैं, वहीं पर धन बरसता है। जो सौ हाथों से देते हैं वहाँ यह और बढता है।



स्व० श्री शेर सिंह जी व धर्मपत्नि श्रीमति सावित्री देवी जी

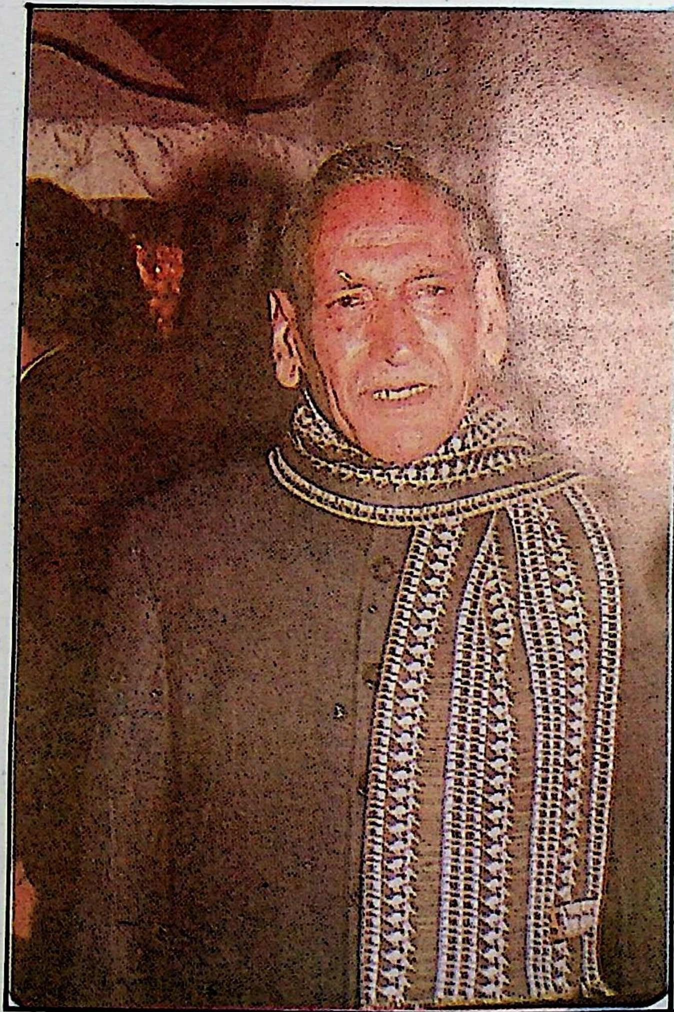
सौजन्य से

श्री हरियंत कुमार जी आंप बड़े उदार, सात्विक और खामोश कार्य कर्ता है, चौधरी सिनेमा, नीरज अस्पात (प) लिमिटेड, युरेका फोरबर्स व अन्य कई प्रतिष्ठानों के स्वामी हैं। चौधरी भवन कविनगर में फ्री डिस्पेनसरियां खुलवा रखी हैं कई संस्थाओं के अधिकारी अथवा प्रतिष्ठित सदस्य हैं।।

वेद काव्य प्रकाशन में पाँच हजार रु० का योगदान प्रदान किया।

- कमाते हैं ये सौ हाथों से,, बांटतै हैं हजारों से
  यह दिल औरों का मोह लेते हैं, अपने सद व्यवहारों से।
- हैं करते सब का हित चिन्तन, बचे हैं सब विकारों से।
  है मानव का जनम लेकिन, हैं देवता सद विचारों के।।

जिन्हें ईश्वर में श्रद्धा है, वही सम्पन्न होते हैं, जो दृढ़ विश्वास कर लेते वह सुख की नींद सोते हैं।

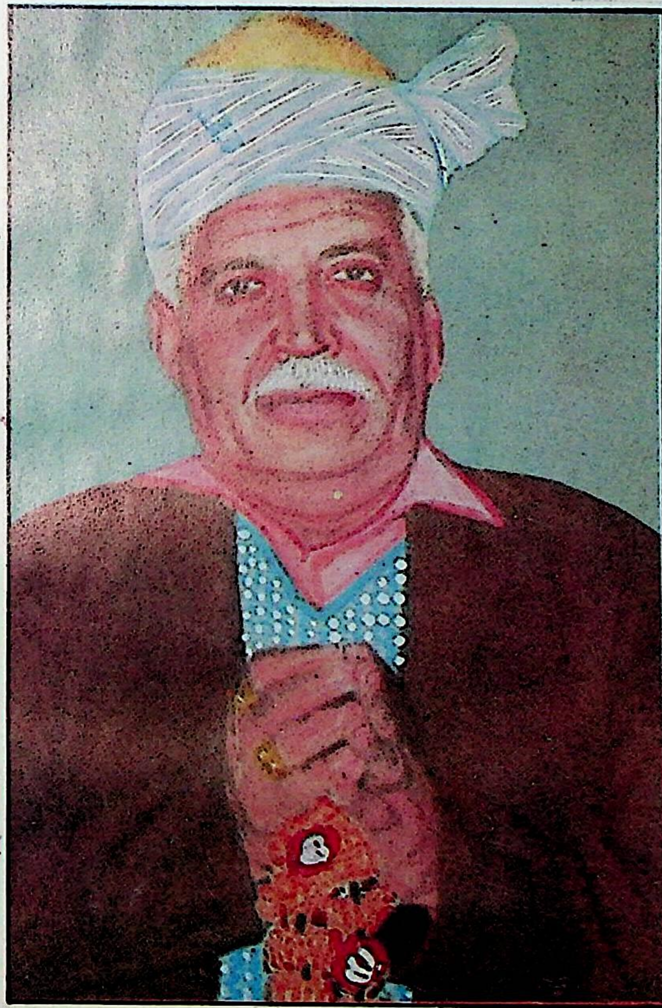


श्री रघुवर दयाल जी रुपाली वाले

• आप आर्य समाज नगर के भूतपूर्व प्रधान, दानवीर, राष्ट्र के चिन्तक समाज सेवी, वेद भक्त, बड़े उदार ह्रदय हैं। शुभ कार्यों में दिल खोल कर सहयोग करते हैं।

यजुर्वेद के इस काव्य प्रकाशन में पाँच हजार रु० का सात्विक अनुदान दिया।

जो बनकर बीज मिटते हैं,, वह बनकर फूल खिलते हैं, उन्हीं फूलों की खुशबू से यह बागीचे महकते हैं।



स्व० श्री करतार चन्द जी इलवादी, मेरठ

- पुरुषार्थ जिन्दगी थी, पुरुषार्थ बन्दगी थी, चेहरे पे उनके रहती हर पल घड़ी खुशी थी।
- सबको थे प्यार देते, सबसे थे प्यार लेते, चिन्ता की उनके मन को न फुरसत कभी मिली थी।
- लड़ते थे मुश्किलों से, थे वह धनी बलों के, रहती सदा सफलता दरवाजे पर खड़ी थी।
- उनकी खिली है बगिया, सब याद उनको करते, च्हुं दिश सुगन्धि फैली उपवन की हर कली की।

उनकी पुण्य सिमृति में उनके सुपुत्र श्री यशपाल जी पौत्र दीपक, निपुण, पौत्री कु० नीतू पुत्रवधु श्रीमति स्वदेश रानी ने वेद काव्य के प्रकाशन में पाँच हजार रु० का सात्विक सहयोग दिया।

कभी भी देव पुरुषों को, नहीं दुनियां भुलाती है, है रहती जब तलक दुनियां न मिटती उनकी ख्याति है।



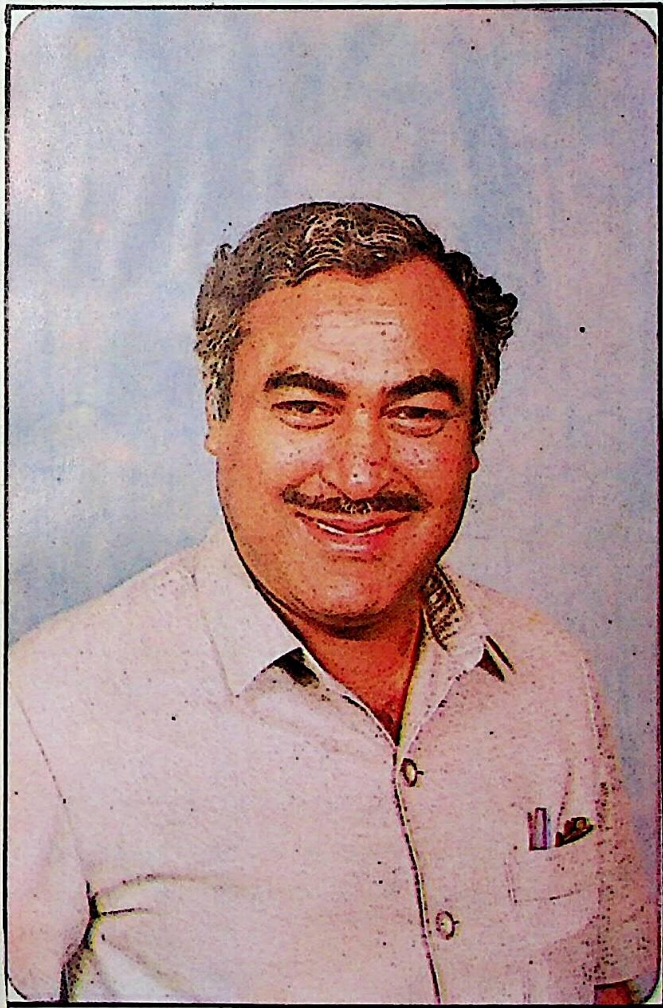
स्व० श्रीमति शीला मदान

आदरणीय श्री शिवराम जी मदान जो एक खामोश कार्यकर्ता हैं, समाज के हित का बहुत अधिक चिन्तन करते हैं अपनी शिक्षा प्रेमी स्व० पत्नि श्रीमति शीला मदान जिन्होंने अपने सुपुत्र आयुष्मान विनोद कुमार जी और चार पुत्रियों को पी० एच० डी० तक की शिक्षा दिलवाई, की पुण्य समृति में

सौजन्य से **गोल्डन टी कं० घंटाघर, गाजियाबाद**

यजुर्वेद के काव्य के प्रकाशन के पुण्य कार्य में पाँच हजार रु० का सात्विक सहयोग दिया।

मुस्कराना जिन्दगी है, मुस्कराना बन्दगी, ऐसे वीरों को सदा मिलती है मनचाही खुशी।

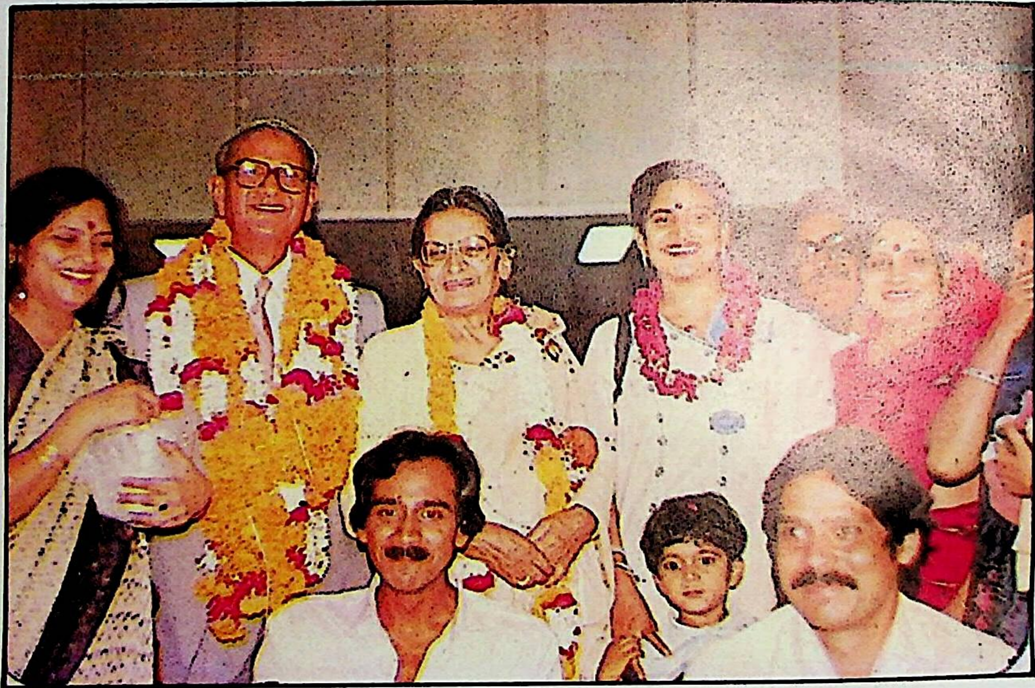


आंदरणीय श्रा ए० के० जी चावला प्रि० ड़ी० ए० वी० स्कूल राजेन्द्र नगर (गाजियाबाद)

- आप बढ़े हंसमुख, प्रभावी एडमिनिस्ट्रेटर, प्रबुद्ध शिक्षक, कुशल प्रशासक अथवा उत्साही समाज सेवक हैं।
- आप डी० ए० वी० प० स्कूल बदरपुर, बागपत, हापुड़, पिलखुवा, काशीपुर, खेखड़ा, मेरठ, लोनी, के मेनेजर हैं।
- पृन्सिपल आफ पृन्सिपल्स की उपाधी से सम्मानित हैं।
- अपटोर्न, श्री कपिल मोहन जी, सिटिजन्स कौंसल, आर्य केन्द्रीय युवक परिषद द्वारा सम्मान प्राप्त हैं।
- आप प्रान्तिय केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उ० प्र० के सरंक्षक हैं।

आपने वेद काव्य के प्रकाशन के लिये पाँच हजार रु० का सात्विक सहयोग प्रदान किया है।

हमेशा मुस्कराने की कला जिन को भी आती है, हो कठिनाई बड़ी कितनी झुका उनको न पाती है।



आदरणीय श्री पुरुषोत्तम चन्द्रा जी सपरिवार

पीछे खड़े सर्वप्रथम श्रीमति शशी उनके बायें श्री चन्द्रा जी, उनके बायें उन की धर्मपत्नि श्रीमति शकुन्तला देवी, उनके बायें श्रीमति नूतन चन्द्रा पुत्रवधू उनके बायें श्री हरी ओम् जी और शोभा रानी पुत्रवधू के जीजा जी व बहन जी हैं।

- आप १९३९, ४३ में डिप्टी कलेक्टर रहे
- रोटरी कलब के चेयर मैन रहे
- १९५८ में गाजियाबाद सिटी बोर्ड के चेयर मैन रहे
- १९६६-७२ जनसंघ के चेयर मैन रहे
- पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ यूनियन के चेयर मैन रहे इन्हें सामाजिक कार्यो के प्राण कह सकते हैं।

आपने यजुर्वेद काव्य के प्रकाशन में छः हजार रु० का सात्विक सहयोग दिया।



चौ० केवल राम जी

चौ० श्री केवल राम जी

- आप अपनी बिरादरीके वयोवृद्ध मार्ग दर्शक हैं।
- स्वभाव बड़ा सात्विक है, गायत्री परिवार से जुड़े हैं।

सौजन्य से

श्री ॐ प्रकाश जी ईश्वर प्लाईवुड एजेन्सी,
रमते राम रोड़, गाजियाबाद,

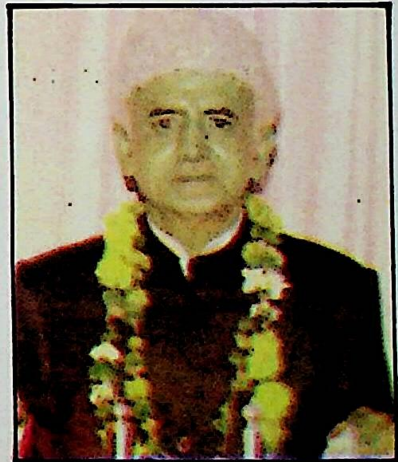
वेद काव्य प्रकाशन में दो हजार रु० प्रदान किये।

आदरणीय श्री दयाल चन्द जी गोगिया

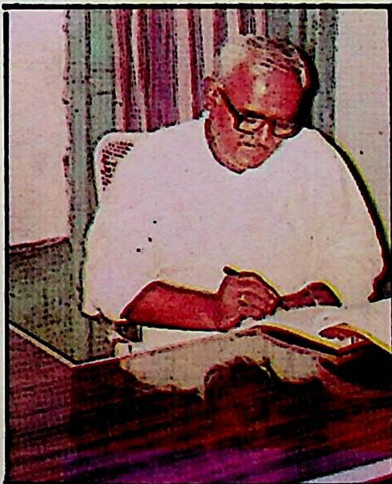
- आप गायत्री परिवार से जुड़े हैं, बड़े वेद प्रेमी हैं।
- सामाजिक कार्यो में बड़ी रूची रखतें हैं।

सौजन्य से

गोगिया ग्राईन्डर्स (महेश मसाले) रमते राम रोड़, गा० बाद,
वेद काव्य प्रकाशन में दो हजार रु० का सहयोग दिया।



चौ० दयाल चन्द जी गोगिया



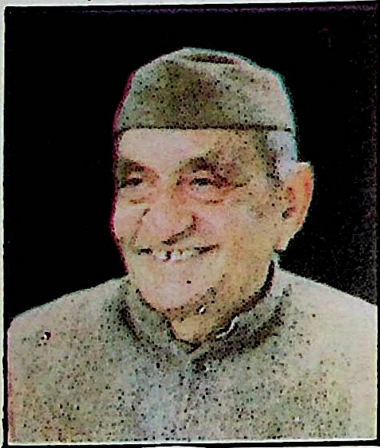
श्री मनोहर लाल जी गोगिया

श्री मनोहर लाल जी गोगिया

- आप सुलझे हुये सामाजिक कार्यकर्ता है, वेद के बड़े भक्त हैं
- सारा परिवार बड़ा सात्विक है, सतसंग के प्रेमी हैं।

चौ० ईश्वर दास एण्ड कम्पनी आयल मिल्स के मालिक हैं।

**इन्होंने वेद काव्य के प्रकाशन के लिये
दो हजार रु० प्रदान किये।**



श्री चौधरी भगवान सिहं जी

आदरणीय श्री चौ० भगवान सिहं जी

- आप एक सोशल वर्कर हैं।
- आर्य समाज की मान्यताओं के समर्थक हैं।
- बहुत बड़े लैण्ड लार्ड हैं। स्कूल कालिज से ही राजनीति में प्रवेश कर लिया था।
- स्वच्छ और पवित्र राजनीति के पक्षधर हैं।

आपने वेद काव्य के प्रकाशन के लिये दो हजार रु० का सात्विक सहयोग दिया।



श्री राय रतन लाल जी

आदरणीय श्री राय रतन लाल जी

- आप आर्य समाज की विचार धारा से जुड़े हैं।
- दान वृति इस परिवार की शोभा है।
- बहुत बड़े लैण्ड लार्ड हैं। गायत्री परिवार से जुड़े हैं।
- इन का स्वाध्याय बहुत विस्तृत है।
- चरित्र की महानता के पक्षधर हैं।

आपने वेद काव्य के प्रकाशन हेतू दो हजार रु० का सात्विक सहयोग दिया।

यजुर्वेद १-१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब विद्वत जन धर्म का, करें प्राप्त सब ज्ञान ।
पदार्थ विद्या की उन्हें, हो पूरी पहचान ।।
इनके सम्प्रयोग पर, करें अनुसंधान ।
हर प्राणी संसार का, पाये सुख आराम ।।
सबका यह कर्त्तव्य है, सभी हों बुद्धिमान ।
उत्तम शिक्षा से बनें, सभी लोग विद्वान ।।
रोग और व्याधि न रहे, हो उत्तम संतान ।
दुर्जन छोड़ें दुष्टता, हो सबका कल्याण ।।
जिस ने यह सृष्टि रची, दिया वेद का ज्ञान ।
रक्षक वह संसार का, करें उसे प्रणाम ।।
बोलिये वेद धर्म की जय, ऋषिवर दयानन्द की जय

यजुर्वेद १-२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

उत्तम विद्या और क्रिया, है यज्ञ अनुष्ठान ।
मिले प्रकाश पवित्रता. रहे सुचारू प्राण ।।
पृथ्वी का शासन मिले, सुख का हर सामान ।
छुट जाये सब कुटलता, रहे नहीं अभिमान ।।
कोमलता और सरसता की मिल जाये खान ।
सुखी रहे संसार सब, खुलता सुख का धाम ।।
पर उपकार की भावना अपनाये इन्सान ।
ऐसी विद्या का सदा, सारे करें बखान ।।
नित्य प्रति यज्ञ सब करें, प्रभु ने किया विधान ।
आपस की प्रीति बढ़े, बनें सभी बलवान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय, ऋषिवर दयानन्द की जय

यजुर्वेद १-३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जो याजक यज्ञ करत हैं, बनते वही महान ।
इच्छायें पूरी करे, उन सबकी भगवान ।।
मिले बहुत प्रकार का, उन्हें श्रेष्ठ विज्ञान ।
करते वह उत्तम कर्म, रखते मधुर जबान ।।
जो औरों का हित करे, देकर अपने प्राण ।
पर उपकारी पुरुष की, है यह ही पहचान ।।
आलस्य वह करते नहीं, बढ़ते छाती तान ।
ऐसे लोगों को मिलें मुँह माँगे वरदान ।।
याजक को कहें देव सब, ईश्वर की संतान ।
कोई परदा न रहे दोनों के दरमियान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ......

यजुर्वेद १-४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

गुप्त वाणी तेरी प्रभु, देती पूर्ण ज्ञान ।
कर्म कांड की सिद्धि के, कार्य चढ़ें परवान ।।
सारी विद्यायें तेरी, सबके लिए समान ।
उन्हीं के द्वारा होत है, कुल जग का उत्थान ।।
सेवन करना यज्ञ का, समझना इसको प्राण ।
इन्हीं के द्वारा आती है चेहरों पर मुस्कान ।।
पाते हैं आनन्द सब, दुनियां के इंसान ।
आस्वादन रस का मिले, सबको आठों याम ।।
दृढ़ता से धारण करें. है यह उत्तम ज्ञान ।
जीवन का आधार है, करें हमेशा दान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय......

यजुर्वेद १-५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सत्यरुप जगदीश हो, करते सद उपदेश ।
झूठ की दुनियां में कभी, करें नहीं प्रवेश ।।
सर्वहित के सिद्धांत का, है तेरा आदेश ।
श्रद्धा से और प्रेम से, इस पर चलें हमेश ।।
सत्य बोलने से सदा, मिटते सकल क्लेश ।
हमेशा दृढ़ इस पर रहें, आयु भर सर्वेश ।।
शिष्टाचार से दुख कभी आते न दर-पेश ।
मस्ती में तेरी लगे, दुनियां अपना देश ।।
सत्याचरण से प्राप्त हो, शक्ति हमें विशेष ।
सत्य व्रतों पर चलने का हो पूरा उद्देश्य ।।

बोलिये वेद धर्म की जय

यजुर्वेद १-६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रेरक जग का है तूही, गुणों का है भंडार ।
प्रेरणा से तेरी बनें, सब के हृदय उदार ।।
आज्ञा है तेरी यही, करे यज्ञ संसार ।
शिल्प विद्या का भी सभी, मिलकर करें प्रसार ।।
सत्य व्रतों पर अडिग रहें, है यह ही उपचार ।
ऐसी करनी कर चलें, सुखी बसे संसार ।।
शुभ गुण और विद्या रतन, हैं यह जीवन सार ।
धारण हर व्यक्ति करे, मिलेंगे सब अधिकार ।।
पढ़ें पढ़ावें सब सदा, खुले हों सब पर द्वार ।
विद्या की नौका बना, जा पहुंचें उस पार ।।

बोलिये वेद धर्म की जय

यजुर्वेद १-७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर का उपदेश है, सभी देव बन जायें।
छोड़ें दुष्ट स्वभाव को, और सबसे छुड़वायें ॥
अधर्म कहीं पर न रहे, करें कुशल व्यवहार।
शिक्षा सबको दें यही, बढ़े परस्पर प्यार ॥

सब का सुख साधन करें, हो सबका सत्कार।
ज्ञान और विद्या का करें, चहूँ ओर प्रसार ॥
प्राणी मात्र को मान लें, सब हैं इक परिवार।
दीनों दुखियों का सदा, करें सभी उपकार ॥

स्वार्थी लोगों के सदा, बदलें बुरे विचार।
कहीं दिखाई न पड़े, जग में भ्रष्टाचार ॥
अदान भावना क्रूरता, को निर्मूल बनायें।
छोड़ें दुष्ट स्वभाव को, और सबसे छुड़वायें ॥ बोलिये वेद धर्म...

यजुर्वेद १-८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

करते हैं तुझ को नमन, कुल जग के करतार।
विद्या सुख और मोक्ष सब, मिलते तेरे द्वार ॥
तू ही सुमरने योग्य है, पाप विमोचन हार।
न्याय की तेरी लटकती, है सब पर तलवार ॥

काम क्रोध मोह लोभ का, कर दें बहिष्कार।
पी कर तेरा प्रेम रस, हो जायें भव पार ॥
करता है तू विश्व का, दूर सकल अंधकार।
अद्भुत है तेरी कला, पा नहीं पायें पार ॥

यान आदियों से मिले, सब को खुशी अपार।
अस्त्रों शस्त्रों से कर सकें, शत्रुओं पर प्रहार ॥
दुष्टों को दण्ड दें सदा करें उनका संघार।
चैन से सुख से सो सकें, बन्धु बांधव परिवार ॥

तू ही सुमरने योग्य है, बड़ी तेरी सरकार।
विद्या सुख और मोक्ष सब मिलते तेरे द्वार ॥ बोलिये वेद धर्म...

यजुर्वेद १-९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

छोड़ कुटलता शिष्य बन, गुरु शरण में आयें।
ज्ञान क्रिया को जानकर, कलाकार बन जायें ।।
अनुष्ठान करते हुए वह शिल्पी कहलायें ।
सिद्धि को हों प्राप्त वह, छूट दुःखों से जायें ।।
भौतिक अग्नि से सदा लाखों लाभ उठायें ।
व्यापक ईश्वर को सदा निस्दिन शीष झुकायें ।।
ईश्वर के उपदेश को, समझ के उसे निभायें ।
उचित है यह सबके लिए, त्रुटियां न रह जायें ।।
यज्ञ में उत्तम वस्तुयें, सदा प्रयोग में लायें ।
सुगन्धी से संसार को सदैव युक्त बनायें ।।
दुर्गन्ध आदि दोषों से, वातावरण बचायें ।
प्रभु की आज्ञा मानकर, जीवन सफल बनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १-१० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

पदार्थ विद्या जान कर, इनका लाभ उठायें ।
ज्ञान प्राप्ति के लिये, प्रभु शरण में जायें ।।
सूर्य चन्द्र और अग्नि जल, कैसे दिये बनाये ।
गुरुओं से चर्चा सुनें, बैठ समझ में जाये ।।
वीर्य प्राण से पुष्ट हो, सेवा पथ अपनायें ।
गुरुओं से जो-जो सुनें, औरों को सुनवायें ।
फल की चिन्ता न करें, सदैव कर्म कमायें ।
सबकी उन्नति के लिये, आगे कदम वढ़ायें ।।
जहाँ भी हों जिस हाल में, सबका भला कमायें ।
प्रभु आज्ञा स्वीकार कर, उस पर अमल कमायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १-११ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

प्रभु का यह उपदेश है, सब को सुख पहुँचायें ।
विद्या का अनुष्ठान कर, इसी को सदा बढ़ायें ।।
हर ऋतु और हर काल में, घर को खूब सजायें ।
जिससे सब को सुख मिले, उस पथ को अपनायें ।।
सृष्टि की हर वस्तु के, गुण और दोष जतायें ।
अपनी खोज से विश्व को, अवगत सदा करायें ।।
सब का सुख दाता प्रभू, मित्र है यह दर्शायें ।
सर्व शक्तिमान जान, उसी को शीष झुकायें ।।
विद्या की वृद्धि करें, धर्म में रुचि बढ़ायें ।
यज्ञ क्रिया अनुष्ठान में, सब का योग करायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १-१२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सभी वस्तुयें सूर्य से, दोष मुक्त हो जायें ।
हे विद्वानों आप भी, यह विद्या अपनायें ।।
धरती और आकाश के जल पवित्र हो जायें ।
सोम औषधि को वही, दिव्य गुण युक्त बनायें ।।
यज्ञ विधि से इंद्रीय और मन को शुद्ध बनायें ।
स्वर्ण आदि धन धान्य को, जग में खूब बढ़ायें ।।
याजक को जगदीश भी, इच्छा लाभ करायें ।
वही सारे संसार को, शुद्ध पवित्र बनायें ।।
शिष्ट गुणों को धार कर, सबको शिष्ट बनायें ।
अपनी क्रियाओं से सदा, सृष्टि स्वर्ग बनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १-१३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

मेघों द्वारा जिस तरह, जल निर्मल हो जायें ।
विद्वत जन उपदेशों से, सब को पवित्र बनायें ।।

सब रस सूर्य की किरणों से अंतरिक्ष में जायें ।
वर्षा द्वारा वह सभी, फिर पृथिवी पर आयें ।।

वनस्पतियों के रस सदा, सब को सुख पहुंचायें ।
रोग और व्याधि दूर कर, वह निरोग बनायें ।।

जन-जन का कर्त्तव्य है, निस्दिन यज्ञ रचायें ।
पर उपकार की भावना, सब में सदा जगायें ।।

वायु जल अग्नि में जो, गुण हैं वह अपनायें ।
कला कौशल और यंत्रों में उनका लाभ उठायें ।।

जियें सदा सुख से सभी, ऐसे कर्म कमायें ।
ईश्वर का उपदेश यह, दिल से नहीं भुलायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १-१४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर का उपदेश है, घर को पवित्र बनायें ।
धर्म हीनता दुष्टता, वहाँ न रहने पायें ।।

सूर्य की भाँति हम सदा, सबके दोष मिटायें ।
यज्ञों के द्वारा सदा, सब को सुख पहुंचायें ।।

वायु वृष्टि जल सदा, सब का स्वास्थ बढ़ायें ।
नाना विध उपकार में, सबके सब लग जायें ।।

प्रीति से मिल कर रहें, जगदीश्वर गुण गायें ।
त्वचा की भाँति विश्व को, संरक्षण दिलवायें ।।

परम पिता से हम सभी, सारी विद्या पायें ।
हर घर नगर और द्वार पर, उस की अलख जगायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद १-१५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वेद में वर्णित विद्या को, समझ के अमल कमायें।
उत्तमता से फिर सभी, सब का हित कर पायें॥
सूक्षम तत्वों को समझ, प्रयोग में उन को लायें।
जन जन के हित के लिए, यज्ञ कला अपनायें॥
ज्ञान और विद्या दान से, सब को मार्ग दिखायें।
तीनों यज्ञों का कभी, करना नहीं भुलायें॥
ऐसे याजकों को सभी, सदा हविशकृत पायें।
दिव्य सुखों से युक्त कर, सब का भला कमायें॥
याजक को सारे सदा, उच्च स्थान दिलायें।
जन जन के मन में सदा, उस का मान बढ़ायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय......

यजुर्वेद १-१६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

मधुर वाणी से जो सदा, यज्ञ को पूर्ण करे।
दुख सागर को वह सदा, सहज से पार करे॥
चोरों अत्याचारियों का विनाश करे।
युद्ध कला से शत्रु पर करता प्राप्त विजय॥
धर्म हीन हर दुष्ट का कभी जो दान न दे।
ऐसे डाकू चोर को, सदैव नष्ट करे॥
किरणों के व्यवहार से, हर पल शिक्षा ले।
वृष्टि और प्रकाश से, सब को दिव्य करे॥
विद्या के विस्तार से, जग का भला करे।
दुनियां के हर जीव को, सुख आनन्द मिले॥
बोलिये वेद धर्म की जय ......

यजुर्वेद १-१७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

उत्तम उत्तम सुख मिलें, दीजिये वह विज्ञान ।
युक्त गुणों से हों सभी, सृष्टि के इन्सान ।।

हर व्यक्ति संसार का, करे आप का गान ।
विनाश दुष्टों का करें, बल दीजे भगवान ।।

अग्नि से सब फल पकें, करें जो समर्थवान ।
इसी अग्नि से विश्व में पकें सभी पकवान ।।

बने बिजली इसी अग्नि से, हुआ सूर्य निर्माण ।
इसी शक्ति से ग्रहों को, सूर्य रहा है थाम ।।

उठा रहे हैं लाभ सब, इन सब का विद्वान ।
विजय प्राप्ति के लिये, विमान करें निर्माण ।।

अग्नि विद्युत सूर्य से, सिद्ध होवें सब काम ।
उपास्य सब के हो तुम्ही, हे सृष्टि के प्राण ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १-१८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर का उपदेश है पायें मान विद्वान ।
मूर्खता का विश्व में, रहे न नाम निशान ।।

वेद की विद्या का सदा. होता रहे बखान ।
भूमि हो शत्रु रहित, राज्य हो स्वर्ग समान ।।

अग्नि वायु सूर्य की शक्ति लें पहचान ।
यज्ञों की सिद्धि करें, सारे आठों याम ।।

सुखी बसे संसार सब, पायें सभी वरदान ।
कर्म करें संसार में, रख कर इस का ध्यान ।।

सभी दिशायें हों सदा, इन से देदीप्यमान ।
सदा इन से होता रहे, सृष्टि का कल्याण ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १-१९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जो सुख देता है तुम्हें, जिसका नहीं विनाश ।
दुष्ट स्वभाव मनुष्यों को, रखता सदा हताश ।।
जो अदानियों को रखे, सदा उदास निराश ।
संरक्षण दे विश्व को, चलिये उस के पास ।।
यज्ञ विद्या को जानकर, ज्ञान का करें प्रकाश ।
प्रभु की आज्ञा में चलें, सूर्य पृथिवी आकाश ।।
सतसंग रूपी यज्ञ से, मिटायें अपनी प्यास ।
ब्रह्म विद्या से बुद्धि का, सारे करें विकास ।।
करें यज्ञ अनुष्ठान सब, धारण करें मिठास ।
सूर्य प्रकाश को त्वचा जान, उसी में करें निवास ।।
सृष्टि कर्ता का करें, मन में सदा आभास ।
संग न दोनों का छुटे, करें योग अभ्यास ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद १-२० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

शुद्ध हुये जो यज्ञों से, पदार्थ वह स्वास्थ्य बढ़ायें ।
अन्न, जल, पवन, बल प्राक्रम, आयु दीर्घ बनायें ।।
यज्ञों का अनुष्ठान कर, ईश्वर के गुण गायें ।
वेद विद्या ईश्वर प्रदत्त, सब को सदा सुनायें ।।
प्राणी मात्र पर हम सदा, पर उपकार कमायें ।
सत्य कर्म की हर जगह, निस्दिन झड़ी लगायें ।
लोक लोकांतरों पृथिवियों से सम्पर्क बढ़ायें ।
दिव्य गुणों और ज्ञान से, सबको युक्त बनायें ।।
पुष्ट करें संसार को, खुद भी लाभ उठायें ।
अपना मुख उज्जवल बना, पास प्रभु के जायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद १-२१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

उत्पन्न इस संसार का, प्राप्त करें सब ज्ञान ।
भूमि सूर्य के तेज से, होती है प्रकाशमान ।
जलों से औषधियों रसों, का होता निर्माण ।
इनके सेवन से बनें, सभी लोग बलवान ।।
सूर्य निज प्रकाश से, रहा है सब को थाम ।
वायु सब को पुष्ट कर, करे सुख का सामान ।।
पदार्थ विद्या ज्ञान से, करें सबका कल्याण ।
वेदोक्त रीति नीति से, सब का करें मिलान ।।
होम करें सब के लिए, सब को अपना मान ।
सब के रोग और सोग का, करते रहें निदान ।।
शिल्प विद्या को जान कर, बनायें बड़े विमान ।
विद्या को उन्नत करें, ज.नें सकल विधान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १-२२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज्य लक्ष्मी यज्ञ से, मिले है यही विधान ।
ईश्वर का आदेश है, करें अग्न आधान ।।
होम सुगन्धि से बनें पदार्थ सुख की खान ।
बने इसी से सोम रस, प्राणी ऐसा जान ।।
जीव सभी नीरोग हों, करें यज्ञ अनुष्ठान ।
फले फूले यही भावना, सुखी हो सकल जहान ।।
हर घड़ी हर पल कर रहे, विश्व यज्ञ भगवान ।
वैसे ही हम भी करें, इस को प्रातः शाम ।।
यज्ञ के द्वारा ही करें, प्राप्त सभी वरदान ।
इसी के द्वारा पूर्ण हों, हर इक के अरमान ।।
बोलिए वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद १-२३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर आशीर्वाद से बढ़े सत्याचार।
यज्ञ और विद्या ग्रहण से, सुखी रहे संसार।।
इससे विचिलित न कभी, हो कोई परिवार।
हृदय न चलायमान हो, होगी जय जय कार।।
मिलती है सन्तान तब, स्वस्थ और आज्ञाकार।
उन्नति होती है सदा, सब की सब प्रकार।।
अग्नि में गुण हैं सभी, करती है चमत्कार।
सुगन्धि युक्त वायु करे, लाये सदा बहार।।
वायु और वृष्टि सदा, हैं सब के आधार।
याजक सब करते रहें, हवियों का विस्तार।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद १-२४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

पदार्थ सारे यज्ञ में पड़ कर ऊपर जायें।
सूर्य की किरणें इन्हें, अन्तरिक्ष पहुँचायें।।
प्रसारित करती उन्हें चारों तरफ हवायें।
सब दुखों का नाश कर, सब को सुख पहुँचायें।।
वीर्य, प्राण, उदान सब, इन ही से बल पायें।
सूर्य चन्द्र के तेज से, तेजवान बन जायें।।
मेघ मण्डल को भेद कर, किरणें जल बरसायें।
सृष्टि के प्राणी सभी, उन से सब सुख पायें।।
प्राणियों का कर्त्तव्य है, हजारों लाखों सुख पायें।
शत्रु जनों का विश्व से जड़ और मूल मिटायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय .....

यजुर्वेद १-२५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रकाश करते हो सदा, कुल जग के करतार।
राज्य और ऐश्वर्य के, दाता हो दातार ॥

यज्ञों का करते रहें, मिलकर सभी प्रचार।
दुनियां में कहीं रह नहीं, पाये भ्रष्टाचार ॥

यज्ञों से बादल बनें, बरसे मूसलाधार।
सृष्टि को जीवन मिले, मिले शुद्ध आहार ॥

जो बाधा उत्पन्न करें, उनका करें सुधार।
वरना उनकी है जगह, केवल कारागार ॥

छोड़ें अपनी दुष्टता, कुशल करें व्यवहार।
विद्वानों को चलना है, ले कर यह आधार ॥

द्वेष ईर्ष्या छोड़ कर, करें सभी से प्यार।
ऐसी करनी कर चलें, याद करे संसार ॥

बोलिये वेद धर्म ....

यजुर्वेद १-२६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सूर्य किरणों से जिस तरह बांधा है संसार।
दुष्टों को बाँधें सदा, करें न कोई विकार ॥

विद्वानों की संगति, से होता उद्धार।
सब विद्वत जन विश्व का, मिल कर करें सुधार ॥

शब्दों की बूंदें करें, हर इक का उपकार।
करें भलाई विश्व की, समझ इसे परिवार ॥

विद्या से हर पल करें, जीवन का शृंगार।
कामनायें पूरी करे, सबकी सब करतार ॥

कला व कौशल से सदा, उन्नति करें अपार।
प्रीति रीति की सब करें, मिल कर जय जय कार ॥

जिसने यह जीवन दिया, उसका करें आभार।
आज्ञा का पालन करें, नमन करें सौ बार ॥

बोलिए वेद धर्म ...

यजुर्वेद १-२७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

यज्ञ से उत्तम पदार्थ पा, पृथिवि शोभा पाये ।
करती है मंगल सदा, सबको सुख पहुंचाये ।।
उत्पति सुख की करे, स्थिर भी यही कर पाये ।
अन्न उत्पन्न करती सभी, रसों को मधुर बनाये ।।
है प्रशंसा योग्य यह, शास्त्र यही बतलाये ।
यज्ञ विद्या से यह मनुष्य, प्रफुल्लित इसे बनाये ।।
इसकी हर इक औषधि, सुगन्ध सदा फैलाये ।
प्राणि मात्र को आदि से, यह निरोग बनाये ।।
जगति के सुख के लिए, जो यह यज्ञ रचाये ।
पाता है आनन्द वह, भवसागर तर जाये ।।

बोलिये वेद धर्म . . .

यजुर्वेद १–२८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

चन्द्रलोक और पृथिवी का, जिसने किया विधान ।
अन्न आदि से युक्त कर, रचा है विश्व महान ।।
तारा लोक और सूर्य भी, किये हैं प्रकाशमान ।
उनमें फिर उत्पन्न किये, नाना विधि इन्सान ।।
बुद्धि जीवी विश्व के करें यज्ञ अनुष्ठान ।
सृष्टि रचता के सदा करते हैं गुणगान ।।
जब तक भी सब शत्रुओं का होता नहीं निदान ।
जीना प्राणियों का कभी हो न सके आसान ।।
करें प्रयास विद्वान जन, बनें सभी बलवान ।
बिना इसके सुख का कभी, हो न सके सोपान ।।
उत्तम प्रयत्नों से सदा, दें सबको आराम ।
विनय न्याय और विद्या के पायें सभी वरदान ।।
जितेन्द्रीय होकर सब सदा, बनें समर्थवान ।
सम्पादन पदार्थों का करें, सारे आठों याम ।।

बोलिये वेद धर्म . . .

यजुर्वेद १-२९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हर प्राणी को चाहिये, करे विद्या प्रसार ।
शुभ गुणों के प्रकाश से, हो सब का उपकार ।।
दुष्टजनों की निवृत्ति, के लिये रहें तैयार ।
कोई प्राणी न कर सके, कभी दुष्ट आचार ।।
युद्ध सामग्री से सदा, भरे रहें भण्डार ।
सत्पुरुषों से युक्त हो, सेना खड़ी तैयार ।।
लम्पटी, जुआरी, दुष्टों का, करें सदा संघार ।
दुष्ट भावना का कभी, कर न सकें विस्तार ।।
राक्षसी भाव सब दूर हों, सुखी रहे संसार ।
ऐसे साधन सब करें, रहे न अत्याचार ।।
दोषों से हों मुक्त सब, निर्मल हो आहार ।
हर इक प्राणी का बने, सदा कुशल व्यवहार ।।
बोलिये वेद धर्म . . . .

यजुर्वेद १-३० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जगदीश्वर करता सभी, रसों का है निर्माण ।
भौतिक अग्नि को सदा, जिव्हा उसकी जान ।।
कण-कण में है बस रहा, सर्वत्र है विद्यमान ।
तीनों धामों में उसे, देखें सब विद्वान ।।
उससे ही मिलता सदा, मन्त्र मन्त्र में ज्ञान ।
हर वस्तू में आ रही, नजर उसी की शान ।।
ज्ञान के यज्ञों से करें, हर इक का कल्याण ।
जान सकें अपना सभी, जन्म नाम और स्थान ।।
वेद ज्ञान से हो सके ईश्वर की पहचान ।।
सब की सेवा के लिये, करें यज्ञ अनुष्ठान ।।
प्रेम पूर्वक सुख युक्त हो, पायें सब विज्ञान ।
सब उसका सुमरन करें, प्रतिदिन प्रातः शाम ।।
बोलिए वेद धर्म . . . .

यजुर्वेद १-३१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

देता है शिक्षा प्रभू, पदार्थ विद्या लें जान।
करता है शुद्धिकरण, यज्ञों का अनुष्ठान।।
पदार्थ सूर्य की किरणों से, होता है तेजवान।
देता जो प्रसन्नता, सबको प्रातः शाम।।
उनके सेवन से सदा, प्राणी बनें बलवान।
इनही से मिलता सदा, सुख का हर सामान।।
किरणों से पवित्री करण, करता है भगवान।
जानें यह विद्या सभी, दुनियां के इन्सान।।
अपना औरों का भला, करने हैं दो काम।
सृष्टिकर्ता को सदा, करना है प्रणाम।।
बोलिये वेद धर्म....

यजुर्वेद २-१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

घी सामग्री को हवन, सूक्ष्म रूप दिलाये।
इस की सुगन्धि को सदा लाखों गुणा बढ़ाये।।
हवा का आकर्षण इसे, अन्तरिक्ष स्थित कराये।
अन्तरिक्ष के जल को वह, निरन्तर शुद्ध बनाये।।
वह जल वर्षा रूप बन, औषधि पुष्ट बनाये।
जन जन के सुख के लिए, काम वह औषधि आये।।
हर प्राणी का फर्ज है, निस्दिन यज्ञ रचाये।
प्रभू आज्ञा अनुसार ही, सब को सुख पहुँचाये।
परम धर्म इस को समझ यज्ञ रूप बन जाये।
श्रद्धा प्रीति से सदा, हर कोई इसे निभाये
बोलिये वेद धर्म...

यजुर्वेद २-२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सुखों की सिद्धि सदा, अग्नि ही करवाये ।
इसी में किये यज्ञ से, प्राणी लाभ उठाये ।।
याजक इस के द्वारा ही, सत्य वक्ता बन पाये ।
इसी के करने से सदा, प्यार प्रभू का पाये ।।
ईश्वर न्याय व्यवस्था से, सारा विश्व चलाये ।
हर इक का कर्त्तव्य है, काम औरों के आये ।।
यज्ञों का पालन करे, उत्तम वेदी बनाये ।
सभी साधनों से सदा, सब को सुख पहुँचाये ।।
मन्त्र उच्चारण में सदा, मधुर्ता को दर्शाये ।
हर इक से व्यवहार में, शिष्टाचार अपनाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद २-३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सूर्य रूप अग्नि करे, जीवों का कल्याण ।
दुखों से मुक्ति मिले, सुखों का सामान ।।
वर्षा हो वायू चले, सम्भव अग्निाधान ।
दाह प्रकाश गुण देत हैं, सबको सब वरदान ।।
करें प्रयुक्त शिल्प विद्या में इसको विद्यावान ।
गमन आगमन ब्रह्मांड में हो पाये आसान ।।
विद्युत रूप इस का करे, प्राणों को बलवान ।
व्यवस्थित इससे रहें, प्राण, अपान, उदान ।
सभी लोग बरतें यहां, सबसे मित्र समान ।
मिले सिद्धि हर काम को, सुखी हो सकल जहान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद २-४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हे सर्वज्ञ विज्ञान का तू ने किया प्रसार।
सुखकारी इस को करें, सुखी हो कुल संसार।।
अग्निहोत्र का ज्ञान दे, किया बड़ा उपकार।
अनुगृहित हो कर तेरे, करें तेरा प्रचार।।
उत्तम यज्ञों से करें, पदार्थों का विस्तार।
सभी कार्यों की सिद्धि का, मानें तुझे आधार।।
विद्वानों को उचित है, जानें इस का सार।
लाभान्वित इस से करें, सबको विविध प्रकार।।
रचा है सारे जगत को, तूने ही करतार।
करें सदा तुझ को नमन, हम सब बारम्बार।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद २-५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

कार्य सिद्धि से जिस तरह हर प्राणी सुख पाये।
वसन्त की भाँति यज्ञ सदा, हृदयों को हर्षाये।।
हेतू इस का सूर्य है, जो सबको प्रगटाये।
विघ्न और बाधा कोई, पास न आने पाये।।
वसू रूद्र हर मास भी, सिद्धि प्राप्त कराये।
सब का यह कर्त्तव्य है, लाभ उठाया जाए।।
यज्ञों द्वारा सम्पदा अन्तरिक्ष में जाये।
इन के ही द्वारा पुनः पृथिवी पर आ जाये।।
औषधि रूप अपनाये के, सब के कष्ट मिटाये।
हर इक का कर्तव्य है यज्ञ मार्ग अपनाये।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद २-६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

यज्ञ हवि से वायु जल सुखदायक बन जायें ।
सूक्ष्म रूप अपनाये के, सबके रोग मिटायें ।।
जो जानें इस सार को, वह ज्ञानी कहलायें ।
जीवन सब के हों सुखी, वह रीति अपनायें ।।
आयु में स्थिरता बढ़े, जीवन में मुस्कायें ।
व्यापक है कण-कण में जो, उसको शीष झुकायें ।।
यज्ञ द्वारा हर वस्तु का, पूरा लाभ उठायें ।
इनकी रक्षा के लिए, प्रभु से आस लगायें ।।
वस्तु यज्ञ यजमान को, सुरक्षित सदा बनायें ।
उसी दाता के हम सभी, मधुरता से गुण गायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद २-७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

यज्ञ अग्नि हर वस्तु को, सूक्षम रूप दिलाये ।
फिर अपने स्वभाव से, ऊपर इसे ले जाये ।।
शीघ्र गमन का गुण जभी, अस्त्रों-शस्त्रों में आये ।
तभी विजय हेतु बना, अग्नि अस्त्र कहलाये ।।
गरमी सरदी बसन्त की, ऋतुयें यही बनाये ।
उत्तम अन्नों का यही, सम्पादन करवाये ।।
जलों का शुद्धिकरण कर, सुख इन से पहुंचाये ।
उचित है सब के वासते, इन को जाना जाये ।।
बल पराक्रम आरोग्यता, हर कोई इनसे पाये ।
मूल अभिप्राय यही, यज्ञ रचाया जाये ।।
इन का सम्प्रयोग ही उत्तम यज्ञ कहाये ।
लक्ष हो सारे विश्व को, सुखी बनाया जाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद २-८ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

यज्ञ अग्नि से वायु जल, पवित्र हो अन्न उपजायें ।
उत्तम घी सामग्री ही, इस की हवि बनायें ।।
असंख्य सुखों का मूल है, इस को नहीं भुलायें ।
कर्तव्य अपना पूरा कर, प्रभु आश्रय पायें ।।
सूर्य किरणें हर वस्तु को, मेघ का रूप दिलायें ।
समर्थ से अपनी फिर उन्हें, पृथिवी पर बरसायें ।।
यज्ञ अग्नि द्वारा सभी, परम सिद्धि को पायें ।
सूर्य वायू हर वस्तु को आकाशस्थ ठहरायें ।।
उन के हर प्राक्रम से, पूरा लाभ उठायें ।
प्राणी मात्र को इस कला, से अवगत करवायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद २-९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

यज्ञ की रक्षा में जुटे, सूर्य और पृथिवी लोक ।
प्रभु ऐसे रक्षा करो, हरो रोग और शोक ।।
भौतिक अग्नि दूत बन, काम सभी के आये ।
दूर दूर की सूचना क्षणों में यह ले आये ।।
बने पृथिवी और सूर्य की रक्षक और सहाय ।
प्रभु तेरा रक्षा क्वच, वैसे ही मिल जाय ।।
परिष्कृत घृत और पदार्थ, हवन में डाला जाये ।
केसर कस्तूरी जले वांच्छित फल दिलवाये ।।
न्याय और पृथिवी राज्य को सूर्य सुरक्षित बनाये ।
ज्ञान ज्योति तेरी प्रभू, छाया हमें दिलाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद २-१० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

परोपकारी पुरुष की, कामना पूर्ण हो जाये।
ऐसे ईश्वर भक्त को, वांछित फल मिल जाये॥
भक्तों की इच्छाओं को, सफली-भूत कराये।
धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, चल कर स्वयं आये॥
शुभ कर्मों के करने से, सुख अमृत मिल जाये।
साधक की मन्जिल सदा, चरणों में आ जाये॥
पुरुषार्थ से भूमि और, विद्या मान बढ़ाये।
उत्तम धन और शिष्टता, जीवन में आ जाये॥
सबको जो सुख देत है, वही सिद्धि को पाये।
वेद कहे संसार का, भला वही कर पाये॥
बोलिये वेद धर्म की जय····

यजुर्वेद २-११ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अनन्त विद्या का दान दे करता जा कल्याण।
आत्मा की शुद्धि करे, करें उसे प्रणाम॥
शुद्ध और परिष्कृत अन्न का, करें सदा सोपान।
व्यन्जन कई प्रकार के, देता है भगवान॥
पदार्थ विद्या सीखें सभी, बनें सभी विद्वान।
धर्म युक्त व्यवहार से, प्राण बनें बलवान॥
जठर अग्नि सयंत करे, व्यान अपान समान।
इन के द्वारा ही बने, पुष्ट सदा इन्सान॥
सुखी बसे संसार सब, मिले सुखों की खान।
सर्व पालक भगवान को, सारे करें प्रणाम॥
बोलिये वेद धर्म की जय····

यजुर्वेद २-१२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

दिव्य गुणों दिव्य सुखों का, दाता करे विधान।
योग भक्ति द्वारा उसे, पहचानें विद्वान्॥
चारों वेद जो जान ले, ब्रह्मा उस को मान।
सबमें श्रेष्ठ कहाने का, अधिकार उसीका जान॥
अग्नि वायु आदत्य और, अंगिरा उन के नाम।
आदि सृष्टि में था मिला, जिनको यह सद ज्ञान॥
विद्या के संग आज्ञा दी, करें यज्ञ अनुष्ठान।
बिना इसके न मिल सके, सुख का कोई सामान॥
ईश्वर प्राप्ति भी करें, करें सब का कल्याण।
अपनी रक्षा वृद्धि का, भी हो हर पल ध्यान॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद २-१३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वेगवान है मन बड़ा, उत्पन्न करे विचार।
ज्ञान का साधन है यही, करें यज्ञ से प्यार॥
पृथ्वी और आकाश का, किया जिसने विस्तार।
प्रकट अप्रकट सुखों का, करे प्रभू विस्तार॥
धारण करवावे हमें, यज्ञ भली प्रकार।
दोनों यज्ञों से बने, सुखी सकल संसार॥
ओंकार तेरा नाम है, जगदीश्वर जगताधार।
प्रकृति को संय्यत करे, हृदय बनें उदार॥
वेद विद्या और यज्ञ से करें सब का उपकार।
दोनों का स्थापन करो हृदय में करतार॥
विद्या रूपि सूरज चढ़े, दूर हो सब अंधकार।
बढ़े प्रतिष्ठा और सुख, आये सदा बहार॥
बोलिये वेद धर्म की जय...

यजुर्वेद २-१४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

करें प्रभू गुण गान हम, वेदों के अनुसार ।
पदार्थ विद्या का दिया, है जिन में विस्तार ।।
करते हैं हम स्तुति, कीजिये इसे स्वीकार ।
नित्य हमारे ज्ञान के, भर दीजे भण्डार ।
अंतः कर्ण में कर सकें, आपके हम दीदार ।
जीतें सब के मन सदा, और जानें व्यवहार ।।
करें निरंतर स्तुति, पाएँ आप का प्यार ।
उत्तम उत्तम गुणों का, होवे सुखद प्रसार ।।
कला कौशल में हों निपुण, जीतें सकल संसार ।
अस्त्रों शस्त्रों के सदा, भरे रहें भण्डार ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद २-१५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अग्नि जल के मेल की विद्या जानी जाये ।
वेग आदि गुण युक्त कर, लाभ उठाया जाये ।।
कौशल विद्युत वायु का, दरिद्रता दूर हटाये ।
विजय प्राप्त कर शत्रू का, शीष झुकाया जाये ।।
अज्ञानी और वृद्ध को, ज्ञान सिखाया जाये ।
पदार्थ विद्या से सदा, सुख पहुंचाया जाये ।।
जो भी अप्रीति करे, उसे समझाया जाए ।
गर अप्रीति हम करें, उसे सुधारा जाये ।।
अच्छी शिक्षा ही सदा, ज्ञान अर्जित करवाये ।
जीवन को यह शिक्षा ही, नया प्रकाश दिखाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद २-१६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

आठ वसू गयारह रुदर बारह मास बनाये।
उत्तमता को जान कर यज्ञ रचाया जाये।।

प्राण से और अपान से, हर कोई जीवन पाये।
वर्षा का शुद्ध जल इन्हें, हर पल पुष्ट बनाये।।

वेद मन्त्रों के पाठ से, ज्ञान उजारा आये।
इनसे पूजा पद्धति, की भी समझ आ जाये।।

आकाशस्थ जल को सदा, यज्ञ ही शुद्ध बनाये।
पुष्टि कारक हो के वह, धरती पर आ जाये।।

नस नाड़ी और नेत्रों को, इन से बल मिल जाये।
दुष्टों से छड़वा दुष्टता, योग्य बनाया जाये।।

बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद २-१७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जो कण कण में रम रहा, पूजें उसे विद्वान।
प्रीति से सेवा करें, उसी की सब इंसान।।

जो आज्ञा पालन करें पायें सभी आराम।
अग्नि आदि के वेग को करें मूर्तिमान।।

इसके दाह प्रकाश को बनायें क्रियावान।
पाकर इस में कुशलता सिद्ध करें विज्ञान।।

काया की रक्षा करें, करें अन्न का पान।
उस व्यापक को सिर झुका, करें सदा गुणगान।

प्रीति को धारण करें, मानें सदा अहसान।
हृदय से स्वीकार कर करें उसे प्रणाम।

बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद २-१८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्राप्त हुए जो वृद्धि को, करते वेद बखान।
यज्ञ हवन प्रतिदिन करें, कहलायें विद्वान ।।
मधुर मधुर बोलें वचन, सुख का करें सामान।
उन्हीं को मिलते सुख सभी, विधि का यही विधान ।।
ज्ञान और कर्म कांड से, मिलता है विश्राम।
औरों को धारण करा, करें पूरे अरमान ।।
आपस के सहयोग से, पायें सभी वरदान।
इसी ज्ञान और कर्म से, सुखी हो सकल जहान ।।
धार्मिक और पुरुषार्थी हैं वही विद्यावान।
उत्तम व्यवहारों से जो, करें सब का कल्याण ।।

बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद २-१९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अग्नि वायु सुख रूप हैं, यज्ञ के अंग कहायें।
क्रियाओं द्वारा प्राप्ति, जल की यही करवायें।।
क्रिया कुशलता में यही मुझ को युक्त बनायें।
मुझ याजक में स्थाप्ति, सुख की यही करवायें ।।
नम्र प्राणी संसार के, कल्याण स्थित हो जायें।
ऐसी स्थिति को सभी, जन मानस अपनायें ।।
ईश्वर आज्ञा है यही, गुण उसके अपनायें।
उसी की पूजा सब करें, उसी को शीष निवायें ।।
अग्नि वायु की क्रियाओं से, पूरा लाभ उठायें।
इन्हीं के द्वारा विश्व को, फिर से स्वर्ग बनायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद २–२० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सर्वव्यापक रक्षक प्रभू, उत्तम जन्म दिलाये।
दाता उत्तम भोग का, सकल विद्या सिखलाये॥

उत्तम कर्मों की प्रेरणा, सदा वही दिलवाये।
उस ईश्वर की भक्ति का, सदैव करें उपाय॥

भौतिक अग्नि सूर्य और, बिजली रूप बनाये।
भलिभांति उपकार में, उन्हें जुटाया जाए॥

रक्षा साधनों में इन्हें, युक्त कराया जाये।
उत्तम भोगों के लिए, साधन समझा जाये॥

सत्य लक्षण युक्त वेद से, इनको जाना जाये।
विद्वानों द्वारा यह सब, प्रकाश में आ जाये॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद २-२१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जानते हो कुल जगत को, जग के सृजन हार।
विद्वानों को ज्ञान दे, करते हो उपकार॥

गुणों के दाता है प्रभू, सुन लो मेरी पुकार।
मुझ को यह सब दीजिये, ज्ञान भली प्रकार॥

जिन वेदों के द्वारा है, जग में हुआ प्रचार।
है विद्वानों आप भी, पाओ उन पर अधिकार॥

सकल विश्व प्रकाश के, हो प्रभू सूत्र धार।
यज्ञों के अनुष्ठान से, जाने तुझे संसार॥

क्रिया कांड से सिद्ध हुआ, यज्ञ रूप संसार।
आकाशस्थ स्थान में, पाता है आधार॥

उस जग न्यन्ता के लिए, नमन है बारम्बार।
पूजनीय सबका वही, करें सदा आभार॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद २-२२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

शुद्ध और पवित्र हवियों से, यज्ञ रचाया जाये ।
उन सुगन्धियों से सदा, दुनियां लाभ उठाये ।

बारह मास आठ वसू, बनते सदा सहाय ।
प्रजा इन से लाभान्वित हो, प्रकाश सारा पाये ।।

सूर्य किरणों से जल सदा, शुद्ध दिव्य हो जाए ।
पृथिवी से जाए सदा, वहीं लौटकर आए ।।

मानव को यह उचित है, यह विद्या प्रगटाये ।
विश्व के हर इक प्राणी को, उत्तम सुख मिल जाये ।।

उत्तम साधनों को सदा प्रयोग में लाया जाये ।
तीनों यज्ञों को सदा पूर्ण बताया जाये ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद २-२३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

कोई न छोड़े यज्ञ को, सदा करें अनुष्ठान ।
जो कोई छोड़ेगा इसे, छोड़े उसे भगवान ।।

हर भलाई इक यज्ञ है, करता वेद बखान ।
सभी कर्म यज्ञ कर्म हैं, मिले जिनसे आराम ।

उत्तम पदार्थों का दान ही, दिलाये सुख का धाम ।
इन से पाये जा सकें, मन वांच्छित वरदान ।।

जो वाणी और कर्म से, रहे मूढ़ नादान ।
उस को मिलती है सदा प्रबल दुखों की खान ।।

ईश्वर की आज्ञा समझ, लें कर्त्तव्य पहचान ।
इन्हीं गुणों से देवता, बन जाये इन्सान ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद २-२४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वेदों का अध्ययन कर, करें उनका प्रकाश ।
प्रकाशित उन से करें, धरती और आकाश ।।
उत्तम व्यवहारों का जो, करवाते आभास ।
विचारवान बन जात हैं, रहे न कोई निराश ।।
विपुल सुख जिन से प्राप्त हों, करें योग अभ्यास ।
राज्य सकल संसार का, चरणों में करे निवास ।।
प्रलय का कर्त्ता प्रभू, रहे हमारे पास ।
व्यवहारों की पूर्णता, करवाये न रखे उदास ।।
यथा सम्भव शुद्धि करें, रहें न कभी हताश ।
सब के हृदयों में रहे, सदा शान्ति का वास ।।
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद २-२५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जगती छन्द द्वारा करें, यज्ञों का विस्तार ।
उन से सुख पाये सदा, यह सारा संसार ।
हवियों को किरणें सदा, ले जायें उस पार ।
बन परमाणू रूप वह, आ जायें इस पार ।।
दुष्टजनों को दण्ड दें, जो छीनें अधिकार ।
करते सब निरन्तर रहें, जगती का उपकार ।।
मिलती जिससे स्वतन्त्रता, और सुख का भंडार ।
करता तृप्टुप छंद वही, सुखों का विस्तार ।।
कोई भी जो बाधा बनें, रोकें यह विस्तार ।
उनसे भी शुभ कर्मों का, करवायें सत्कार ।।
विद्या का और धर्म का, करें उन में प्रचार ।
सेवन शुद्ध अन्न का करें, करें कुशल व्यवहार ।।
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद २-२६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रकाशमान प्रशंसनीय प्रभु हो विद्यावान ।
प्रकाश हृदय में करो, प्रकट हो कुल विज्ञान ।।

चराचर में व्यापक सदा, रहें आप वर्तमान ।
उपदेशों से करत हो, जीवों का कल्याण ।।

करता हूं स्वीकार मैं, तुम हो जग के प्राण ।
पूज्य हैं सेवन योग्य हैं, वेदों के विद्वान ।।

करते हैं वह विश्व में, प्रकाशित तेरा ज्ञान ।
उचित है सब के वास्ते, करें उन का सम्मान ।।

व्यवहार विद्या के हेतु हैं, करें उन की पहचान ।
ऐसे साधन सब करें, मिले उन्हें आराम ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद २-२७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे सारे विश्व का, रखते हो तुम ध्यान ।
उत्तमता से ग्रहों का, ध्यान रखें विद्वान ।।

वैसा ही मुझको मिले, उत्ताम और सद ज्ञान ।
भली प्रकार सजा सकूँ, घर का सब सामान ।

श्रेष्ठ कर्म धारण करूं, करूं सदा गुणगान ।
मेरे याग और क्षेम को सम्भालो तुम भगवान ।।

स्त्रि पुरुष निरालस्य हों, सिद्ध करें हर काम ।
इस घर में विचरें सदा, उच्च कोटि विद्वान ।।

सौ वर्षों तक हम जियें, करें नाम सौपान ।
इस से अधिक अगर जियें, सुखी हों आठों याम ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद २-२८ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

न्याय युक्त नियत कर्म, करते हो भगवान ।
सत्य लक्षणों का किया, मेरे लिए विधान ।।
सत्य आचरण व्रत मेरा, चढ़े सदा परवान ।
बाधा गर आये कोई, करना तुम्हीं निदान ।।
सुख दुख हैं सब कर्म फल, है यह विधि विधान ।
दुखी न इन से मैं रहूं, रहूं नहीं परेशान ।।
धर्म युक्त हों कर्म सब, सब का हो कल्याण ।
ऐसे कर्मों से सुख मिले, करते वेद बखान ।।
दुख में न रोऊँ कभी, मुख पर हो मुस्कान ।
जहाँ तलक भी हो सके, बनूँ नेक इन्सान ।
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद २-२९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों को उचित है, शिल्प कला अपनायें ।
प्रयोगों द्वारा अग्नि के, गुण सब पर प्रगटायें ।।
पदार्थों को इक स्थान से, दूरी पर ले जायें ।
ऋतुओं के अनुसार फिर, इन से लाभ उठायें ।।
ऐश्वर्यों की प्राप्ति, हर इक को करवायें ।
पृथिवी के धारण धर्म से, सोम लता उपजायें ।।
पृथिवी के ही गर्भ में, हीरे तक बन जायें ।
इतना ध्यान अवश्य रहे, दुष्ट न पनपने पायें ।।
दोषों की निवृत्ति करें, सब को शिष्ट बनायें ।
अज्ञानी और मूर्ख को, सत्य मार्ग दिखलायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद २-३० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

दुष्ट जो अपने मन वचन, कर्म में अन्तर लायें।
अपने छल और कपट से, औरों को बहकायें॥
स्वार्थ सिद्धि के लिए, कई-कई चक्र चलायें।
सच्चाई और धर्म को, झूठ से ढकना चाहें॥
अपने सुखों के लिए, उल्टे कर्म कमायें।
अपनी दुष्टता मूढ़ता, को सच्चा बतलायें॥
अन्याय से औरों की, सम्पदा को हर लायें।
या अपने स्वभाव से, किसी को दुख पहुंचायें॥
ईश्वर न्याय से तेरे, कभी न वह बच पायें।
प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष में, करणी का फल पायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद २-३१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

मात पिता विद्वान जो, जब भी घर में आयें।
यथा योग्य सत्कार कर, आसन उन्हें दिलायें॥
धार्मिक सज्जन पुरुष ही, सोया भाग्य जगायें।
वचन बोल मीठे मधुर, आनन्द प्राप्त करायें॥
आदर और सम्मान से, भोजन उन्हें करायें।
चर्चा करके ज्ञान की, करें दूर शंकायें॥
वृद्धि युक्त जो कर सकें, विद्या हमें पढ़ायें।
उन के उपदेशों से ही, परम धाम को पायें॥
स्वयं करें अच्छे कर्म, औरों से करवायें।
साधन सब के हर्ष के, हर पल घड़ी जुटायें।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद २-३२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

नमन करें विद्वानों को, जो आनन्द प्राप्त करायें ।
ज्ञान रूप अमृत पिला, दुखों से छुड़वायें ।।
धर्म युक्त आजिविका, का जो बोध करायें ।
प्राणों की स्थिरता की जो, हम को कला सिखायें ।।
अन आदि भोगों की जो, विद्या हमें दिलायें ।
राज्य और न्याय का हमें, जो प्रकाश दिखायें ।।
दुख समूह और पाप की, निवृत्ति जो करवायें ।
क्रोध और दुष्टाचार से, पीछा सदा छुड़ायें ।।
विद्या शिक्षा के लिए, नित्य प्रति घर आयें ।
जो कुछ भी उपलब्ध हो, सब कुछ भेंट चढ़ायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद २-३३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों रक्षा करो, दो विद्या का दान ।
ब्रह्मचारी होवें सभी, कुल और जग की शान ।।
आध्यात्मिक बल प्राप्त हो, काया हो बलवान ।
युक्त होकर पुरुषार्थ से, करें सदा कल्याण ।।
जैसे माता गर्भ में, पुत्र का रखती ध्यान ।
ऐसे हों गुणवान जन, जग में पायें मान ।।
ब्रह्मचर्य पालन करें, मुख पर हो मुस्कान ।
तेज ओज तप से सदा, पायें सब वरदान ।।
आप के ही सानिध्य से, प्राप्त करें सब ज्ञान ।
सारी धरती कर सकें, फिर से स्वर्ग समान ।।
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद २-३४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ब्रह्मचारियों गुरुओं का, करो सदा सत्कार ।
यथा शक्ति सेवा करो, कराओ फल आहार ।।

उत्तम उत्तम रस पिला, करो शिष्ट व्यवहार ।
स्वादिष्ट जल औषधि आदि दे, करो सदा आभार ।।

दूध घी और मिष्ठान दो, जितने हों दरकार ।
उत्तम रीति से अन्न पका, रखो सदा तैयार ।।

विद्वत जन सब तृप्त हों, प्रसन्न भली प्रकार ।।
विद्या की प्राप्ति करें, यही है जीवन सार ।

परधन समझें लोष्टवत, बनायें शुद्ध विचार ।
विद्या धन का विश्व में, करना सदा प्रचार ।।

बोलिये वेद धर्म की जय · · · ·

दूसरे अध्याय का काव्य पाठ

समाप्त

यजुर्वेद ३-१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

उत्तम समिधा धृत आदि को, जलाओ करो प्रकाश ।
अतिथि सेवा की तरह, इसका करो विकास ।।
केसर कसतूरी जले, रखो सदा विश्वास ।
घी शक्कर गुड़ जब जले, उत्पन्न करें उल्हास ।।
दूध से सोमलताओं से, रहे न कोई निराश ।
गुडूभी आदि औषधि, करें रोग का नाश ।।
इन शाकल्यों से सभी, इंद्रियां बनतीं दास ।
हृष्ट पुष्ट व्यक्ति बने, रहे न कोई हताश ।।
इन से वायु वृष्टि जल, रहें हमेशा साफ ।
यानों की रचना विधि, इसी में करें तलाश ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

घी जो तीक्षण स्वभाव है, यज्ञ में डाला जाये ।
जीवन की शक्ति यही, प्राणी में उपजाये ।।
मीठा डालने से हर इक, दोष निवृत हो जाये ।
हर व्यक्ति सुख चैन की, निद्रा से सो पाये ।।
दाह प्रकाश छेदन आदि गुण, सब को लाभ पहुंचाये ।
शुद्ध की हुई हवियों को, हवि बनाया जाए ।।
इन सब हवियों के सदा, रूप को समझा जाये ।
यही ज्ञान हर व्यक्ति को, हर पल सुखी बनाये ।।
गुणी ज्ञानी व्यक्ति सदा, ईश्वर से मिल पाये ।
वही व्यक्ति संसार को, देव पुरुष कहलाये ।
बोलिये वेद धर्म की जय . .

यजुर्वेद ३-३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सभी पदार्थों को यही, अग्नि प्राप्त कराये ।
इन के भेदन के लिए, बलशाली कहलाये ।।
यही युक्त है तेज से, प्रकाश यही फैलाये ।
घृत से और समिधाओं से, इसे बढ़ाया जाये ।।
शिल्प विद्या की सिद्धियां, सब को यही कराये ।
ज्ञान कलाओं को सदा, लाभ उठाया जाए ।।
इस से ही हर काम को, सिरे चढ़ाया जाये ।
स्वयं सुखी हो विश्व को, सुखी बनाया जाये ।।
भली भाँति इस यज्ञ का, महत्त्व समझा जाये ।
मानव जन्म मुश्किल मिले, लाभ उठाया जाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्राप्ति का हेतू यही, कामना योग्य यही ।
समिधा और घी आदि का, सेवन करे यही ।।
यज्ञ प्रति दिन करने से, मिलती प्रसिद्धि ।
उत्तम पदार्थों से सदा, देते रहें हवि ।।
श्रेष्ठ हवि जो देत है, बनता श्रेष्ठ वही ।
इन शुभ कर्मों से सदा, बढ़ती है ख्याति ।।
मन वांछित फल देत है, है जादूई छड़ी ।
सुखों की घर में सदा, होती रहे झड़ी ।।
चल कर आये द्वार पर, मंजिल और खुशी ।
शर्त है उत्तम और श्रद्धा युक्त हो तेरी हवि ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . ..

यजुर्वेद ३–५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे सूर्य आकाश को, करता है प्रकाशमान ।
विस्तृत भूमि भी रहे, आकाशस्थ विद्यमान ।।
ईश्वर तीनों लोकों का करता है कल्याण ।
हम इन सबसे लाभ उठा, सबका करें उत्थान ।।
प्रकाशित कुल जग करें, चमकें सूर्य समान ।
पृथ्वी की भांति रहें, सभी सदा धैर्यवान ।।
अग्नि की सिद्धि करें, अन्न इससे उपजायें ।
कलाओं में उपयोग कर, इसका लाभ उठायें ।।
सारे कष्टों का करें, इसके द्वारा निदान ।
इसी ओर संकेत हैं, कर रहे हमें भगवान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जलों सहित पृथ्वी सदा, सूर्य के चक्र लगाये ।
अपनी धुरी पे घूम कर दिन और रात बनाये ।।
शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष, काल गणना हो पाये ।
आकर्षण से सूर्य के, गति ग्रहों में आये ।।
गोलाकार पृथ्वी चले, ऋतू बदल कर आये ।
अंतरिक्ष में घूमती नजर सभी को आये ।।
भूगोलिक विद्या सकल, समझ इसी से आये ।
आगे पीछे सब चलें, फर्क न आने पाये ।।
अंतरिक्ष आकाश में, हर इक को लटकाये ।
सभी ग्रह और उपग्रह सदा, इसी में चलते आये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ३-७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अग्नि विद्युत रूप बन, जीवन हमें दिलाये।
प्राण अपान व्यान को, यह ही गति दिलाये ।।
ऊपर-नीचे नीचे-ऊपर, यह ही इन्हें चलाये।
इन ही के कारण सदा, प्रकाश इन्हें मिल पाये ।।
इस भांति ब्रह्मांड में, विचर के उसे चलाये।
सूर्य लोक को भी सदा, यही अग्नि प्रगटाये ।।
हर चेष्टा व्यवहार में, नजर सभी को आये।
सिद्धि कारक विश्व की, इसी को समझा जाये ।।
अंतः गुहा में वास कर, सारा चक्र चलाये।
ईश्वर आज्ञा देत हैं, इसको समझा जाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जो अग्नि निज शक्ति से, वाणी को प्रकटाये।
इस काया के संग से, यह सब कुछ कह पाये ।।
आदित्य अंतरिक्ष छोड़ कर, तीस स्थान दिखाये।
गतिशील उस शक्ति को, हर पल समझा जाये ।।
कैसे करे प्रकाश यह, इस को जाना जाये।
चले चलाये नित्य प्रति, सब का बोध कराये ।।
विद्वानों को उचित है, समझ में सब की आये।
कोई कहीं इस ज्ञान से, वंचित न रह जाये ।।
इस विद्या को हर जगह, खूब फैलाया जाये।
वाणी एक वरदान है, प्रयोग में लाया जाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वाणी विद्या से युक्त कर, करते प्रभु प्रदान।
सत्य कथन वाली बना, दिया सकल विज्ञान।।
शिल्प विद्या के साधनों, में अग्नि प्रधान।
आत्माओं में विश्व की, प्रभु प्रकाशित जान।।
ईश्वर का उपदेश है, हो मन वचन समान।
सूर्य पदार्थों को सदा, करता प्रकाशमान।।
विद्याओं से है भरा, दिया वेद का ज्ञान।
काया और ब्रह्माण्ड में बिजली एक समान।।
तेज पूर्ण भगवान ही, करता सकल विधान।
आत्मा में प्रकाश कर, करे उसे बलवान।।
यज्ञ की हवियों से सदा, बल पाता है प्राण।
कार्य सिद्धियों के लिये, अग्नि साधक जान।।
ईश्वर उपासना योग्य है, करे पूरे अरमान।
उसी विधाता को करें, सब मिलकर प्रणाम।।
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-१० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

भौतिक अग्नि विश्व में, कई रूप अपनाये।
प्रभु रचित संसार में, नये नये खेल दिखाये।।
बन कर बिजली रूप यह, अंधेरा दूर भगाये।
सूर्य रूप में विश्व में, वर्तमान हो जाये।।
प्रातः काल यह यज्ञ और, अग्नि होत्र कहाये।
वर्तमान द्रव्यों को यह, दूर दूर फैलाये।।
हर प्रकार व्यवहार की, सिद्धि यही कराये।
प्रातः सायं हर घड़ी, सब का हाथ बटाये।।
समर्थवान इस को समझ, हर कोई लाभ उठाये।
इसी के माध्यम से जगत, में विज्ञान बढ़ाये।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-११ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वेद मंत्रों से स्तुति, का है किया विधान।
भीतर बाहर सब जगह, ईश्वर है विद्यमान॥

व्यवहारों को जानता, सुनता हर पल जान।
पाप कर्म से बच सदा, उसके भय को मान॥

अज्ञानी से दूर है, ज्ञानी के है पास।
यह अकाट्य सच्चाई है, कर इसका विश्वास॥

मधुर उच्चारण से सदा, करें प्रभु गुण–गान।
ज्ञान स्वरूप जगदीश की, बड़ी निराली शान॥

स्तुति के संग यज्ञ का, करें सदा अनुष्ठान।
ज्ञान का दाता मान कर, करें उसे प्रणाम॥

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-१२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रकाश युक्त सूरज रचा, है वह बड़ा महान।
प्रकाश रहित पृथिवी, सदा रचता है भगवान॥

कार्य कारण से प्रत्यक्ष है, सब से ऊपर जान।
सब का पालनहार है, रचता है वही प्राण॥

पदार्थों में अग्नि बड़ा, है यह प्रकाशमान।
प्रकाश रहित लोकों में भी, रहे सदा विराजमान॥

सब का संचालन करे, पालन करता मान।
जलों थलों में हो रहा, सर्वत्र विद्यमान॥

प्रभु की महिमा है बड़ी, देता है सब ज्ञान।
श्रद्धा से और प्रेम से, करें उसे प्रणाम॥

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-१३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अग्नि वायु की शक्ति को, जिसने लिया पहचान ।
व्यवहारों की सिद्धि कर, पाये सब वरदान ।।
कार्यों में प्रयुक्त कर, करे वह कार्य महान ।
सुख का हेतु हैं यही, पाये इनका ज्ञान ।।
इन्हीं के द्वारा विश्व को, मिलता है आराम ।
चक्रवर्ति शासन मिले, ऐसा लिखा विधान ।।
अन-धन होते प्राप्त हैं, मिले सुखों की खान ।
आनन्दित होते सभी, पूरे हों अरमान ।।
वश में हो भूगोल सब, प्राप्त हो हर सामान ।
दोनों को जानें सदा, करता वेद बखान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-१४ (भावार्थ) 'क.व्य-पाठ'

सृष्टि में ऋतुएँ सदा, बदल-बदल कर आयें ।
अग्नि वायु द्वारा यह, प्रसिद्धि को पायें ।।
सूर्य आदि से प्रकाश पा, सब उन्नत हो जायें ।
दोनों मिलकर सभी ओर, वृद्धि प्राप्त करायें ।।
सभी प्रकार के धनों से, राज्य सम्पन्न बनायें ।
सीमायें इस देश की दूर-दूर ले जायें ।।
प्राप्त करें हर सिद्धि को, सबको सुख पहुंचायें ।
चहों और छाई रहें, मस्ती भरी हवायें ।।
योजना लोक लोकांतरों की, उन्नति को अपनायें ।
इन प्रयोगों से सदा, सृष्टि स्वर्ग बनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-१५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जो विद्या को जान कर, इसको सदा बढ़ायें।
यज्ञ क्रिया के रिहस्य को, जानें और जनायें ।।
शिल्प क्रिया के सार को, समझें और समझायें।
सेवा करने योग्य हैं, उनको शीश झुकायें ।।
प्रभू आश्चर्य गुण युक्त है, उसका बोध करायें।
भौतिक अग्नि की कलाओं से, अवगत हमें करायें ।।
अग्नि होत्र से अश्वमेध तक, करना हमें सिखायें।
सच्ची भक्ति और उपासना, की जो विधि बतायें ।।
सारी प्रजा सुख से रहे, साधन जो बतलायें ।।
सेवा करने योग्य हैं, उनको शीश झुकायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-१६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्याओं को व्याप कर, कार्य रूप में लायें।
इन्हीं के द्वारा कार्य की, हर सिद्धि को पायें ।।
भौतिक अग्नि से सदा, असंख्य लाभ उठायें।
आदि और वर्तमान का, भेद समझें समझायें ।।
दीप्ति इस की जान कर, सबको सुख पहुंचायें।
शुद्ध कार्यों की सिद्धि में, प्रयोग में इसको लायें ।।
कारण इस का नित्य है, मन में सदा बिठायें।
हवन आदि द्वारा सदा, वृष्टि इससे करवायें ।।
सब को यह अनिवार्य है, ज्ञान यह सारा पायें।
अपने हर व्यवहार को, सदैव कुशल बनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-१७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

रक्षक कुल संसार के, पकड़ो मेरा हाथ।
सौ वर्षों तक आप से, छुटे न मेरा साथ॥
रहे स्वस्थ्य मस्तिष्क भी, मेरा सदा ठीक ठाक।
विज्ञानों को कर सकूं, हमेशा आत्मसात॥
बुद्धि बल और शौर्य से, रहूं सदा भरपूर।
जठराग्नि जलती रहे, रोग शोक रहें दूर॥
ज्ञान अग्नि प्रजवलित रहे, बनूं मैं यौद्धा शूर।
कामना मैं जो भी करूं, हो जावे मन्जूर॥
भौतिक अग्नि के लाभ को, करें सदा साकार।
पालन का साधन समझ, लें इससे उपकार॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-१८ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

ईष उपासना पुरुषार्थ से, दुखों से छुट जायें।
भौतिक अग्नि से सदा, सब उपकार जुटायें॥
दीनों दुखियों को सदा, दुखों से छुड़वायें।
उत्तम उत्तम सुख सदा, हर इक को पहुंचायें॥
हिंसा अहंकार आलस्य दम्भ, पास न आने पायें।
सारे प्राणी विश्व के, दोष मुक्त हो जायें॥
देखें सुनें सौ वर्ष तक, सदा प्रभू गुण गायें।
अस्त्रों-शस्त्रों से शत्रु पर, विजय श्री को पायें॥
करते रहें प्रयास हम, दरिद्रय दूर भगायें।
निरंतर वृद्धि करें, पग-पग बढ़ते जायें॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-१९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जगदीश्वर संसार में, हो प्राणों के प्राण।
विद्वानों द्वारा दिया, हमें वेद का ज्ञान ॥

स्तुति योग्य इस जगत में, तुम ही हो भगवान।
उत्तम धन और सुखों का, देते हो वरदान ॥

हम पूर्ण पुरुषार्थ से, आज्ञा तेरी निभायें।
सम्प्रयोग हर पदार्थ का, करें और सुख पायें ॥

अग्नि की सिद्धि करें, प्रयोग में इसको लायें।
संतानों और राज्य को, सुख शांति पहुंचायें ॥

भोगें उत्तम भोग सब, सभी पुष्ट हो जायें।
कुशल करें व्यवहार को, प्रकाश तेरा पायें ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-२० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

औषधियों को ग्रहण कर, वीर्य पुष्ट बनाऊं।
अग्नि वायु से बड़े-बड़े, कारण सिद्ध कराऊं ॥

जल दूध घी मिष्ठान से, पराक्रम युक्त हो जाऊं।
चक्रवृति साम्राज्य की, स्थापना मैं कर पाऊं ॥

उत्तम-उत्तम धनों का, विशाल भंडार बनाऊं।
प्राप्त कर हर उपकार को औरों को पहुंचाऊं ॥

कार्य कुशलता से सदा, आगे कदम बढ़ाऊं।
पदार्थों के गुण-दोष का, सब को बोध कराऊं ॥

हर इक का गुण जान कर, सेवन करूं कराऊं।
सुखी रहे संसार सब, ऐसा कर्म कमाऊं ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-२१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जहाँ जहाँ विद्वान जन, करते सदा निवास ।
उत्तम शिक्षा विद्या का, होता वहीं विकास ।।
वहीं प्रजा में विश्व का, धन करता है वास ।
सब सुखों से युक्त हों, रहे न कभी हताष ।।
विद्वानों का संग मिले, होवें नहीं निराश ।
नित प्रति सतसंग करें, विद्या का अभ्यास ।।
अनधन पशुओं से युक्त घर, चारों तरफ बसायें ।
आदर से विद्वानों को, उन में सदा बुलायें ।।
नीति निपुण जो श्रेष्ठ हों, शासन पर बिठलायें ।
नित्य प्रति परामर्श से, सारे काम चलायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-२२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हर वस्तु में बिजली का, जिस ने किया प्रकाश ।
सब रूपों को जानकर, उनका करें आभास ।।
चेष्टाओं व्यवहारों में, लायें सदा मिठास ।
विचित्र गुणों का विश्व में, प्रतिदिन करें विकास ।।
प्रभू की इन रचनाओं से, सबको युक्त करायें ।
परिपूर्ण हों घर सभी, ऐसी विधि अपनायें ।।
बढ़े तेज और पराक्रम, सारे लाभ उठायें ।
अन धन से भरपूर हों, विश्व की सभी दिशायें ।।
रहें समीप जगदीश के, अपना उसे बनायें ।
नित्य सेवन योग्य है, उसी को शीश झुकायें ।।

यजुर्वेद ३-२३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अन्नों का सेवन करें, करें प्रभू गुण-गान ।
पराक्रम से और बुद्धि से, करें यज्ञ अनुष्ठान ।।
राज्य की रक्षा नित करें, कर्तव्य इस को जान ।
व्यवहारों की सिद्धि कर, पायें मोक्ष का धाम ।।
सत्य स्वरूप को हर जगह, देखें प्रकाशमान ।
आदर और सत्कार से, करें उसे प्रणाम ।।
शिल्प विद्या की सिद्धि का, होवे पूरा ज्ञान ।
पशुओं की रक्षा का भी, रखें हमेशा ध्यान ।।
रचकर भौतिक अग्नि को, किया बड़ा अहसान ।
आदर और सत्कार से, करें उसे प्रणाम ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-२४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे पिता इक पुत्र को, सद्गुण युक्त बनाये ।
शिष्टाचार से युक्त कर, उसका मान बढ़ाये ।।
विद्या नम्र स्वभाव का, आभूषण पहनाये ।
उत्तम शिक्षा से उसे, सब का सखा बनाये ।।
श्रेष्ठ ज्ञान मुझको मिले, करना प्रभू उपाये ।
दुरित कोई संसार का, मुझे सता नहीं पाये ।।
विषयों की आसक्ति में, मन मेरा नहीं जाये ।
भक्ति रस अमृत तेरा, पीने को मिल जाये ।।
सुखों की हो प्राप्ति, आप का मिले सहाये ।
श्रद्धा और सत्कार से, सिर मेरा झुक जाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-२५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हे सब के रक्षक प्रभू, तेरा सब में वास ।
और फिर सारा विश्व यह, तुझ में करे निवास ।।

जीवन का हेतू तूही, रहे हमेशा पास ।
श्रेष्ठ गुण कर्म स्वभाव का, होता है आभास ।।

मंगल करने हार है, करता सदा प्रकाश ।
उतम विद्या का सदा, करवाता अभ्यास ।।

चक्रवर्ति शासन मिले, रहे न कोई हताश ।
सुखी रहे संसार सब, रहे न कोई निराश ।।

आपस के सम्बन्धों में, आये मधुर मिठास ।
जमा रहे तुझ पर सदा, आशा और विश्वास ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . ..

यजुर्वेद ३-२६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

शुद्ध स्वरूप आनन्द के, दाता हो भगवान ।
अपना अथवा औरों का, चाहें हम कल्याण ।।

सुखों के भंडार हो, देते हो विज्ञान ।
स्तुतियाँ जो-जो करें, देना उन पर ध्यान ।।

पाप कर्मों से पृथक हों, ऐसा करो विधान ।
जिस से पीड़ित हो कोई, करें न ऐसा काम ।।

धर्म कार्यों में सदा, लड़ायें अपनी जान ।
प्राणी मात्र का हित करें, सुख का करें सामान ।।

हमारी यह इच्छायें सब, चढ़ें सदा परवान ।
अपनी सत्ता से हमें, दीजे यह वरदान ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-२७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

पृथ्वी का शासन मिले, करो कृपा करतार।
राजनीति में भी रहे, कुशल मेरा व्यवहार।।

मन वांछित फल सब मिलें, भरे रहें भण्डार।
जाने का न नाम लें, सपने हों साकार।।

लगा रहूँ उपकार में, करूं नहीं तकरार।
कर लेना जगदीश तुम, यह प्रार्थना स्वीकार।।

हर प्राणी अच्छा बुरा, लेता है आधार।
अधर्म कार्यों से सदा, करें सभी इन्कार।।

धर्म युक्त व्यवहार की, इच्छा करें हजार।
पुरुषार्थ करने से ही, नैया लागे पार।।

बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ३-२८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सनातन वेद और शास्त्र के, पालक हो भगवान।
पठन और पाठन कर सकूँ, दो विद्या का दान।।

विद्या दान से भी सदा, कहलाती सन्तान।
मैं शामिल उनमें रहूं, ऐसा करो विधान।।

सभी नीतियां जान लूँ, बनूँ मैं नीतिवान।
औषधियों के बारे में, मुझे हो पूरा ज्ञान।।

विद्याओं से युक्त हो, उन्हीं का करूं बखान।
कुशल रहे व्यवहार और, बनूँ नेक इन्सान।।

आपके द्वारे पर पड़ा, अर्पित तुझको प्राण।
करो स्वीकार प्रार्थना, तुम हो बड़े महान।।

बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ३-२९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वेद वक्ता धनवान हो, करो हमें यही दान ।
अनंत विद्यायें जानकर, कहलायें विद्वान ।।
अविद्या आदि रोगों का, करते तुम्हीं निदान ।
हर इक वस्तू का हमें, कराओ पूरा ज्ञान ।।
शरीर आत्मा में बल बढ़ा, करते हो बलवान ।
कर शुभ कर्मों में प्रवृत्त, करते हो कल्याण ।।
कुशलता और शीघ्रता, बनें यह तीर कमान ।
सभी गुणों से युक्त हो, बींधें सदा निशान ।।
उत्तम-उत्तम कर्मों से, हमारी हो पहचान ।
शुभ गुण धारण कर सभी, कहलायें गुणवान ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-३० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्या की वृद्धि करें, करें हमेशा दान ।
औरों के ज़र माल को, समझें मिट्टी समान ।।
बुरे कर्मों को त्याग कर, बनें नेक इन्सान ।
संग करें न दुष्ट का, हानि इसमें जान ।।
धर्म की रक्षा के लिये, बलि चढ़ायें प्राण ।
मानें सारे विश्व का, उपास्य देव भगवान ।।
वही स्तुति योग्य है, माने सकल जहान ।
निरंतर प्रार्थना करें, अपना उसको मान ।।
उपासना उसकी करने से, मिलते सब वरदान ।
हिंसा जो करते सदा, हैं वह पशु समान ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-३१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अन्दर बाहर जो गति, करे वही है प्राण ।
आकर्षण से सूर्य के, पृथ्वी ठहरी जान ।।
इन दोनों के संग में, जल का विशेष स्थान ।
विश्व के संचालन में है, इनका महत्व महान ।।
सभी पदार्थों का सदा, प्राप्त करें सब ज्ञान ।
इसकी प्रकाशित करें, नीति और विधान ।।
राज्य रक्षा मिलकर करें, अमूल्य इसको जान ।
हर एक के सुख का करें, साधन और सामान ।।
नियमों का पालन करें, पायें सब आराम ।
वेद विद्या की रक्षा में, कर दें अर्पित प्राण ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ····

यजुर्वेद ३-३२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

भक्त प्रभू का न डरे, कभी नहीं घबराये ।
उसके घर में चोर और डाकू कभी न आये ।।
उसके मार्ग में शत्रू भी, सदैव शीष झुकाये ।
पापी उसके सामने, ठहर कभी नहीं पाये ।।
उसको दुख पहुंचाने में, समर्थ नहीं हो पाये ।
पाप कर्म का कथन भी, वाणी पर नहीं आये ।।
ऐसे भक्तों का मुझे, संग सदा मिल जाये ।
मेरा भी ईश्वर रहे, हर पल घड़ी सहाये ।।
मेरी वाणी हो मधुर, विश्व मित्र बन जाये ।
सकल विश्व में कोई भी, शत्रू न रह जाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ····

यजुर्वेद ३-२६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वेद वक्ता धनवान हो, करो हमें यही दान।
अनंत विद्यायें जानकर, कहलायें विद्वान॥
अविद्या आदि रोगों का, करते तुम्हीं निदान।
हर इक वस्तू का हमें, कराओ पूरा ज्ञान॥
शरीर आत्मा में बल बढ़ा, करते हो बलवान।
कर शुभ कर्मों में प्रवृत्त, करते हो कल्याण॥
कुशलता और शीघ्रता, बनें यह तीर कमान।
सभी गुणों से युक्त हो, बींधें सदा निशान॥
उत्तम-उत्तम कर्मों से, हमारी हो पहचान।
शुभ गुण धारण कर सभी, कहलायें गुणवान॥

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-३० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्या की वृद्धि करें, करें हमेशा दान।
औरों के ज़र माल को, समझें मिट्टी समान॥
बुरे कर्मों को त्याग कर, बनें नेक इन्सान।
संग करें न दुष्ट का, हानि इसमें जान॥
धर्म की रक्षा के लिये, बलि चढ़ायें प्राण।
मानें सारे विश्व का, उपास्य देव भगवान॥
वही स्तुति योग्य है, माने सकल जहान।
निरंतर प्रार्थना करें, अपना उसको मान॥
उपासना उसकी करने से, मिलते सब वरदान।
हिंसा जो करते सदा, हैं वह पशु समान॥

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-३१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अन्दर बाहर जो गति, करे वही है प्राण।
आकर्षण से सूर्य के, पृथ्वी ठहरी जान।।
इन दोनों के संग में, जल का विशेष स्थान।
विश्व के संचालन में है, इनका महत्व महान।।
सभी पदार्थों का सदा, प्राप्त करें सब ज्ञान।
इसकी प्रकाशित करें, नीति और विधान।।
राज्य रक्षा मिलकर करें, अमूल्य इसको जान।
हर एक के सुख का करें, साधन और सामान।।
नियमों का पालन करें, पायें सब आराम।
वेद विद्या की रक्षा में, कर दें अर्पित प्राण।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-३२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

भक्त प्रभू का न डरे, कभी नहीं घबराये।
उसके घर में चोर और डाकू कभी न आये।।
उसके मार्ग में शत्रू भी, सदैव शीष झुकाये।
पापी उसके सामने, ठहर कभी नहीं पाये।।
उसको दुख पहुंचाने में, समर्थ नहीं हो पाये।
पाप कर्म का कथन भी, वाणी पर नहीं आये।।
ऐसे भक्तों का मुझे, संग सदा मिल जाये।
मेरा भी ईश्वर रहे, हर पल घड़ी सहाये।।
मेरी वाणी हो मधुर, विश्व मित्र बन जाये।
सकल विश्व में कोई भी, शत्रू न रह जाये।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-३३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्राण पवन और जल सभी, करते जीवन दान ।
सूर्य लोक साधक बने, प्राणी ऐसा जान ।।
कारण रूप शक्ति के यह, चारों हैं सन्तान ।
जीवन के कारण यही, लेते हैं यही प्राण ।।

नाश रहित शक्ति है वह, प्रयोग करे भगवान ।
उत्पत्ती में समर्थ है, यह उसकी पहचान ।।
निमित्त यह जीवन मरण की, प्राप्त करें यह ज्ञान ।
अपना अथवा औरों का, सदा करें कल्याण ।

इनकी ज्योति तेज से, सब कुछ है द्युतिमान ।
जिससे जीवन हो सफल, ऐसा करें विधान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-३४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

आच्छादित सुख से किया, यह सारा संसार ।
कर्म फलों की व्यवस्था भी, करते हो करतार ।।
जो विद्या का दान दे, पाये वह सत्कार ।
बुद्धि बल उसका बढ़े, मिले तेरा आधार ।।

जो जितनी जल्दी करे, जल्दी ही फल पाये ।
यह अकाट्य सिद्धांत है, कभी न टाला जाये ।।
विद्या को ही धन कहा, शास्त्र यही बतलाये ।
सृष्टि का यह चक्र है, कभी न रुकने पाये ।।

तेरी आज्ञा में चलें, रहे तू सदा सहाये ।
बिना तेरे इस सृष्टि का, चक्र नहीं चल पाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-३५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अति श्रेष्ठ सुखरूप हो, प्रकाशमय भगवान ।
पाप दुखों के मूल का, करते तुम्हीं निदान ।।
आपके इसी स्वरूप का, करते हैं हम ध्यान ।
तेज ओज को प्राप्त हों, ऐसा करो विधान ।।

आपकी करुणा से सदा, होता है कल्याण ।
बुद्धियों को प्रेरित करा, करें सदा शुभ काम ।।
शुद्ध गुण कर्म स्वभाव हों, हो मन बचन समान ।
आपका ही सुमरण करें पायें सुख आराम ।।

स्तुति प्रार्थना है यही रखना हर पल ध्यान ।
छोड़ें न पुरुषार्थ को, जब लग घट में प्राण ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-३६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जो विद्या का दान दें, वह विद्वान कहायें ।
आप अपना रक्षा कवच, उन ही को दिलवायें ।।
वह दुखों और कष्टों से, ज़रा नहीं घबरायें ।
सबके जानने योग्य जो, उसका बोध करायें ।।

तेरी आज्ञा में चलें, सतपथ को अपनायें ।
मृत्यु भय हो सामने, फिर भी सत्य सुनायें ।।
संगत ऐसे लोगों की, प्राप्त हमें करवायें ।
पास उनके जायें सदा, या फिर उन्हें बुलायें ।।

सानिध्य उनका प्राप्त हो, ऐसी करें दुआयें ।
बचें अविद्या अधर्म से, और सदा सुख पायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-३७ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

मेरी और प्रजाओं की, करो रक्षा भगवान ।
आप हैं नीति युक्त और, आप ही कृपा निधान ।।
घोड़े हाथी पशुओं का, रखें हमेशा ध्यान ।
संदेह रहित स्तुत्य हो, प्राणों के भी प्राण ।।
प्राण प्रिय स्वरूप है, बल का हेतू उदान ।
चेष्ठा हेतू व्यान है, रहे मुझे यह ज्ञान ।।
पशुओं का पालन करूँ, और प्रजा का मान ।
शौर्य धैर्य विद्या युक्त हो, करूं मैं सारे काम ।।
पुष्ट रहूं मैं हर घड़ी, बांटू सुख आराम ।
तेरा आश्रय ले करूं, हर एक का कल्याण ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-३८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रभू प्रकाश स्वरूप हो, करते हो विस्तार ।
उत्तम यश और बल के हो, सबसे बड़े भंडार ।।
पृथ्वी आदि लोकों के, हो तुम ही आधार ।
सुखों का सबके लिये, करते हो प्रसार ।।
करते हैं तुमको नमन, हम सब सौ–सौ बार ।
जब चाहें दर्शन करें, खुले रहें तेरे द्वार ।।
सूरज के प्रकाश से, करते हो उपकार ।
इसके ही प्रकाश में, नज़र आये संसार ।।
अग्नि का प्रयोग हम. करते हर प्रकार ।
बढ़ते हैं यश कीर्ति, उसके ही अनुसार ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-३९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रजाओं के पालक प्रभू, करते धन प्रदान।
उत्तम बल और पराक्रम, का देते वरदान।।

ग्रह की हर आवश्यकता का, देते हो सामान।
सुख का और प्रकाश का, करते सकल विधान।।

जो विशेष स्थान हैं, रखते उनका ध्यान।
घरों में प्रसन्नता रहे, चेहरों पर मुस्कान।।

प्रत्यक्ष रूप अग्नि सदा, करती है कल्याण।
परिवर्तित बिजली में कर, उड़ाये सदा विमान।।

सबका सुख साधन करें, अपना उनको जान।
सारे श्रद्धा प्रेम से, करें तुम्हें प्रणाम।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-४० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अति कुशल उत्तम प्रभू, रहना सदा सहाये।
भौतिक अग्नि का सदा, लाभ उठाया जाये।।

सभी प्रजाओं के लिये, प्रयोग में लाया जाये।
पुष्टि कारक धनों का, भंडार बढ़ाया जाये।।

बढ़ायें काया का बल सदा, आत्मिक बल बढ़ जाये।
सब लोगों को लाभ से, युक्त कराया जाये।

करें सदा विस्तार हम, कठिनाई नहीं आये।
जो जैसी इच्छा करे, वैसा ही फल पाये।।

हर प्राणी संसार का, सुख से समय बिताये।
नमन सदा तुझको करे, तुझको शीष झुकाये।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-४१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ब्रह्मचर्य पालन करें, शौर्य पराक्रम पायें।
सब विद्यायें ग्रहण कर, फिर गृहस्थी बन जायें ।।
गृहस्थ के अनुष्ठान से, कभी नहीं घबरायें।
तुल्य रूप बल बुद्धि से, स्वयंवर व्याह रचायें ।।
शरीर आत्म बल सिद्ध कर, फिर सन्तान बनायें।
शुद्ध साधों व्यवहारों से, उनको सदा सजायें ।।
गृहस्थ सब आश्रमों का मूल है, मन में यही बिठायें।
राज्य चलाने के लिये, योद्धा शूर बनायें ।।
सिद्ध करें व्यवहारों को, हर्ष उत्साह बढ़ायें।
बुद्धि और विज्ञान से, सबको सुखी बनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-४२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

गृहस्थी धार्मिक अतिथियों का, करें सदा सत्कार।
अतिथि भी गृहस्थी लोगों से, सदा बढ़ायें प्यार ।।
विद्वानों का संग कर, गृहस्थी करें विचार।
परस्पर वार्तालाप से, सुखी करें परिवार ।।
उन्नति विद्या की करें, सीखें पर उपकार।
निरन्तर चलता रहे, इसी भांति व्यवहार ।।
अतिथि वह कहलाते नहीं, जिनके दुष्ट विचार।
वाणी से भी न करें, कभी उनका सत्कार ।।
विद्वानों के संग से, नैया लगती पार।
टिका इसी आधार पर, यह सारा संसार ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-४३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

गृहस्थों को यह योग्य है, सदा प्रभू गुण गायें ।
आज्ञा का पालन करें, अन्न धन खूब बढ़ायें ।।

गऊओं का पालन करें, हाथी घोड़े सजायें ।
औरों की रक्षा करें, विद्या धर्म बढ़ायें ।।

सिद्धि लोक परलोक की, करें सदा सुख पायें ।
पराक्रम और पुरुषार्थ से, विश्व विजय कर पायें ।।

धनों के संग्रह आदि से, राज्य के कार्य चलायें ।
पग उत्तम व्यवहार से, पीछे नहीं हटायें ।।

ज्ञान से और विज्ञान से, सबको सुखी बनायें ।
रक्षा में तत्पर रहें, आलसी न बन जायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-४४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वैद्य, शूर विद्वान का, करें सदा सत्कार ।
यज्ञों की सिद्धि करें, सुखी करें संसार ।।

अविद्या आदि दुखों पर, पायें हमेशा पार ।
दोषों शत्रुओं का सदा, करते रहें संहार ।।

भोजन आदि से करें, सदा अतिथि सत्कार ।
घर में दे निमन्त्रण उन्हें, सुनें पवित्र विचार ।।

नित्य प्रति ऐसा करें, सुखी रहे परिवार ।
उनके मधुर बखान से, होता है प्रचार ।।

सब गृहस्थी ऐसा करें, शुद्ध रखें आचार ।
इस ही रीति नीति से, बढ़े परस्पर प्यार ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-४५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सभी आश्रमों में उचित है, सम मन वचन बनायें ।
अपने सत्य आचरण की, सब पर धाक बिठायें ।।
विद्वत जन और योगी जन, सबको मार्ग दिखायें ।
शिक्षायें उत्तम मधुर, सबको सदा सुनायें ।।
पाप अधर्म की भावना, सबकी दूर भगायें ।
जिनकी उत्तम भावना, आंखों पर बैठायें ।।
उत्तम शिक्षा प्रचार को, विद्या सभा बनायें ।
दूर-दूर तक शुद्धता, पवित्रता फैलायें ।।
प्रजा के सुखों के लिये, हर साधन अपनायें ।
लक्ष्य सभी का हो यही, सबको गले मिलायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ३-४६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों के सहाये से- योद्धा आगे आयें ।
प्रभू की कर आराधना, युद्धों में जुट जायें ।।
अस्त्रों-शस्त्रों का संग्रह कर, विजयश्री को पायें ।
चक्रवर्ती शासन चला, सबको सुखी बनायें ।।
करें प्रजा पालन सदा, सेवा धर्म निभायें ।
आनन्दित हो सब प्रजा, वह साधन अपनायें ।
उत्तम व्यवस्था करें, घर-घर यज्ञ रचायें ।
ऋतू-ऋतू अनुसार ही, हवियां डाली जायें ।।
वाणी मधुरता युक्त कर, वेद ऋचायें गायें ।
उत्तम-उत्तम गुण सदा, सभी लोग अपनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ३-४७ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

सब लोगों को उचित है, वाणी मधुर बनायें।
छोड़ आलस्य और मूर्खता, वेद विद्या अपनायें।।

करें परस्पर प्यार सब, सभी एक हो जायें।
तब ही चलकर मंजिलें, द्वारे पर आ जायें।।

सब प्राणी संसार के, इस ही में जुट जायें।
तभी लोक परलोक को, आनंदित कर पायें।।

जो ऐसा करते नहीं, अभिष्ट को नहीं पायें।
आलसी को दुख देत हैं, हर पल सभी दिशायें।।

उत्तम कर्म अनुष्ठान से, पूरण सुख को पायें।
मन वाणी और कर्म को, एक दिशा में लायें।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-४८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को उचित है, पाप न कभी कमायें।
धर्म की वृद्धि के लिये, करें सदा प्रार्थनायें।।

सदा वाणी और कर्म को, शुद्ध पवित्र बनायें।
सपने में भी न कभी, बुरा किसी का चाहें।।

भूले से भी न किसी, को हानि पहुंचायें।
इसका फल दुख रूप है, मन में इसे बिठायें।।

करें हमेशा कर्म शुभ, सबका भला कमायें।
जितना सम्भव हो सके, काम औरों के आयें।।

विद्या धर्म अनुष्ठान से, जीवन सफल बनायें।
यहां से जब जाना पड़े, हंसते-हंसते जायें।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-४९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

पदार्थ सुगन्धि युक्त ही, हवन में डाले जायें।
वह ही जा आकाश में, जलों को शुद्ध बनायें।।
जब वह जल के साथ मिल, फिर पृथ्वी पर आयें।
दुनियां को निरोग कर, हृष्ट और पुष्ट बनायें।।
औषधि अमृत रूप में, धरती से उपजायें।
देकर बल और प्राक्रम, योद्धा शूर बनायें।।
वैश्य की भांति इस तरफ, जो भी लगन लगयें।।
जितना डालें सौ गुणा, अधिक वह उससे पायें।।
इस ही अदान प्रदान से, जीवन सफल वनायें।
जियें स्वयं सुख चैन से, सबको सुखी बनायें।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-५० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

लेन-देन का विश्व में, हो सच्चा व्यवहार।
वांछित सुख मिलता तभी, बढ़े परस्पर प्यार।।
किसी का है देना अगर, करें उसे स्वीकार।
इस भान्ति संसार में, बढ़ता है सत्कार।।
लेकर देना धर्म है, लो गर दिया उधार।
इसी अदान प्रदान से, बढ़ता है व्यापार।।
लेन देन में हर घड़ी, हृदय रहे उदार।
शीष झुकायेगा तभी, आदर से संसार।।
बिना कुशल व्यवहार के, मिले न जीवन सार।
भटकना पड़ता है सदा, मिले जन्म कई बार।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-५१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को उचित है, प्रतिदिन ज्ञान बढ़ायें।
नये-नये आविष्कारों से, जग को सुखी बनायें ॥

विद्वानों के संग से, सब संशय मिट जायें।
शास्त्रों के स्वाध्याय से, चलकर खुशियां आयें ॥

बुद्धि द्वारा शोध से, मिलती नई कलायें।
सफल होतीं पुरुषार्थ से, कठिन-कठिन क्रियायें ॥

शूर वीरता आने से, शत्रू भी भय खायें।
यज्ञों के अनुष्ठान से, वांछित फल मिल जायें ॥

आपसी मेल और जोल से, पराक्रम सदा बढ़ायें।
पायें कैसे लक्ष्य को, यह विद्वान बतायें ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-५२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्या धन से युक्त हो, हे मेरे भगवान।
तेरी कलायें देखकर, झुकता सकल जहान ॥

वांछित फल दिलवाते हो, करते हो कल्याण।
पराक्रम से कर युक्त हमें, देते हो धन धान ॥

सूरज के प्रकाश से, कर पायें सब काम।
सिद्धि उत्तम व्यवहारों की, हो जाये आसान ॥

सूर्य के धारण आकर्षण से, टिका है जगत महान।
आप भी विद्या दान से, करें हमें विद्वान ॥

विद्या धन की सिद्धि से, पायें सुख का धाम।
जागते सोते हर समय, करें तेरे गुणगान ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-५३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

मानव जन्म की सफलता, पर दें पूरा ध्यान ।
विद्या आदि गुणों से, करें मन को गुणवान ।।
जैसे ऋतुयें अलग-अलग, रखती हैं पहचान ।
वैसे सब विद्याओं का, करें सदा अनुष्ठान ।।
साक्षात्कार करते ऋषि, करते सभी बखान ।
हम भी पूर्ण पुरुषार्थ से, करें सदा शुभ काम ।।
विकल्पों चिन्ताओं से, करें मन सावधान ।
गुणों का प्रकाशन करें, इस भांति विद्वान ।।
प्रकाश को पायें सदा, होकर अर्न्तध्यान ।
रक्षक बन जायें स्वयं, सृष्टिकर्त्ता भगवान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-५४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जिस चित पर अंकित रहें, अच्छे बुरे विचार ।
वह ही स्मरण शक्ति का, है सबका आधार ।।
ईश्वर प्राण और सूर्य को, समझे सब प्रकार ।
सौ वर्ष और इससे अधिक करता कारोबार ।।
यह शुभ कर्मों में लगे, साधे पर उपकार ।
ईष उपासना से करे, उसका साक्षातकार ।।
उत्तम साधन धर्म के, हैं इसमें दरकार ।
कर्मों के अनुष्ठान से, करे इनका विस्तार ।।
इनका नित सेवन करे, तर जाये भवपार ।
छाड़े न शुभ कर्म को, चाहे जन्म मिले कई बार ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ३-५५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

मात पिता आचार्य हैं, रक्षक बड़े महान ।
इनकी शिक्षा के बिना, सम्भव न कल्याण ।।

मिल नहीं पाये सफलता, हो नहीं पाये ज्ञान ।
अंधेरों में भटकता, रह जाये इन्सान ।।

शुभ कर्मों का हो नहीं पाये अनुष्ठान ।
पूरे जीवन में कर्म को, समझे न नादान ।।

मात पिता को उचित है, दें शिक्षा का दान ।
ज्ञान साधना युक्त हो, बनें सभी विद्वान ।।

सत्य बोलने आदि में, सदा रहें बलवान ।
गुणों से सुसज्जित रहें, पायें सदा सम्मान ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-५६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सृष्टिकर्ता भगवान में, रहें सदा वर्तमान ।
सत्य भाषणों को सुन सदा, करें कर्म अनुष्ठान ।।

काया सुख से युक्त हो, अंतः कर्ण महान ।
पुत्र पवित्र हों राज्य में, भरा रहे धन धान ।।

सोम लताओं आदि का, होवे पूरा ज्ञान ।
सुखी बनायें विश्व को, इसका करें विधान ।।

उन्नत हों शरीर आत्मा, बनें यह सुख के धाम ।
तभी सकल संसार का, कर पायें कल्याण ।।

आलसी न कुछ कर सके, रहे मूर्ख नादान ।
अपने रोगों का कभी, कर नहीं सके निदान ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-५७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वेद विद्या प्रकाश से, पदार्थ पायें विद्वान ।
उत्तम क्रियाओं से करें, पूरे सब अरमान ।।
धर्म की सिद्धि करने से, मिलता है सम्मान ।
सदा वेद उपदेश को, मानें सब वरदान ।।
खेती आदि करने के, यंत्र करें निर्माण ।
योग्य पदार्थ प्राप्त कर, करें हमेशा दान ।।
उत्तम विद्या को सदा, समझें अपने प्राण ।
जो सबके हित की कहे, मानें उसी को ज्ञान ।।
इनका सेवन सब करें, दुनियां के इन्सान ।
सम्भव हो पाये तभी, दुनियां का कल्याण ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-५८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

तीनों कालों में एक रस, रहता है भगवान ।
स्तुति उसकी करने से, होता है कल्याण ।।
जो दुष्टों को दंड दे, दुख का करे निदान ।
सच्चे हृदय से सब करें, उस ही का सम्मान ।।
प्राप्त कराता निवास है, उसकी यह पहचान ।
रिझाने को उसको करें, मन मन्दिर निर्माण ।।
दृढ़ निश्चय करवाये वह, ऐसा है कृपा निधान ।
सोते जागते सब करें, श्रद्धा से प्रणाम ।।
आज्ञा का पालन करें, कर्तव्य अपना जान ।
उसके द्वारे से मिले, सुख का हर सामान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-५९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

बिना प्रभू की भक्ति के, सम्भव न कल्याण ।
जो सबकी सेवा करे, पाये सुख का धाम ।।
शरीर आत्मा और प्रजा, इनको दुर्लभ मान ।
शुद्धि जो इनकी करे, पाये वही सम्मान ।।
होती दुख की निवृति, प्राप्त हो जब सद ज्ञान ।
पशुओं के रोगों का भी, सम्भव तभी निदान ।।
औषधियां सेवन करा, करें स्वास्थ्य प्रदान ।
कोई रोगी न रहे, ऐसा करें विधान ।।
सुखों की सिद्धि करें, बनें सभी बलवान ।
सुखी रहे संसार सब, पायें सुख आराम ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-६० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

छोड़ प्रभू को और किसी, को नहीं शीष झुकायें ।
शरीर आत्मा और समाज का, बल वह हमें दिलायें ।।
खरबूजे पक जिस तरह, छोड़ें स्वयं लतायें ।
स्वादिष्ठ और रस युक्त बन, अति उत्तम कहलायें ।।
हम प्राण और शरीर के, मोह में न फंस जायें ।
मोक्ष अमृत आनन्द के, तब भागी बन पायें ।।
सुगन्धि युक्त जीवन बनें, यह सुगन्ध फैलायें ।
निरन्तर सत्कार से, प्रभू गणों का गायें ।।
सत्य धर्म त्यागें नहीं, सेवा धर्म कमायें ।
रोते-रोते आये थे, हंसते-हंसते जायें ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ३-६१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सेना और विद्वान जन, राष्ट्र को सुखी बनायें ।
लेकर लोहा शत्रू से, विजयश्री को पायें ।।
अस्त्रों-शस्त्रों की सदा, सीखें सभी कलायें ।
श्रेष्टों की रक्षा करें, दुष्ट को सदा रुलायें ।।

राज्य को शत्रू रहित कर, अपना ध्वज लहरायें ।
इसको निष्कंटक बना, सबको सुख पहुंचायें ।।
कवच आदि को पहन कर, रण भूमि को जायें ।
नमन करें आदर सहित, तुमको सभी दिशायें ।।

पीस के रख दो शत्रू को, गर्व करें मातायें ।
शिक्षा जिससें लें सभी, वह इतिहास बनायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-६२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ब्रह्मचारी गृहस्थी सदा, पर उपकार कमायें ।
वान प्रस्थी सन्यासी भी, विद्या हमें दिलायें ।।
शुद्धि बल और पराक्रम, परम पिता से पायें ।
आयु तीन सौ वर्ष की, आनन्द सहित बितायें ।।

शरीर आत्मा और समाज को, उन्नत सदा बनायें ।
जियें गर इससे भी अधिक, सबको सुखी बनायें ।।
यज्ञ आदि में दिव्यता, जीवन में अपनायें ।
प्रभू शरण में हर घड़ी, नत मस्तक हो जायें ।।

मन बुद्धि और चित्त को निर्मल सदा बनायें ।
चार सौ वर्ष प्रर्यन्त भी, भोग सुखों को पायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ३-६३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रभू आज्ञा पालन बिना, लोक सुधर नहीं पाये ।
कोई सुख प्रलोक का, कभी नहीं मिल पाये ।।

मंगलमय भगवान को, कोई नहीं बिसराये ।
उसकी प्राप्ति के लिये, हर पल करें उपाये ।।

अनादर से अनादर मिले, मन में यह बिठलाये ।
आदर से आदर मिले, शास्त्र यही समझाये ।।

आस्तिक बुद्धि ही सदा, कुशल और मंगल लाये ।
प्रार्थना और उपासना, को यही सफल बनाये ।।

अन्न धन विद्या स्वर्ण को, यह ही सदा बढ़ाये ।
इसके आश्रय चक्रवर्ती, शासन तक मिल जाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

तीसरे अध्याय का काव्य पाठ समाप्त

यजुर्वेद ४-१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ब्रह्मचर्य रख विद्या पढ़ें, सबको सदा पढ़ायें।
चारों वेदों उपनिषदों का, सरल अध्ययन करायें।।
बनें पूर्ण विद्वान जब, कर्म अनुष्ठान करायें।
उनकी आज्ञा में चलें, सब प्राणी सुख पायें।।
उन सब का सत्कार कर, हम सब लाभ उठायें।
शरीर आत्मा को सदा, हृष्ट और पुष्ट बनायें।।
धन वैभव और सम्पदा, के अम्बार लगायें।
प्राणी मात्र के वास्ते, सुख आराम जुटायें।।
सोमलता आदि खिला, सबका रोग मिटायें।
संचय कर के सुखों का, दुनियां स्वर्ग बनायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ४–२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जल सुखों का स्रोत है, प्राप्त करें यह ज्ञान।
इस ही से होती सदा, प्राण गति बलवान ।।
पालन करता है सदा, सबका मात समान ।।
शोध करें इसका सदा, हो सबका कल्याण।।
करे काया सुन्दर वर्ण, रोग का करे निदान।
नित्य प्रति प्रयत्न से, करें धर्म अनुष्ठान ।।
घृतवत पुष्टि योग्य है, इसी से हो स्नान।
इसी से वाणी व्यक्त हो, ऐसा किया विधान ।।
पूर्ण पुरुषार्थ के करने से, मिलता सुख का धाम।
इसी साधना से मिले, सुख का हर सामान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ४-३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

पृथ्वी के जल रस का है, सूरज ही आधार ।
दीप्ति का यही स्रोत है, प्रकाशित करे संसार ।।
मेघों को धारण करे, करें नेत्र व्यवहार ।
सिद्धि हो हर काम की, कर पायें उपकार ।।
वर्षा बरसाये यही, भरें जिससे भंडार ।
जो इसकी रचना करे, वह सच्चा करतार ।।
कोटि-कोटि धन्यवाद कर, करें नमन सौ बार ।
जीवों के सारे करे, वह सपने साकार ।।
उस जगदीश्वर का करें बार-बार आभार ।
सिद्धि कर व्यवहारों की, तर जायें भव पार ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ४-४ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

पवित्रता के पालक प्रभू, देते हो विज्ञान ।
उत्पत्ति कर विश्व की, दिया है इसे विधान ।।
वाणी को निर्मल बना, किया हमें प्राणवान ।
गमन आगमन में सदा, सूरज है प्रधान ।।
मुझे व मेरे चित्त को, पवित्रता करो प्रदान ।
जीवन मेरा शुद्ध हो, मधुर हो मेरी ज़बान ।।
मेरी दृष्टि दिव्य हो, पाये सदा सम्मान ।
करूं मैं वर्णन आपका, आप हैं बड़े महान ।।
पवित्र कर्मों का सदा, करूं मैं अनुष्ठान ।
भक्ति आपकी से कभी, हटे न मेरा ध्यान ।।
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ४-५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब लोगों को उचित है, करें सदा सतसंग ।
जीवन भर छोड़ें नहीं, विद्वानों का संग ।।
करें सम्पादन विद्या का, रह जायें सब दंग ।
प्राप्ति हो सद ज्ञान की, संशय हो जायें भंग ।।
सारे उत्तम गुण बनें, इस जीवन का अंग ।
चन्दन विष व्यापे नहीं, लिपटे रहें भुजंग ।।
इच्छायें सब पूर्ण हों, अपनायें वह ढंग ।
दुरितों से करते रहें, हर घड़ी हर पल जंग ।।
सेवा में प्रवृत रहें, कभी न आयें तंग ।
चढ़ जायेगा एक दिन प्रभू भक्ति का रंग ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ४-६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर का आदेश है, किया है ज्ञान प्रकाश ।
वाणी द्वारा दो गुंजा, तुम सारा आकाश ।।
यज्ञों के द्वारा करो, सबका मनो विकास ।
कोई प्राणी न रहे, कहीं भी कभी हताश ।।
वायु की शुद्धि करो, इसमें भरो मिठास ।
दुनियां की उपलब्धियां, आपमें करें निवास ।।
वचन कर्म मन सम करो, रहो न कभी निराश ।
सफलताओं का हो सदा, इन हाथों में वास ।।
सुख सारे संसार के, बन जायेंगे दास ।
हर प्राणी संसार का, रखे सदा विश्वास ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ४-७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को उचित है, करें उत्तम क्रियायें।
धर्म युक्त जीवन बनें, उत्साह सदा दिखायें।।
प्रदीपन अग्नि का करें, सुनायें वेद ऋचायें।
बिजली की सब कलाओं से, सबको युक्त करायें।।
विद्या बुद्धि की उन्नति, के लिये पढ़ें पढ़ायें।
करें वृद्धि विज्ञान की, सत्य वाणी अपनायें।।
धर्म नियम आचरण को, निर्मल सदा बनायें।
जठर अग्नि शोधन करें, निस्दिन स्वास्थ्य बढ़ायें।।
गुण सम्पन्न जल प्राण है, निष्फल नहीं गंवायें।
सब पदार्थों की शुद्धि की, हर क्रिया अपनायें।।
भूमि और अन्तरिक्ष को, यज्ञ से शुद्ध बनायें।
जन-जन को बड़े प्रेम से, आनन्द प्राप्त करायें।।
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ४-८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रभू से मित्रता जोड़ कर, उसके गुण अपनायें।
युद्ध में दुष्टों को दबा, राज्य लक्ष्मी पायें।।
मित्रता आपस में रखें, सदा प्रभू गुण गायें।
सुखी करें संसार को, यह रीति अपनायें।।
सत्य कर्म अनुष्ठान से, खुद को पुष्ट बनायें।
वाणों की विद्याओं को, सीखें और सिखायें।।
प्रकाश करने हारे प्रभू, बनके सखा तब आयें।
उसके द्वार पे श्रद्धा से, जब-जब शीष झुकायें।।
उपासना के द्वारा सभी, शक्ति उसी से पायें।
सरल सुगम होतीं तभी, सारी जटलतायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ४-९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को चाहिये, पढ़ें सभी विद्यायें।
विद्वानों के पास जा, सीखें सभी कलायें।।
कलाओं को साक्षात कर, उत्तम यान बनायें।
कार्यों की सिद्धि करें, सबको सुखी बनायें।।
अन्न आदि से युक्त कर, उनको शीष झुकायें।
आदर और सत्कार से, करें दूर शंकायें।।
इतना दें सम्मान हम, दिल से नहीं भुलायें।
मार्ग दर्शन से हल करें, सारी समस्यायें।।
वेद ज्ञान सत ज्ञान है, भरी सभी विद्यायें।
करें प्रत्यक्ष तप योग से, गायें यही ऋचायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ४-१० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हे विद्वत जन विद्याओं का, करते हो प्रचार।
अग्नि और प्रकाश का, बतलाओ विस्तार।।
पराक्रम और अन्न आदि की, विद्या का प्रसार।
पदार्थ समूह के संवर्ण का, बताओ सारा सार।।
सुख निमित शिल्प विद्या का, हो कैसे आविष्कार।
शल्य क्रिया कैसे सधे, क्या इसका आधार।।
मुझको इन सबके बिना, आता नहीं करार।
कैसे वाहन खेतियां, भरती हैं भण्डार।।
पाप और दुखों से बचा, जाये किस प्रकार।
वृक्ष आरोपण और करूं कैसे यान तैयार।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ४-११ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर को जानें सभी, बुद्धि का वर पायें।
शिल्प विद्या कारक सभी, कारज सिरे चढ़ायें ।।

इष्ट सिद्धि के वास्ते, बोलें वेद ऋचायें।
अति उत्तम यह तीर्थ है, इसमें खूब नहायें ।।

सुख समृद्धि से युक्त हो, विद्या प्रकाश पायें।
सदगुण सम्पन्न बुद्धि की, क्रिया समझें समझायें ।।

शरीर आत्मा प्रज्ञा और, कर्म की सब क्रियायें।
सत्य असत्य का बोध भी, विद्वत जन करवायें ।।

शिक्षा उत्तम कर्म की, हमको सदा दिलायें।
प्रिय कर्मों का आचरण, हम जीवन में लायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ४-१२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

मनुष्यों का कर्तव्य है, जानें जीवन सार।
प्राण और जल करते सदा, किस भांति उपचार ।।

ज्वर आदि से मुक्ति का, हैं यह ही आधार।
क्षय आदि और पाप का, करते हैं संहार ।।

सत्य की यह वृद्धि करें, अमृत रस की धार।
दिव्य गुण सम्पन्न हैं, इसके सब व्यवहार ।।

सदा इनका सेवन करें, सभी भली प्रकार।
इनके अनुष्ठान से, नैय्या लागे पार ।।

लग जायेंगे द्वार पर, सुखों के भण्डार।
रहें सुखी स्वयं सदा, सुखी करें संसार ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ४-१३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हे प्राणी इस काया को, सबकी रक्षक जान।
प्रजा की रक्षा के लिए, नित कर यज्ञ अनुष्ठान ।।
पूर्ण आयु के भोगने, का कर सब सामान।
इस भूमि से प्राप्त कर, दुनियां के धन धान ।।
दुखों से छुटकारा पा, कर शुद्ध जल का पान।
भूमि का विज्ञान जान, कर सबका कल्याण ।।
बना सुरक्षित ऐश्वर्य को, इधर दे पूरा ध्यान।
इसमें क्या-क्या सार है, सारी विद्या जान ।।
पदार्थों के ताल मेल का, कर सदा अनुसंधान।
रोग रहित रह कर सदा, कर ईश्वर गुणगान ।।
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ४-१४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अग्नि का सेवन करें, लें इससे उपकार।
जनहित में लायें इसे, सदा भली प्रकार ।।
कर्मों के अनुष्ठान में, दिखाये चमत्कार।
सोते जागते करती है, जीवन का विस्तार ।।
जीने में यज्ञ अग्नि बन, करे झनन झंकार।
मरने पर करती यही, सबका दाह संस्कार ।।
पड़ता इससे वास्ता, हर इक का कई बार।
जब-जब हम जनमें मरें, करे यही व्यवहार ।।
युक्ति से बरतें इसे, जानें इसका सार।
नये-नये आविष्कार कर, करें सुखी संसार ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ४–१५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विज्ञान साधक मन मिले, करे आयु प्रदान।
काया का आधार जो, देता मुझको प्राण ।।

प्राप्ति अपने ज्ञान की, और उसका विज्ञान।
बनूं मैं द्रष्टा विश्व का, करे नेत्रों का दान ।।

शब्द ग्रहण के वास्ते, जो देता है कान।
हिंसा से करर्ता रहित, करे आत्मा बलवान ।।

जठर अग्नि से चलते हैं, काया के सब काम।
विश्व की जो रक्षा करे, कहें उसे भगवान ।।

छुड़ाये निन्दित पाप से, दिलाये सुख आराम।
दुष्ट कर्म और दुख पर, लगता पूर्ण विराम ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ४-१६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जगदीश्वर देते सदा, ऐश्वर्यों का दान।
धर्म आचरण की प्रेरणा, पाये हर इन्सान ।।

करें उसी की स्तुति, देता है धन धान।
बार-बार पाना हमें, इसका हो आसान ।।

पोषक सुखों का करे, अग्नि प्रकाशमान।
जिससे यज्ञों का करें नित्य प्रति अनुष्ठान ।।

अग्नि के प्रयोग का, दिलाये सारा ज्ञान।
उत्पन्न हम इससे करें, सुख का हर सामान ।।

कार्यों की सिद्धि करें, पायें सुख आराम।
उस दाता का हृदय से, करें सभी सम्मान ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ४-१७ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

हे पराक्रम और वीर्य से, युक्त महां विद्वान ।
यज्ञ का और भगवान का, रखे हमेशा ध्यान ।
वेगवान हो के सदा, पाता है विज्ञान ।
तेजयुक्त सम्पन्न हो, होता हैं प्रकाशमान ।।
धारण किये विज्ञान, से लेता है हर काम ।
करने को पुरुषार्थ फिर, मिलता है सामान ।।
बन ज्ञानी तू कर सके, ईश्वर की पहचान ।
आज्ञा पालन से सदा, रोग का करे निदान ।।
वांछित सुख पाये सदा, पाये हर वरदान ।
यज्ञों के अनुष्ठान से, सुखी हो सकल जहान ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ४-१८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

निमित कारण हो जगत के, आप हैं कृपा निधान ।
वाणी बिजली से किया, सुख का हर सामान ।।
दोनों का प्रकाश कर, दिया विद्या का दान ।
इन ही के सहयोग से, हो सबका कल्याण ।।
शुद्ध और सुख कारक हैं यह, करायें अमृत पान ।
व्यवहारों की शुद्धि से, मिलता है सद ज्ञान ।।
बन्धन संकोचन समझ, करें यंत्र निर्माण ।
विकास चालन को समझ, पायें सुख आराम ।।
पदार्थों का ग्रहण कर, करें विश्व निर्माण ।
सुख शान्ति से सब रहें, ऐसा करें विधान ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ४-१९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सत्य वाणी और बिजली का, दिया हमें अनुदान ।
हम श्रद्धा और प्रेम से, करें तुझे प्रणाम ।।
उत्पन्न इस संसार में, हैं यह अति बलवान ।
सिद्धि हो व्यवहार की, और साधन का ज्ञान ।।
प्राप्ति कर्म और प्रज्ञा की, होती आठों याम ।
विजयश्री इनसे मिले, और मिले विज्ञान ।।
यज्ञों का अनुष्ठान हो, और मिले सम्मान ।
नाश रहित गुण युक्त हैं, ऊँची इनकी शान ।।
पूरब-पश्चिम होत हैं, इनसे दैदीप्यमान ।
करें प्रयुक्त पर हित इन्हें, कृपा करो भगवान ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ४-२० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर आज्ञा में चलें, जैसे कहें विद्वान ।
परम ऐश्वर्य की प्राप्ति, हो जाये आसान ।।
धर्म परायणों को मिले, बिजली बाणी का दान ।
तुझको भी यह प्राप्त हों, ऐसा कर सामान ।।
मात पिता और मित्र से, सीख व्यवहारिक ज्ञान ।
फिर जीवन भर कर सदा, इन्ही का अनुष्ठान ।।
विद्या का प्रकाश कर, कर प्रयुक्त विज्ञान ।
ऐसा कर कुछ कर सके, जीवों का कल्याण ।।
ऐसी करनी कर सदा, मिले सदा सम्मान ।
धर्म युक्त व्यवहार से, सफल यह जीवन जान ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . .

यजुर्वेद ४-२१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अग्नि विद्या को सभी, जानें और जनायें।
ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य से, जीवन सदा तपायें ॥
प्राणों को गति दे यही, यह समझें समझायें।
सूर्यवत प्रकाश में, लाये सब विद्यायें ॥
खुशियों की द्योतक यही, इसका लाभ उठायें।
प्रभू सभी के वास्ते, यह सुविधा दिलवायें ॥
रमण योग्य सबकी यही, व्यवहारों में लायें।
इसके सम्प्रयोग से, सबको सुखी बनायें ॥
वाणी, विद्युत, प्राण की, इसी से सिद्धि पायें।
सेवन करने योग्य है, जान सभी यह जायें ॥

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ४-२२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

दान यजन से विश्व में, शोभित हों विद्वान।
प्रदीप्त करें सत्य विद्या से, धरती और आसमान ॥
सभी के हित के वास्ते, एक सा करें विधान।
मधुर मनोहर वचनों से, करें सबका कल्याण ॥
विद्या आदि धन रहे, सबके पास समान।
पर उपकार में सब लगें, लक्ष इसी को जान ॥
किसी की हानि न करें, यह उनकी पहचान।
सबके हित के वास्ते, करते मधुर बखान ॥
सबकी उन्नति के लिये, दे दें अपने प्राण।
तू भी जीवन में सदा, कर इसका सामान ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ४-२३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को योग्य है, अच्छे कर्म कमायें।
वाणी बिजली के महत्व को, जानें और जनायें॥
इनके उत्तम योग से, आयु सदा बढ़ायें।
अपनी सन्तानें सदा, उत्तम योग्य बनायें॥
सुखी रहें स्वयं सदा, सबको सुखी बनायें।
उत्तम-उत्तम गुणों का, सम्पादन करवायें॥
क्षण भर भी अपना कभी, निष्फल नहीं गंवायें।
अन्याय को न कभी, जीवन में अपनायें॥
शूर वीरता प्राप्त कर, विजयश्री को पायें।
कुटलिता, नीचता, दुष्टता पास फटक नहीं पायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ४-२४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों से पूछ कर, करें यज्ञ अनुष्ठान।
मन्त्रों की और छंदों की, करें खूब पहचान॥
पदार्थ विद्या जान कर, पायें सब वरदान।
चक्रवर्ती साम्राज्य का, मिलकर करें विधान॥
धन आदि से युक्त हो, प्राप्त करें सब ज्ञान।
नित्य प्रति वृद्धि करें, सबका हो कल्याण॥
गायत्री और जगती छन्द, महत्व इनका जान।
तृष्टुप उष्णिक छन्दों से, करें पूरे अरमान॥
इनमें जो उपदेश हैं, प्रमाण इनको मान।
इनकी पूर्ति के लिये, करें न्योछावर प्राण॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ४-२५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

उत्पत्ति कर्त्ता प्रभू, को सब शीष झुकायें।
निराकार व्यापक प्रभू, से सब शक्ति पायें।।
सच्चिदानन्द स्वरूप है, महिमा उसकी गायें।
उसकी कलाओं की सदा, गायें हम गाथायें।।
सभापति और जन समूह, को सत्कार दिलायें।
विद्वानों को उचित है, सबको विधि बतायें।।
राज्य आज्ञा पालन करें, जय-जय कार मनायें।
सुखी रहें परिवार सब, कुल जग सुखी बनायें।।
प्राणों से प्यारा समझ, मस्तक उसे झुकायें।
श्रद्धा भक्ति से सदा, उससे प्रेम बढ़ायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ४-२६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को योग्य है, प्रभू को सदा रिझायें।
वाणी, मन, धन, शरीर से, निस्दिन यज्ञ रचायें।।
उपासना निरन्तर करें, बल और बुद्धि पायें।
अग्नि अनुसंधान से, सबको सुखी बनायें।।
सत्य उपदेशों से सदा, व्यवहार कुशल बनायें।
शिल्प विद्या का बोध कर, औरों को करवायें।।
सूर्य तेज को प्राप्त कर, शूरवीर बन जायें।
अपार धन अर्जित करें, बांट के सब में खायें।।
गौ आदि धन प्राप्त कर, प्रजा को सुखी बनायें।
असंख्य गुणों को धार कर, भव सागर तर जायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ४-२७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज्य पुरुषों को उचित है, रंक सभी से प्यार ।
प्रीति और उपकार का, धर्म युक्त व्यवहार ।।
निवारण शत्रुओं का करें, मिटायें अविद्या अंधकार ।
अन्याय का नाश कर, करें सबका उद्धार ।।
चक्रवर्ती शासन करें, दुष्टों का संहार ।
कामना करने योग्य सुख, पायें भली प्रकार ।।
सब कामों में साथ दें, बाकी सब सरदार ।
पदार्थ उत्तम प्राप्त हों, भरे रहें भंडार ।।
शत्रुओं में साहस न हो, जो कर पायें वार ।
ऐसा करें विधान सब, खत्म हो अत्याचार ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . ..

यजुर्वेद ४-२८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर यह जीवन मेरा, पायें सब वरदान ।
जीते जी मुक्ति मिले, ऐसा करो विधान ।।
उत्तमता धारण करें, जैसे सब विद्वान ।
वैसे ही जीवन मेरा, सदा चढ़े परवान ।।
दुष्टाचरण से मैं बचूं, दो विद्या का दान ।
धर्माचरण द्वारा मेरा, करो सदा कल्याण ।।
अधर्म से पीछा छुड़ा, करूं धर्म अनुष्ठान ।
औरों की सेवा करूं, जब लग घट में प्राण ।।
सुखों का सेवन करूं, सुखी हो हर इन्सान ।
मेरे हाथों में रहे, सत्य प्रेम का बाण ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ४-२९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

आपके अनुग्रह से प्रभू, पुरुषार्थ अपनायें ।
शत्रु सेना दुख के, भोगों से बच जायें ॥
सुख कारक धन को सदा, अधिक से अधिक बढ़ायें ।
हिंसा रहित व्यवहार को, जीवन अंग बनायें ॥
राग द्वेष को त्याग कर, विद्या का धन पायें ।
धर्म मार्ग प्रकाश हित, शरण आपकी आयें ॥
विद्वानों की सेवा का, कारज सदा निभायें ।
निरन्तर करते रहें, शिक्षा उनसे पायें ॥
दया दृष्टियां आपकी, नहीं गिनाई जायें ।
प्रेरक रक्षक मानकर, दिल से नहीं भुलायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ४-३० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

श्रेष्ठ गुण युक्त प्रभू आप हैं, विश्व के रचने हार ।
आच्छादित है आपसे, यह सारा संसार ॥
पृथ्वी आदि अंतरिक्ष में, दिखते करत विहार ।
सूर्य आदि धारण किये, आपने भली प्रकार ॥
ग्रह और उपग्रह घूमते, दिखते कई हज़ार ।
आपकी महिमा का नहीं, सम्भव पाना पार ॥
स्थापन हर इक का किया, निश्चित की रफ्तार ।
अपनी परिधि में चलें, सभी नियम अनुसार ॥
सत्य, स्वभाव और कर्म का, है सारा विस्तार ।
आपकी प्रभूसत्ता प्रभू, है हमको स्वीकार ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ४-३१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अति उत्तम प्रभू ने किया, सूर्य का निर्माण।
जीवों को जीवन दिया, दिलाया सबको प्राण ।।
विस्तृत किया आकाश को, महिमा बड़ी महान।
वेगवान विद्युत बना, करता है कल्याण ।।
चढ़ने को घोड़े दिये, लें इनसे हर काम।
गऊओं द्वारा दूध का, कराया अमृत पान ।।
हृदयों में प्रज्ञा कर्म, का कर दिया विधान।
अग्नि प्रकाश आदित्य और पर्वत किये निर्माण ।।
सोम वल्ली सी औषधि, श्रेष्ठ रसों की खान।
धारण सब कुछ कर रहा, सबमें प्रकाशमान ।।
नत मस्तक उसको करें, करें सदा सम्मान।
अग्नि वायु का सकल, प्राप्त करें विज्ञान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ४-३२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

करते ज्यों विद्वान जन, ईश्वर की पहचान।
हम भी जानें वह सकल, ज्ञान और विज्ञान ।।
देखें उन ही की तरह, सब में प्रकाशमान।
कैसे विद्युत को रचे, रचता कैसे प्राण ।।
देखन को इस जगत को, किये नेत्र प्रदान।
कार्यों की सिद्धि करें, ऐसा किया विधान ।।
ऐसी करणी हम करें, हो सबका कल्याण।
रोटी कपड़ा और मिले, सबको नया मकान ।।
सभी प्रयोजन सिद्ध करें, सुख का करें सामान।
सृष्टि के निर्माता को, दिल से करें प्रणाम ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ४-३३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

पृथ्वी पर जो धर्म का, उठाते हैं सब भार।
ऐसे विद्वानों को सब, करें नमन सौ बार॥
विद्या द्वारा शिल्प क्रिया, का करते विस्तार।
वायु से और सूर्य से, लें उत्तम व्यवहार॥
अन्न की प्राप्ति भी करें, रक्षा हर प्रकार।
यजमानों के ग्रहों में, करें ज्ञान प्रसार॥
अपने गमन आगमन से, बतलायें सुख सार।
सहन शीलता से करें, सबकी नैय्या पार॥
अग्नि जल को युक्त कर, यान करें तैयार।
सभी जियें सुख पूर्वक, स्वर्ग बने संसार॥
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ४-३४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

यानों का निर्माण कर, भ्रमण करें विद्वान।
श्येन पक्षियों की तरह, जायें स्थान-स्थान॥
चोरों डाकुओं से बचें, इसका यही निदान।
कोई दुष्ट न कर सके, कभी कोई नुकसान॥
छली कपटियों से रहें, निरन्तर सावधान।
देश विदेश बुला सकें, आदर से यजमान॥
पृथ्वी के पालक बनें, हो सबका कल्याण।
कोई हानि हो नहीं, ऐसा करें विधान॥
सुखी रहें प्राणी सभी, कर अमृत का पान।
एक जुट होकर सब रहें, दुनियां के इन्सान॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ४-३५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को उचित है, रखें प्रभू का ज्ञान।
सत्य स्वरूप और श्रेष्ठ है, करें उसी का ध्यान॥

दूर स्थित वस्तु दिखें, रहें जो अन्तर्ध्यान।
दिव्य दृष्टि प्रयोग का, प्राप्त हो कुल विज्ञान॥

दिव्य गुणों से युक्त है, पवित्र है वह भगवान।
सदा नमन उसको करें, चराचर आत्मा जान॥

समर्थ में कोई नहीं, परमेश्वर के समान।
गुणों की प्रशंसा करें, पूरे हों अरमान॥

सूर्य लोक सा और नहीं, कोई लोक महान।
ऐसा दृढ़ निश्चय करें, इसी में है कल्याण॥

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ४-३६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

रचना सारे विश्व की, कोई नहीं कर पाये।
बिना प्रभू के सूर्य को, प्रकाश कौन दिलाये॥

गमन आगमन सब ग्रहों का, और न कोई कराये।
यथा स्थान सब ग्रहों को, रखता सदा टिकाये॥

पालन सारे जीवों का, कोई नहीं कर पाये।
धारण करने का नहीं, किसी के पास उपाये॥

ईश्वर की भक्ति करें, सबका रहे सहाये।
कोई विपत्ती आपदा, कभी कहीं नहीं आये॥

सूर्य के प्रकाश को, प्रयोग में लाया जाये।
इस कौशल से विश्व को, सुखी बनाया जाये॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ४-३७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रभू से करते प्यार हैं, सभी श्रेष्ठ विद्वान ।
द्रव्यों के लेन देन से, पाते उच्च स्थान ।।

यज्ञों द्वारा जोड़ते, वह अपत्य धनधान ।
विस्तृत करते घर सदा, पाते हैं सम्मान ।।

सारे दुखों से बचें, रहें पास बलवान ।
शत्रु को दबा कर रखें, खेंचे रखें लगाम ।।

सभी करें उनकी तरह, यज्ञों का अनुष्ठान ।
सोमरसों का पान कर, करें प्रभू गुणगान ।।

सुखी रहें परिवार सब, समझें हर विज्ञान ।
अपने औरों के लिये, जुटायें सुख आराम ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

चौथे अध्याय का काव्य पाठ समाप्त

यजुर्वेद ५-१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

यज्ञ की सिद्धि के लिये, पूरा करें विधान ।
हवि दें अग्नि में सदा, हो सबका कल्याण ।।

वायु शुद्धि के लिये, जुटायें सब सामान ।
विद्वानों से जान लें, यह सारा विज्ञान ।।

सोमों को धारण करें, यज्ञों के यजमान ।
उत्तम हवियों से सदा, मिलता सुख का धाम ।।

समिधायें चन्दन की हों, पुष्ट हों सब इन्सान ।
उत्तम विद्या धन मिले, हों सब समर्थवान ।।

तीनों यज्ञों का करें, सदैव अनुष्ठान ।।
इन्हीं के द्वारा प्राप्त हो, आयु, यश और प्राण ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ५-२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अग्नि अस्त्रों के लिये, करें अग्नि प्रसार ।
इसको जो उत्पन्न करे, हवि है वह आधार ।।

वर्षा सूर्य वायु करें, लें इनका उपकार ।
शास्त्रों का उपदेश भी, करें भली प्रकार ।।

सुख की प्राप्ति के लिये, जीवन है दरकार ।
आनन्द प्राप्ति के लिये, गायत्री उच्चार ।।

सोम आदि रस से भरे, तुष्टुप छन्द भण्डार ।
जगती छन्द से शत्रु की, ताड़ना और संहार ।।

इन यज्ञों द्वारा करें, हर इक का उपकार ।
जियें सभी सुख चैन से, हो फिर जय जयकार ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ५-३ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

विद्वानों को उचित है, करें सदा उपदेश ।
सिद्धि हो विद्याओं की, मिट जायें सकल क्लेश ।।
ज्ञान की और विज्ञान की, चर्चा करें विशेष ।
यज्ञ आदि करने का जो, दें मानें आदेश ।।

सुखी रहें सारे सदा, दुख नहीं करे प्रवेश ।
ऊंचे सदा विचार हों, और हो सादा वेश ।।
विद्या धन बांटें सदा, प्रभू का हैं आदेश ।
मंगलमय जीवन बनें, कसर न छोड़े शेष ।।

वेद प्रभू का ज्ञान है, किया ऋषियों ने पेश ।
इनसे सबका हित करें, कर दें श्री गणेश ।।
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ५-४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को योग्य है, करें प्राप्त सब ज्ञान ।
विद्युत अग्नि विद्या का, जानें सब विज्ञान ।।
वेद शास्त्रों के शब्द अर्थ, और लें सम्बन्ध जान ।
करें प्रत्यक्ष विद्याओं का, तभी मिले सम्मान ।।

प्रमाद रहित प्रकाशात्मा, बन दें विद्या दान ।
उत्तम अन्नों से सदा, करायें यज्ञ अनुष्ठान ।।
कर्तव्यों के पालने, का हो सख्त विधान ।
आनन्द प्राप्ति का इसे, उत्तम साधन जान ।।

कारण विद्युत से बना, सूर्य का रूप महान ।
इनके सम्प्रयोग से, करें विश्व कल्याण ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ५-५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हिंसा से प्रभू दूर हो, सब पर है अधिकार।
प्राप्ति हर सामर्थ्य की, है तुझको करतार ॥
सर्व उत्कृष्ट पराक्रम सदा, है तेरा आधार।
उत्तम काया के लिये, आये तेरे द्वार ॥
जिन विद्वानों पर तेरी, रहती कृपा अपार।
सभी दिशाओं में सदा, मिले उन्हें सत्कार ॥
करने को संगत सदा, उनकी रहूँ तैयार।
वांछित सुख सबको मिले, कुशल रहे व्यवहार ॥
सत्य ज्ञान की प्राप्ति, करूं मैं हर प्रकार।
जब चाहूं दर्शन करूं, खुले हों तेरे द्वार ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ५-६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सत्य धर्म और नियमों के, प्रभू हो पालनहार।
कण-कण में इस जगत के, व्यापक हो करतार ॥
ब्रह्मचर्य व्रत रख सदा, करूं मैं पर-उपकार।
सभी इन्द्रियों पर रहे, सदा मेरा अधिकार ॥
करूं धर्म अनुष्ठान और, इसी का करूं प्रचार।
विद्या पढ़ूं पढ़ाऊं और, करूं सदा विस्तार ॥
हर इक से प्रीति करूं, करूं सबका सत्कार।
पाऊं सबका प्यार और, कुशल करूं व्यवहार ॥
विद्या वृद्धि का मेरा, सपना हो साकार।
बिजली और विज्ञान के, करूं बड़े आविष्कार ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ५-७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

दिव्य गुण सम्पन्न प्रभू, सबमें तेरा निवास ।
मेरी रक्षा में जुटे, है मुझको आभास ।।
विद्युत के सामर्थ्य का, मुझमें किया विकास ।
परमेश्वर्य से युक्त कर, किया दुखों का नाश ।।
उत्तम क्रियाओं की सिद्धि का, हो मुझको विश्वास ।
करूं प्राप्त सब धन समूह, रहूं न कभी निराश ।।
पदार्थ विद्या जानकर, करूं इनका अभ्यास ।
ज्ञान से और विज्ञान से, इन्हें बनाऊं दास ।।
विद्वानों के संग से, पाऊं सदा मिठास ।
आदर और सत्कार से, बुलाऊं उनको पास ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ५-८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

कण-कण में है हो रहा, विद्युत का विस्तार ।
इसी के माध्यम से टिका, है सारा संसार ।।
इसके गुण और कार्य को, जानें भली प्रकार ।
इसी के सम्प्रयोग से, करें सदा उपकार ।।
पृथ्वी और आकाश में, करती है झंकार ।
सब दुखों का नाश कर, कराये जय जयकार ।।
अन्नों को उपजाये यह, भरे सदा भंडार ।
जीवों के कल्याण का है, यह ही आध.र ।।
ग्रह उपग्रह सब चल रहे, अपनी-अपनी रफ्तार ।
इसके रचयिता का करें, धन्यवाद सौ बार ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ५-९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हर पदार्थ में हो रहा, विद्युत का प्रसार।
हे विद्वान इस ज्ञान को, जान भली प्रकार ।।

जठर अग्नि का है तेरी, काया में विस्तार।
यज्ञों द्वारा करत है, सुगन्धि युक्त संसार ।।

भौतिक अग्नि है सभी, कलाओं का आधार।
इसके द्वारा ही मिले, सुखों का भंडार ।।

तेज ओज मिलते सभी, सबको सब प्रकार।
सबका यह कर्तव्य है, इससे लें उपकार ।।

तीन रूप से कर रहा, जीवों का उद्धार।
सूर्य, अग्नि और बिजली का, है यह सब व्यवहार ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ५-१० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हे विद्वानों तुम करो, जग में यह प्रचार।
सहनशीलता गुण बड़ा, इसे लो दिल में धार ।।

दिव्य गुणों का सब जगह, करो सदा प्रसार।
सबके हों आचरण शुद्ध, पवित्र रहें विचार ।।

अविद्या का नाश हो, नाश का यह आधार।
इसी के द्वारा हो रहे, जग में अत्याचार ।।

सुसंस्कृत शिक्षा का हो, घर-घर में विस्तार ।।
सत्य भाषणों की सदा, होवे जय-जय कार।

मधुर वाणी से ही करें, दुष्टों का उद्धार।
सच्चाई को फिर करे, सकल विश्व स्वीकार ।।

बोलिये वेद धर्म की ....

यजुर्वेद ५-११ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हे विद्वानों वेद का, करो प्राप्त सब ज्ञान ।
अन्दर बाहर की तुम्हें, हो पूरी पहचान ।।
गर्म और शीतल जल का है, अति उत्तम विज्ञान ।
इसका कारण यज्ञ है, रखना इसका ध्यान ।।

ब्रह्मचर्य से तेज युक्त, वाणी रक्षक मान ।
पूर्व देश रक्षित रहे, ऐसा करो विधान ।।
प्राण और उत्तम ब्रह्मचर्य, में है उत्तम ज्ञान ।
पश्चिम की रक्षा सदा, चढ़े इनसे परवान ।।

मन वाणी आदित्यों को, सदा सहायक मान ।
उत्तर दक्षिण देश की, रक्षा करें बलवान ।।
विद्युत है ब्रह्मचर्य में, सिद्धि इसी में जान ।
ब्रह्मचर्य ही सिद्ध करे, सुख का हर सामान ।।

बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ५-१२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

मधुर वाणी अनमोल है, करे क्रूरता दूर ।
नाशक दोशों की यही, ज्योति से भरपूर ।।
वेद पठन-पाठन करे, इसका यह दस्तूर ।
राज्य करे और दुष्टों को, कर दे चकनाचूर ।।

पुष्ट यह विद्या धन करे, अविद्या ना मंजूर ।
प्रजा जनों को यह करे, बली योद्धा और शूर ।।
विद्वानों को पूजती, करती दूर फतूर ।
दिव्य गुणों दिव्य भोगों से, आये मुखों पर नूर ।।

आनन्दित सबको करे, पायें सभी सरूर ।
सबकी है सुख दायिनी, करती नहीं गरूर ।।

बोलिए वेद धर्म की जय...

यजुर्वेद ५-१३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

यज्ञ बढ़ाये भूमि को, इसका करो उपाये ।
विद्वानों कोशिश करो, समझ में सबकी आये ।।
शास्त्रों निश्चल सुखों को, यह उपलब्ध कराये ।
आकाशस्त हर वस्तु को, सदैव पुष्ट बनाये ।।
नाश रहित कारण रहे, यह परिवर्तन लाये ।
विद्याओं को प्रकाश में, सदा यही ले आये ।।
बिजली अग्नि का सदा, बनता यही सहाये ।
पशु खाद्यों की पूर्ति, यह ही सदा कराये ।।
केवल यही उपाये है, सबको सुखी बनाये ।
हर मानव का फर्ज है, इसको करे कराये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ५-१४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

उत्पादक इस जगत का, सब में प्रकाशमान ।
स्तुत्य सबका है वही, कहें उसे भगवान ।।
सत्य वाणी को जानकर, दिल में दें स्थान ।
बुद्धियों को कर स्थिर सदा, करें कर्म अनुष्ठान ।।
विद्वानों का संग कर, प्राप्त करें सब ज्ञान ।
सुखी बसे संसार सब, ऐसा करें विधान ।।
ज्ञान सहित कर्म हे प्रभू, प्राप्त करें वरदान ।
विद्वानों की भांति हम, करें अदान प्रदान ।।
सबसे बड़ा है विश्व में, अनंत उसकी शान ।
हो प्राप्ति आनन्द की, करें उसे प्रणाम ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ५-१५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

व्यापक ईश्वर ने रचा, है सारा संसार।
प्रकाशित, प्रकाश रहित, अदृश्य तीन प्रकार॥
प्रकाश युक्त सूरज बना, पृथ्वी पर अन्धकार।
अदृश्य हैं प्रमाणु सभी, इनका किया प्रसार॥
प्रमाणु टिका अन्तरिक्ष में, धरती भरे भण्डार।
सूर्य लोक का इक पृथक, अपना है आकार॥
सारे जीवों का बना, प्राणों का आधार।
इस भांति से है हुआ, सृष्टि का विस्तार॥
सब मनुष्यों को उचित है, जानें यह व्यवहार।
सुखी रहें स्वयं सदा, सुखी हों सब परिवार॥
बोलिए वेद धर्म की जय...

यजुर्वेद ५-१६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

उत्तम अन्न युक्त भूमि का, सूरज है आधार।
सूरज को धारण स्वयं, करता है करतार॥
प्रकाश, आकर्षण विभाग के, खोल रखें हैं द्वार।
नियन्त्रण सब पर कर रहा, हर पल सर्वाधार॥
सकल विश्व में प्राण का, हो रहा है विस्तार।
इसी के द्वारा चल रहा, है सारा संसार॥
स्थापन सारे ग्रहों का, किया भली प्रकार।
आपस में टकरायें न, बांधी यों रफ्तार॥
मानवों पशुओं का किया, अलग-अलग व्यवहार।
सभी मानवों को दिया, है वेदों का सार॥
बोलिये वेद धर्म की जय...

यजुर्वेद ५-१७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों से श्रवण कर, ज्ञान को सदा बढ़ायें।
प्राण अपान उदान को, हम बलवान बनायें॥
शब्द ज्ञान को प्राप्त कर, इसका लाभ उठायें।
सकल ज्ञान विज्ञान को, शिल्प कला में लायें॥
हर इक कार्य यज्ञ है, यह समझें समझायें।
अपने जीवन में कभी, कुटलता को नहीं लायें॥
गृहस्थ दिव्य गुण सम्पन्न हों, इसको सदा निभायें।
अपनी आयु को कभी, निष्फल नहीं गंवायें॥
सुख पूरण संसार में, रमण करें करवायें।
इसके रचता को कभी, दिल से नहीं भुलायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ५-१८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वेद में सृष्टि रचना का, करता प्रभू बखान।
सृष्टि तीन प्रकार की, अन्तर इनका जान॥
पृथ्वी, सूर्य, त्रसरेणू का, करता है निर्माण।
उपास्य देव संसार का, केवल उसको मान॥
अन्तरिक्ष में रमण का, सबका किया विधान।
जो समझे समझाये यह, वह असली विद्वान॥
सबका आश्रय है वही, सबमें प्रकाशमान।
कृपा दृष्टियों का सदा, मानें हम अहसान॥
धारण सबको कर रखा, है प्रभू शक्तिमान।
उपासना उस ही की करें, करें उसे प्रणाम॥
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ५-१९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

बिजली रूप अग्नि हमें, हर पल सुख पहुंचाये।
कण-कण में व्यापक प्रभू, इसका करो उपाये॥
हर पदार्थ इस भूमि का, मुझको पुष्ट बनाये।
सूर्य, भूमि और अन्तरिक्ष, जीवन को महकाये॥
वायु दे आरोग्यता, जल अमृत बरसाये।
वनस्पति बनकर औषधि, स्वास्थ्य सदा बढ़ाये॥
प्रभू अजब लीला तेरी, चहों ओर नजर आये।
तेरी कलायें देख कर, मेरा सिर झुक जाये॥
योग, यज्ञ, विज्ञान ही, तेरा बोध कराये।
तेरे पूजन को कोई, कभी नहीं बिसराये॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ५-२० (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

वन का राजा शेर है, अपनी धाक जमाये।
शासन सारे विश्व का, ईश्वर सदा चलाये॥
पराक्रम ही संसार में, सफलता प्राप्त कराये।
पराक्रम ही संसार का, सदैव शीष झुकाये॥
पराक्रम युक्त के सामने, अपराधी भय खाये।
निन्दित प्राणी भी सदा, सुधर पराक्रम से जाये॥
पराक्रम से ही पापी को, खोज निकाला ज.ये।
पराक्रम से ही दुष्ट को, दण्ड दिलाया जाये॥
पराक्रम ही है जिन्दगी, शिथिलता मौत कहाये।
यह अकाट्य सिद्धांत है, नहीं भुलाया जाये॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ५-२१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

इस सारे संसार में, करता प्रभू प्रकाश।
साधन है यह यज्ञ का, रखें सदा विश्वास ॥

जड़ चेतन हर वस्तु में, करता वही निवास।
इष्ट उसी को मान कर, करें योग अभ्यास ॥

उत्पत्ति करता वही, करता वही विकास।
हर पत्ते हर फूल से, होता है आभास ॥

आश्रय लें उसका सदा, रहें न कभी निराश।
करें हृदय से याद जो, रहे उन्हीं के पास ॥

सिद्धि हो हर काम की, झुकें धरती आकाश।
सबका यह कर्तव्य है, बनें उसी के दास ॥

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ५-२२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

दुनियां के लोगों सुनो, देकर पूरा ध्यान।
यज्ञों को धारण करो, करो फिर अनुष्ठान ॥

दुष्ट को ऐसा दण्ड दो, मिटा दो नाम निशान।
उठा सके न सिर कोई, बनो इतने बलवान ॥

ईश्वर प्राप्ति के लिये, छोड़ो सुख आराम।
त्याग साधना तप सदा, करते रोग निदान ॥

सरल मधुर वाणी बने, करे यह मधुर बखान।
हर व्यक्ति को प्राप्त हो, सदा सुखों की खान ॥

परीक्षा कर हर वस्तु की, तभी करें सौपान।
इस भांति सबको मिलें, मन वांछित वरदान ॥

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ५-२३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हे विद्वानों प्राप्ति, बल की करो कराओ।
दण्ड राक्षसों को सदा, यथा कर्म दिलवाओ॥
वेद वाणी अनुष्ठान से, हमेशा यज्ञ रचाओ।
इससे होती प्राप्ति, बल की लाभ उठाओ॥

इस धरती के गर्भ की, खोज-बीन करवाओ।
खेती आदि यज्ञ का, सम्पादन करवाओ॥
पढ़ने और पढ़ाने का, कर्म उन्नत करवाओ।
आत्म बल हेतु सदा, यज्ञ कला अपनाओ॥

अपने शत्रुओं को सदा, मित्र श्रेणी में लाओ।
बेगाना कोई नहीं, सबको गले मिलाओ॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ५-२४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्या के प्रकाश से, शत्रु भी घबराये।
यज्ञों के अनुष्ठान से, अभिमानी भय खाये॥
धार्मिकता हर व्यक्ति को, निर्भय सदा बनाये।
राक्षस दुष्ट भी सामना, कभी नहीं कर पाये॥

तेज है वह जादू बड़ा, मित्र जो सदा बढ़ाये।
चोर, व्याघ्र, डाकू कोई, हानि कर नहीं पाये॥
विद्वान ज्ञान प्रकाश से, सबको सुखी बनाये।
बुद्धिमत्ता से निवृत्ति, शत्रुता की कर पाये॥

प्रजा जनों को चैन का, सुअवसर मिल जाये।
केवल इक प्रकाश ही, इतना कुछ कर पाये॥
बोलिये वेद धर्म की जय...

यजुर्वेद ५-२५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

शत्रू दल को अस्त व्यस्त, कर दुख दर्द मिटायें।
याजक लोगों में सदा, अपना मान बढ़ायें ॥
सेना को व्यूह चक्रों से, अवगत सदा करायें।
प्रजा की रक्षा के लिये, हर साधन अपनायें ॥
सुख से आच्छादित करें, वांछित फल दिलवायें।
हर ज्ञान और विज्ञान का, सदैव लाभ उठायें ॥
कर उपासना ईष की, सहायता उससे पायें।
भक्ति रस की लहर को, हर घर नगर पहुंचायें ॥
यज्ञों का हर एक से, अनुष्ठान करायें।
प्रभू चरणों में सबके सब, मिलकर शीष झुकायें ॥

बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ५-२६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जगत विधाता ने रचा, है सारा संसार।
वह ही सबको दे रहा, आनन्द का भंडार ॥
प्राण अपान बल वीर्य का, उसने किया संचार।
प्रताप युक्त भुज दण्ड से, करें लोक उपकार ॥
शिष्टों की रक्षा करें, दुष्टों का संहार।
पदार्थ विद्या का करें, जन-जन में प्रचार ॥
छोड़ें ईर्ष्या द्वेष को, शत्रुओं से रहें दूर।
आकाशस्थ पदार्थों का, शोधन करें जरूर ॥
पुष्टि कारक हों सभी, पृथ्वी के फल फूल।
ज्ञानियों में रह पवित्र हों, करें न कोई भूल ॥

बोलिए वेद धर्म की जय...

यजुर्वेद ५-२७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वायु जैसे धर्म का, कभी न करती त्याग।
प्राण अपान जुटा रहे, जीने का सौभाग्य॥

हे विद्वानों विद्या से, करो उत्पन्न अनुराग।
आलस्य आदि निद्रा से, हम सब जायें जाग॥

बढ़ायें सीमायें राज्य की, वेद का करें प्रचार।
प्रजा को बुद्धि युक्त कर, सबका करें सुधार॥

ब्रह्म विद्या जानें सभी, करें सदा विस्तार।
धन समूह पुष्टि करे, सबकी सब प्रकार॥

तर्क संगत हर बात हो, करें नहीं तकरार।
सत्य का लें आधार सब, सुखी बसे संसार॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ५-२८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

देवियां स्वयं यज्ञ का, करती हैं अनुष्ठान।
रक्षा हेतू देत हैं, राष्ट्र को सन्तान॥

जुटायें सुख साधन सभी, पाती हैं सम्मान।
पतियों को भी दृढ़ करें, ऐसा करें विधान॥

सुगन्धि युक्त आकाश हो, धरती बने महान।
घृत आदि से यह करें, सदा अग्नि आधान॥

अत्यन्त ऐश्वर्य की प्राप्ति, होती है आसान।
सबके सुखों के लिये, करें सदा अनुदान॥

सबके सुख में सुख मिले, शास्त्र करें बखान।
सबके सुख आराम का, साधक है यजमान॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ५-२९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

स्तुति करने योग्य हैं, राजा और विद्वान ।
हृदय से हम सब करें, दोनों का सम्मान ।।

राष्ट्र की रक्षा के लिये, दोनों हैं वरदान ।
हम भी वैसे ही बनें, योद्धा और बलवान ।।

हार्दिक इच्छा हो यही, राज्य बने महान ।
सारी की सारी बनें, जनता निष्ठावान ।।

हृदयों में सत्कार हो, सबकी मधुर जबान ।
वृद्धों की भांति बनें, सारे आचारवान ।।

श्रद्धा भक्ति निस्दिन बढ़े, सभी बनें विद्वान ।
अमर हो नाम इतिहास में, पायें जग में मान ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ५-३० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सकल पदार्थ करत हैं, अन्तरिक्ष में वास ।
हृदय में राज्य अध्यक्ष के, करती प्रजा निवास ।।

परम ऐश्वर्यों का करें, मिल कर सभी विकास ।
राज्य ऐसा निश्चल रहे, रहे न कोई हताश ।।

कुशलता रहे व्यवहार में, वाणी में रहे मिठास ।
आपस में सबका रहे, श्रद्धा और विश्वास ।।

इन्द्रियां और मन रहें, बनकर सबके दास ।
यहां नमन करते रहें, धरती और आकाश ।।

सबका दाता है प्रभू, करे न कभी निराश ।
खुशियां सारे विश्व की, यहीं पे करें निवास ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ५-३१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ऐश्वर्य युक्त व्यापक प्रभू, आप हैं बड़े महान ।
हम सदैव आदर करें, देते हो सद ज्ञान ।।
राजा अपने राज्य में, पाता है सम्मान ।
अग्नि पहुंचाये पदार्थों को, आकाश में यथा स्थान ।।
शुद्ध पदार्थों से हवन, करें रोज विद्वान ।
सब जीवों को ज़िन्दगी, देते सदैव प्राण ।।
पवन सब में विराजमान है, है यह गूढ़ विज्ञान ।
जो बतलायें खोलकर, हैं वह ही विद्वान ।।
इन सबका आदर करें, पायें सुख का धाम ।
विद्वानों को प्यार दें, ईश्वर को प्रणाम ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ५-३२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

कांतिमान, क्रांति प्रज्ञ हो, करते हो विस्तार ।
सेवा युक्त, प्रशंसनिय, शुद्ध, सबके शोधन हार ।।
कल्याणकारी सब जीवों के, प्रकाशित हर प्रकार ।
अति सूक्षम और पवित्र हो, जग के सृजनहार ।।
रहते हो इक रस सदा, मिटाते अत्याचार ।
शुद्ध और पवित्र हृदयों को, करते हो स्वीकार ।।
दुख सुख दिलवाते सदा, सबको कर्म अनुसार ।
अन्तरिक्ष में प्रकाश कर, करते दूर अंधकार ।।
सत्यधाम से युक्त हो, नमन तुम्हें सौ बार ।
शक्ति भक्ति से आपकी, तर जायें भव पार ।।
बोलिये वेद धर्म की . . . .

यजुर्वेद ५-३३ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

जगदीश्वर सब में बसा, गमन आगमन कराये ।
एक चरण में विश्व है, कण–कण रहा समाये ।।
अजन्मा वाणी रूप है, परम ऐश्वर्य जुटाये ।
सत्य स्वरूप सुख रूप है, सबके कष्ट मिटाये ।।
है असली विद्वान जो, यही मार्ग अपनाये ।
धर्म आचरण पालन करे, सबको सुखी बनाये ।।
धर्म शील मैं भी बनूँ, प्रभू हों मेरे सहाये ।
रहे न डगमग डोलती, नय्या पार लगाये ।।
विद्वानों के संग से, बुद्धि में बल आये ।
लक्ष मेरा चल कर स्वयं, पास मेरे आ जाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ५-३४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हे विद्वानों मुझको भी, अपना मित्र बनाओ ।
साधनयुक्त कर शत्रु पर, मेरी विजय कराओ ।।
विद्या के उपदेश से, शक्ति मेरी बढ़ाओ ।
विद्युत अग्नि को कला, हर इक मुझे सिखाओ ।।
ज्ञानी जैसे विश्व में, सबको सुखी बनाये ।
वैसे ही सुख से मेरा, सारा घर भर जाये ।।
मेरा पालन कीजिये, अपना मुझे बनाये ।
आदर और सत्कार से, मेरा सिर झुक जाये ।।
हर विद्यार्थी विद्या पढ़, पढ़ाने में लग जाये ।
अपनी सेवा से सदा, सबको सुखी बनाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ५-३५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ऐश्वर्य के दाता प्रभू, करते सदा प्रकाश ।
विद्वानों में ज्ञान का, करते सदा विकास ॥

सम्पादन कर शरीरों का, दुष्ट भावों का नाश ।
द्वेष करें जो औरों से, रखते उन्हें हताश ॥

घरों में सब सुख से रहें, रहें न कभी निराश ।
सदैव वाणी में रहे, मधुरता और मिठास ॥

जानें सब विज्ञान को, और करें अभ्यास ।
आयें सबकी पहुंच में, धरती और आकाश ॥

ज्ञान रहित सेवन करें, रहें न इनके दास ।
वेद वाणी अनमोल धन, रहे सभी के पास ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ५-३६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्यान्वित जगदीश्वर, सब सुखों की खान ।
दिखलाते सन्मार्ग हो, आनन्दों के धाम ॥

उत्तम कर्म विज्ञान को, पाते ज्यों विद्वान ।
उत्तम मार्ग अपनाये के, होते हैं प्रजावान ॥

हमसे कुटलता दो छुड़ा, दो वह ही वरदान ।
दुख फल रूपी पाप से, बचें करो सामान ॥

नमन सदा करते रहें, जपें आप का नाम ।
आज्ञा में चलते रहें, सब प्रातः से शाम ॥

देते हो सबको सदा, सारे सुख आराम ।
श्रद्धा और सत्कार से, करें सभी प्रणाम ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ५-३७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रभू आश्रय ले सेनापति, जूझ शत्रु से जाये ।
निन्दित दुष्टों पर सदा, विजयश्री को पाये ।।

ऐसी व्यूह रचना करे, घेरे में ले आये ।
सिंह गर्जना से सदा, शत्रु दल घबराये ।।

जोश भरे सब वीरों में, अपनी भुजा उठाये ।
विजय प्राप्त कर शत्रु पर, ध्वज अपना लहराये ।

मनोबल सेना का बढ़े, वह जय घोष लगाये ।
खुशी-खुशी से हर युवक, आगे कदम बढ़ाये ।

शत्रु की सब योजना, छिन्न भिन्न हो जाये ।
सेना प्रसन्न मुद्रा में, जीत के घर को आये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ५-३८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर कारण जगत को, कार्य रूप में लाये ।
सकल विश्व को व्याप कर कण-कण रहा समाये ।।

वीर पुरुष हम में सभी, विद्या आदि गुण लाये ।
निवास योग्य ग्रह और सकल, विज्ञान प्राप्त कराये ।।

जैसे अग्नि घृत को पा, अधिक प्रकाश फैलाये ।
हमें भी वह शक्ति मिले, काया पुष्ट बनाये ।।

ऋत्विज् विद्वान् यजमान को, यज्ञ अनुष्ठान कराये ।
यज्ञ क्रिया को जानकर, लाभ उठाया जाये ।।

यज्ञ क्रिया हम में सदा, दृढ़ विश्वास जमाये ।
इसके द्वारा नौका को, पार लगाया जाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ५-३९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ऐश्वर्यवान विद्वान ज्यों, धन की करें सम्भाल ।
ऐसे ही सब जन करें, रहें न कभी निढाल ।।
शत्रु को इसमें दखल, देना दिखे मुहाल ।
सफल न इसमें हो सके, कोई भी उसकी चाल ।।
धार्मिक मनुष्यों के संग से, कायम करें मिसाल ।
सज्जनों को प्रसन्न रखें, दुष्टों को बेहाल ।।
धर्म के अनुष्ठान से, दूर हों सभी जंजाल ।
उन्नति हो विज्ञान की, टूटे भ्रम का जाल ।।
दुख बन्धन से मुक्त हों, प्रसन्न रहें हर हाल ।
विचिलित होने का कभी, आये नहीं ख्याल ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ५-४० (भावार्थ)'काव्य पाठ'

जैसे विद्या का अध्ययन, कराते थे विद्वान ।
हम सब वैसा ही करें, कर्तव्य इसको जान ।।
सुख-दुख हानि-लाभ की, करवायें पहचान ।
करें व्यवहार हर एक से, अपना सबको मान ।।
आत्मीयता में निहित, रहता है सम्मान ।
इस ही के अपनाने से, होता है कल्याण ।।
श्रेष्ठ कर्म सारे करें, इधर दें पूरा ध्यान ।
अपने आत्मा तुल्य ही, समझें सकल जहान ।।
बिना इसके नहीं मिल सके, कभी सुख और आराम ।
सुखों का भंडार है, ब्रह्मचर्य में जान ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ५-४१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे सब में व्याप कर, पवन सुख पहुंचाये ।
विद्वान अपनी विद्या से, सबको गुणी बनाये ।।
विज्ञानों की उन्नति, सदैव वही कराये ।
विद्या से परिपूर्ण कर, सबको सुखी बनाये ।।
बिजली जल की निमित्त है, अपनी कला दिखाये ।
सभी पदार्थ सुखमय बना, काम सभी के आये ।।
पिपासा जल से दूर हो, सन्तुष्टि हो जाये ।
सन्तुष्टि से यज्ञपति, पार दुखों से पाये ।।
सुख देना ही धर्म है, अधर्म पाप कहाये ।
सबके मन मस्तिष्क में, इसे बिठाया जाये ।।
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ५-४२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वनस्पतियों के ज्ञान का, ज्ञाता हो विद्वान ।
मूर्खता का हर घड़ी, करता रहे निदान ।।
सब उत्तम विद्याओं की, करवाये पहचान ।
उत्तमों का ही संग करे, दे सबको आराम ।।
शिक्षाओं का लाभ उठा, करता सदा बखान ।
औषधियों का यज्ञों में, कराये अनुष्ठान ।।
सब रोगों को दूर कर, करता है कल्याण ।
बन जाता सबका प्रिय, दिखाये अमृत धाम ।।
किसी से नफरत न करें, हर इक का सम्मान ।
इस जीवन की सफलता, लें इस ही में मान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ५-४३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सूर्य के प्रकाश का, लाभ उठाया जाये।
जो पदार्थ हैं विश्व में, नहीं बिगाड़ा जाये॥
सृष्टि नियमों पर सदा, ध्यान जमाया जाये।
पूरी शक्ति से शत्रु को, सदा दबाया जाये॥

ऐश्वर्य हर एक को, प्राप्त कराया जाये।
अति शिष्ट सौभाग्य का, मार्ग अपनाया जाये॥
लाभदायक हैं वन सभी, नहीं कटाया जाए।
अंकुरित वृक्षों के सदा, फलों को खाया जाये॥

स्वतन्त्रता हो हर काम में, नियम बनाया जाये।
कोई किसी के काम में रोड़ा न अटकाये॥
बोलिये वेद धर्म की ....

पांचवें अध्याय का काव्य पाठ

समाप्त

यजुर्वेद ६-१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे उत्तम वीर्य से, बल पाकर विद्वान ।
पुष्टि का जो निमित्त है, धारण करते प्राण ।।
आकर्षण उत्पन्न करें, दुष्टों का करें निदान ।
द्वेष किसी से जो करे, करते दंड विधान ।
राज्याध्यक्ष व्यवस्था करे, सबके लिये समान ।
कोई शत्रु न रहे, करे सत्य अनुष्ठान ।।
अन्दर बाहर का सदा, रखें निरन्तर ध्यान ।
स्वराज्य के विस्तार का, करें सदा सामान ।।
प्रजा की रक्षा हो सदा, पाये सुख आराम ।
हृदय से आदर सब करें, माता पिता समान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ६-२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे शिक्षक और पिता, बच्चे सुघड़ बनायें ।
राज्याध्यक्ष उनको सदा, मार्ग प्रशस्त करायें ।।
करें निरन्तर उन्नति, वह प्रबन्ध करायें ।
घर-घर में खुशियां सदा, स्वयं चलकर आयें ।।
आधि व्याधि न रहें, सभी लोग सुख पायें ।
विद्या के प्रकाश की, व्यवस्था करवायें ।।
यश की प्राप्ति हो सदा, ऐसे नियम बनायें ।
सीमायें राज्य व भूमि की, सदा बढ़ाते जायें ।।
दृढ़ता आये राज्य में, शत्रु न शीष उठायें ।
धर्म का पालन कर सदा, सब को न्याय दिलायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ६-३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज्याध्यक्ष ऐसा करें, साधन और सामान ।
प्रजा जनों को मिल सके, भली भांति आराम ॥

ऐसे घर निर्माण हों, रहें जो प्रकाशमान ।
शोधन बोधन कर सकें, बड़े-बड़े विद्वान ॥

चर्चा के विषय हों वहां, वेद, धर्म, विज्ञान ।
धन की पुष्टि हो सके, भरे रहें धन धान ॥

धनुर्वेदवेता सभी, पायें राज्य में मान ।
ब्रह्मचर्य से राज्य-धर्म, की कर लें पहचान ॥

राज्य की सीमायें बढ़ें, ऐसा करें विधान ।
निर्मल हों जीवन सदा, उत्तम हों सन्तान ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ६-४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सभासद सारे राज्य के, सद् गुण ही अपनायें ।
सत्यभाषणों की विद्या, राज्य में सदा चलायें ॥

नियमों की और ज्ञान की, होती रहें चर्चायें ।
दृढ़ता शासन में रहे, ऐसे गुण अपनायें ॥

कुशलता हो व्यवहार में, कुटलता दूर भगायें ।
निराशा के बादल कभी, जनता पर नहीं छायें ॥

सत्य में धर्माचार में, सारे रुचि दिखायें ।
राज्य कर्मचारी सभी, सब को न्याय दिलायें ॥

प्रीति ईश्वर से करें, राज्य को सदा बढ़ायें ।
समर्थ ऐसा करने की, इक जुट हो कर पायें ॥

बोलिए वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ६-५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

पाप मुक्त विद्वान ज्यों, देख प्रभु को पायें।
विद्या के प्रकाश से, उसके गुण अपनायें॥
उस की प्रेरणा से सदा, धर्म आचरण अपनायें।
हम उन के अति प्रेम से, अनुयाई बन जायें॥

वेद वेता विद्वान ज्यों, निकट प्रभु के जायें।
अति उत्तम पद प्राप्त कर, मस्ती में खो जायें॥
जैसे नेत्रों से सदा, दीखें सभी दिशायें।
सृष्टि कर्त्ता भगवान के, हम दृष्टा बन जायें॥

छुट जायें हर पाप से, विषयों से बच जायें।
सत्य कर्म युक्त हो सदा, जीवित मुक्ति पायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ६-६ (भावार्थ)'काव्य पाठ'

राजा प्रजा के मध्य में, रहे कुशल व्यवहार।
प्रजा नियम पालन करे, राजा करे सुधार॥
प्रजा चुकाये कर सभी, करे न भ्रष्टाचार।
राजा इसके वास्ते, जान भी करे निसार॥

दुष्ट जनों को दंड दे, शत्रु का संघार।
कोई कभी भी कर नहीं, पाये अत्याचार॥
चोर उठाई गीर और, गांठ कटे को मार।
लाये सुख और शान्ति, राज्य में हर प्रकार॥

सन्तुष्टि सबको मिले, सुखी बसें परिवार।
करें मिल के जय घोष सब, धन्य-धन्य सरकार॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ६-७ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

दिव्य गुणों से युक्त ही, राज्याध्यक्ष कहाये ।
दुखों का छेदन करे, सबको सुखी बनाये ।।
शरणागत पालक बने, कभी नहीं घबराये ।
धर्म मार्ग के पथिकों से, जनता लाभ उठाये ।।

बढ़े राज्य का धन सदा, वह साधन अपनाये ।
प्रजा जनों के हृदयों, को हर्षित कर पाये ।।
प्रजा के सारे सुखों को, भोगे और भोगाये ।
प्रजा जनों में प्रीतियों, का सागर उमड़ाये ।।

आदर और सत्कार से, मिले सभी को न्याय ।
राज्य उन्नति नित करे, ऐसा करें उपाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ६-८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

उत्तम शिक्षायें प्रजा, बचपन से दिलवाये ।
वेदों के विद्वान सब, इसका करें उपाये ।।
द्रव्य आदि स्वीकार कर, विद्या सदा बढ़ायें ।
सभी शास्त्रों का बोध वह, सबको सदा करायें ।

अविद्या आदि बंधनों, से मुक्ति दिलवायें ।
अच्छी शिक्षायें सभी, सबको सदा दिलायें ।।
कुशलता हो व्यवहार में, मिले सभी को न्याय ।
ब्रह्मचर्य पालन करें, हर सुख चल कर आये ।।

पृथ्वी से ईश्वर तलक, सकल ज्ञान मिल जाये ।
आशा का उपवन सदा, सुगन्धियां फैलाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ६-६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

गुरुजन और माता पिता, योग्य सन्तान बनायें।
पृथ्वी, चन्द्र, सूर्य आदि का, पूरा बोध करायें ।।
रचता इन सबका प्रभू, है सबको बतलायें।
वेद विद्या प्रकाश का, कर्त्ता है समझायें ।।
अग्नि होम और तेज का, पूरा ज्ञान करायें।
ब्रह्मचर्य अनुकूल जल, औषधि उन्हें पिलायें ।।
अभिभावकों को सदा सन्तुष्टि दिलवायें।
प्रीति पूर्वक गुण सभी, धारण उन्हें करायें ।।
नियमों का पालन करें, तेज ओज को पायें।
बल पर विद्या के सदा, विश्व विभूति बन जायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ६-१० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

यज्ञों की आहूतियां, प्रमाण रूप अपनाये।
सूर्य के आकर्षण से, पहुंचे वहां तक जायें ।।
सूर्य-किरणें पृथ्वी जल, आकाश में ले जायें।
वह जल वर्षा रूप बन, अन्न औषध उपजायें ।।
उन अन्नों से जीव सब, जीवन और सुख पायें।
यज्ञ शोधित इन द्रव्यों का, सारे लाभ उठायें ।।
विद्वानों के भोगने, योग्य तभी बन पायें।
यज्ञ आदि उपकार के, कार्यों में लग जायें ।।
पवित्र वायु के संग से, प्राण रमण कर पायें।
उत्तम बुद्धि प्राप्त कर, प्रचार में जुट जायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ६-११ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

यज्ञों में आहूतियां, घृत की डाली जायें ।
उस घृत प्राप्ति के लिये, गऊयें पाली जायें ।।
यह हवियां आकाश में, स्वस्थ रूप अपनायें ।
जन-जन के कल्याण की, औषध बन कर आयें ।।

धनी लोगों का फर्ज है, इसमें रुचि दिखायें ।
औरों का हित भी करें, मन वांछित फल पायें ।।
यज्ञों का इस काया से, एकी भाव बनायें ।
उत्तम-उत्तम वाणियों, का प्रयोग करायें ।।

सत्य कर्म अनुष्ठान को, धर्म निष्ठ बुलवायें ।
वह ज्ञानी विद्वान ही, धर्म लाभ पहुंचायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ६-१२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों को उचित है, सरल मार्ग अपनायें ।
कुटलता रूपी मार्ग को, हर इक से छुड़वायें ।।
मूर्ख लोग अभिमान में, करें न अनियमतायें ।
व्याघ्र वृति के लोग न, क्रूर पायें हत्यायें ।।

अनधन से हर एक के, खेत सदा लहलहायें ।
निराश्रृत संसार के, प्राणी न रह जायें ।।
कठिनाई में मार्ग दें, जल की सब धारायें ।
सत्य मार्ग पर लोग सब, बिना रोक चल पायें ।।

सुखों का विस्तार हो, मन वांछित फल पायें ।
स्वयं भी सुख से रहें, सबको सुखी बनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ६-१३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे विदुषी पतिव्रता, देवियां धर्म निभायें।
वैसे ही ब्रह्मचारणी कन्या अमल कमायें॥
ब्रह्मचारी तत्पर रहें, अपना फर्ज़ निभायें।
स्त्री पुरुषों की सदा, शिक्षा में जुट जायें॥
देवियां अपने ही गुणों, के पतियों को पायें।
सभी लोग इस नीति को, दृढ़ता से अपनायें॥
विदुषी को विद्वान जन, हंसी खुशी अपनायें।
विद्वानों को देवियां, अपने पति बनायें॥
सभी लोग इस योग्यता, को दिल से अपनायें।
चहों ओर दिखलाई दें, खुशियों भरी हवायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ६-१४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

गुरु पत्नियां बच्चों को, सदा सुशील बनायें।
वेद, उपवेद, अंग और उपांग, भली भांति समझायें॥
देह इन्द्रीयां अंतःकरण, मन को शुद्ध बनायें।
पुष्टि करें शरीर की, प्राणायाम सिखायें॥
शंकायें सब दूर हों, सन्तुष्टि करवायें।
उत्तम-उत्तम गुण सभी, जीवनों में ले आयें॥
योजनायें इस भांति की, क्रियान्वित कर पायें।
व्यवहारों की कुशलता, सभी लोग अपनायें॥
शुद्ध हो चिन्तन और मनन, परहित कर्म कमायें।
धर्म के अनुकूल ही, निज आचरण बनायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ६-१५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सत्कर्मों से ही सदा, व्यक्ति उन्नति कर पाये।
सब मनुष्यों को चाहिये, ऐसा करें उपाये॥

सुशिक्षा पाकर सदा, अमल कमाया जाये।
इनके अनुष्ठान में, विलम्ब न होने पाये॥

गुणों की प्राप्ति के लिए, ताड़ना भी की जाये।
यही ताड़ना अन्त में, सबको सुख पहुंचाये॥

अध्यापक जैसे भी हो, पूरा जोर लगाये।
जितना जल्दी हो सके, विद्या प्राप्त कराये॥

हर बालक विद्वान बन, सेवा धर्म कमाये।
यह ही मानव धर्म है, हर व्यक्ति अपनाये॥

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ६-१६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

बुद्धिमान अच्छे बुरे, की पहचान करायें।
श्रेष्ठ का और अनिष्ठ का, हर अन्तर समझायें॥

अपने शिष्यों को सदा, उत्तम ज्ञान दिलायें।
यज्ञ कर्म से होती है, शुद्धि यह बतलायें॥

जल वायु की शुद्धि से, बादल घिर घिर आयें।
अमृत की वर्षा सदा, चहों ओर बरसायें॥

वर्षा से अन्न औषधि, नये-नये फल आयें।
पुष्टि कारक बन सदा, सबको सुखी बनायें॥

कुशल करें व्यवहार सब, अभक्ष कभी नहीं खायें।
यज्ञ द्वारा शोधन क्रिया, करें और करवायें॥

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ६-१७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे पदार्थों की शुद्धि का, जल है एक निदान ।
सुधार भावना विश्व में, ला सकता विद्वान ।।

सद प्रेरणा से सभी, करते अच्छे काम ।
कोई भी भटके नहीं, जीना हो आसान ।।

ईश्वर की आराधना, देती सब वरदान ।
विद्वानों के संग से, पायें सब आराम ।।

दुष्ट आचरण छोड़कर, करें धर्म अनुष्ठान ।
प्रवृति शुभ कर्म की, करे पूरे अरमान ।।

अविद्या आदि मल करें, हर इक का नुकसान ।
प्रभू प्रेरणा धन्य है, करती है कल्याण ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ६-१८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को चाहिये, विजय शत्रु पर पायें ।
विद्या, युद्ध और प्राण बल, अपना सदा बढ़ायें ।।

अन्न जल के भंडार भर, शस्त्र उपलब्ध करायें ।
फिर संग्राम में शत्रु को, सदैव धूल चटायें ।।

अपनी गतियों को सदा, पवन तुल्य बनायें ।
पुष्टि कारक सूर्य की, भांति वेग बढ़ायें ।।

करोड़ों शत्रु हों भले, जरा नहीं घबरायें ।
क्रोध अग्नि और द्वेष की, पीड़ा नहीं सतायें ।।

विजयश्री के पाने को, सदैव लक्ष बनायें ।
कभी किसी से युद्ध में, यथार्थ को नहीं भुलायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-१९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सेनाध्यक्ष को उचित है, सेना खूब सजाये ।
शत्रु हों भयभीत सब, वह जय घोष लगाये ।।
श्येन, चक्रव्यूह रचना की, रीति को अपनाये ।।
शकट व्यूह की रचना से, शत्रु घेरा जाये ।।

सेनाओं को बांट कर, इस भांति फैलाये ।
रक्षा पंक्ति में कहीं, कोई कमी न आये ।।
मनोबल अपने वीरों का, सदा बढ़ाया जाये ।
सफलता जीवन लक्ष्य है, यह समझाया जाये ।।

प्रजा जनों को हर घड़ी, न्याय दिलाया जाये ।
उनके पालन में सदा, ध्यान जुटाया जाये ।।
बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ९-२० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

दिव्य विद्या सम्पन्न हो, सेनापति महान ।
सेना में विचरे इस तरह, ज्यों काया में प्राण ।।
जोश बढ़ाये वीरों में, शरीर में जैसे उदान ।
छाये शत्रु पर इस तरह, जाये वह लोहा मान ।।

युद्ध का गर विस्तार हो, जुटाये हर सामान ।
लक्ष हमेशा यह रहे, जीतना है संग्राम ।।
प्रजा जनों से मित्रता, का हो सदा बखान ।
खुशी-खुशी से वीर दें, युद्धों में बलिदान ।।

हर कोई हर्षित रहे, दे दिल से योगदान ।
सेनापति की गर्ज पर, करें न्योछावर प्राण ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ६-२१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

धर्म अर्थ और राज्य को, प्राप्त जो करना चाहें ।
पुरुष वह इसके वास्ते, वायुयान बनायें ।।

अन्तरिक्ष और भूमि के, यान प्रयोग में लायें ।
यन्त्र नाना प्रकार के, बनाके लाभ उठायें ।।

सब सामग्री को जुटा, धन और राज्य बढ़ायें ।
उपलब्धि सुख चैन की, करें और करवायें ।।

अग्नि होत्र की सब कला, जाने और जनायें ।
सोमलता प्रयोग कर, देह नीरोग बनायें ।।

जल और विद्युत विद्या को, समझें और समझायें ।
कलायें अग्नि अस्त्रों की, प्रकाश में सारी लायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ६-२२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा और अधिकारी गण, लूट न कभी मचायें ।
अन्याय से लोगों को, कभी न कहीं सतायें ।।

आवश्यकता की वस्तुयें, सबको सदा जुटायें ।
गौधन, गज धन, वाज धन, जितना बढ़े बढ़ायें ।।

किसी से न नफरत करें, सबसे प्यार जतायें ।
मित्र की दृष्टि से सदा, देखें और दिखायें ।।

कभी किसी को औषधियां, कष्ट नहीं दे पायें ।
सद प्रयोग से यह सदा, सबको सुख पहुंचायें ।।

डाकू, चोर, कुमार्गी, दण्ड हमेशा पायें ।
कपटी, लम्पट जो भी हों, चैन से न सो पायें ।।

बोलिये वेद धर्म की ....

यजुर्वेद ६-२३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों को उचित है, जलों से लाभ उठायें ।
इनके सभी प्रयोगों को, जानें और जनायें ।।
उपकारों के कार्य सब, इनसे सदा करायें ।
सुखदाई शुभ कर्म सब, करें और करवायें ।।

यज्ञ है परमानन्द प्रद, सबको यह समझायें ।
सुगन्धि की लपटें सदा, सूर्य लोक तक जायें ।।
चतुर पुरुष ही विश्व में, जान कलायें पायें ।
अनेकों क्रियाओं को, वही प्रकाश में लायें ।।

यज्ञों से वर्षा करें, सबको सुखी बनायें ।
परोपकार करते रहें, भव सागर तर जायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ६-२४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ब्रह्मचर्य व्रत पाल कर, करें विवाह कन्यायें ।
तुल्य गुण कर्म स्वभाव को, अपना पति बनायें ।।
गुरु पत्नियां शिष्यों को, ऐसा पाठ पढ़ायें ।
प्रसन्नता से कन्या वर, अपना गृहस्थ निभायें ।।

दें उत्तम सन्तान और, राष्ट्र की शान बढ़ायें ।
योग्य वीर रणधीर बन, बढ़ायें जो सीमायें ।।
बिजली सूर्य के गुणों को, अपने अन्दर लायें ।
बल से और पराक्रम से, नई क्रान्तियां लायें ।।

इतने हों विद्वान सब, सभा में शोभा पायें ।
अपने घर और गृहस्थ को, सदैव सुखी बनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ६-२५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

गुरु पत्नियां जिस तरह, सेवा धर्म कमायें ।
अपने पतियों के निकट रह, प्राप्त करें सुविधायें ॥
अग्नि होत्र अनुष्ठान कर, सुगन्धियां फैलायें ।
उनके ही अनुसार यह, चलें सभी कन्यायें ॥
सूरज के सदृश सभी, गुण अपने में लायें ।
बड़ी प्रसन्नता से करें, प्राप्त सभी शिक्षायें ॥
विवाह के पश्चात भी, दोनों प्यार बढ़ायें ।
पति पत्नी इक दूसरे, के पूरक बन जायें ॥
सुखों का प्रकाश कर, सभी सुखों को पायें ।
औरों को सुख दें सदा, करें यज्ञ क्रियायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ६-२६ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

ऐश्वर्ययुक्त उत्कृष्ट गुण, राज्याध्यक्ष अपनायें ।
पिता तुल्य उसको समझ, प्रजायें अमल कमायें ॥
निकटवर्ती रहकर सदा, उनसे प्यार बढ़ायें ।
राह में उस अध्यक्ष के, आंखें सभी बिछायें ॥
पुत्र तुल्य सारी प्रजा, रह कर राज्य चलायें ।
मधुर वचन और न्याय को, सभी लोग अपनायें ॥
विद्वानों के यज्ञ की, रक्षा करें करायें ।
सहानुभूति पूर्वक, सबकी सुनें सुनायें ॥
बड़ा शिष्ट व्यवहार हो, किसी को नहीं सतायें ।
परस्पर हो सहमति, वह नीति अपनायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ६-२७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

दिव्य गुण युक्त उत्कृष्ट ही, पद आसीन हो पाये ।
सभापति ऐसा बने, इसका करे उपाये ।।
शिष्ट गुणों को व्याप कर, राष्ट्र को सदा बढ़ाये ।
जल तरंग भांति चले, करे सभी से न्याय ।।
हो जितेन्द्रीय बलवान वह, सबको खिला के खाये ।
हर व्यक्ति इस राष्ट्र का, शान्ति से सो पाये ।।
सबकी सम्मति से उसे, राजा माना जाये ।
राज्य काज के वास्ते, कर चुकाया जाये ।।
आदर और सत्कार से, साथ निभाया जाये ।
राज्य के हित को सर्वदा, मुख्य बनाया जाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ६-२८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वैश्य जनों को उचित है, हल जोतें जुतवायें ।
ईश्वर से उत्कर्ष पा, सबका भला कमायें ।।
यज्ञ से शोधित जल सदा, अन्तरिक्ष पहुंचायें ।
इस रीति को जानकर, निस्दिन यज्ञ रचायें ।।
ऐसे जल जब बरसते, औषधियां उपजायें ।
वही औषधियां यज्ञ की, हवि बनाई जायें ।।
शोधित और पवित्र जल, सेवन करें करायें ।
इस भांति बल पराक्रम, सबमें सदा बढ़ायें ।।
जो विद्या अभ्यास में, निपुण नहीं हो पायें ।
खेती बाड़ी के काम को, वह, सज्जन अपनायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ६-२९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राष्ट्र के सन्मुख जब कभी, युद्ध समय आ जाये।
हर व्यक्ति वह ही करे, राज्य जो उसे बताये ॥
वैसे चलें चलायें सब, वैसा करें उपाय ।
अन्न, धन, जन की रक्षा में, कहीं ढील नहीं आये ॥
सुख की सिद्धि के लिये, हर व्यक्ति जुट जाये।
नियुक्ति उसकी हो जहां, कदम न पीछे हटाये ।
प्रजाओं के सुख के लिये, अपनी जान लड़ाये।
जीवनों के निर्वाह में, कोई बाधा नहीं आये ॥
मिल जुल कर सारे चलें, नियम बनाया जाये।
पालन बड़ी प्रसन्नता से, किया कराया जाये ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ६-३० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रजा जनों को उचित है, कर चुकाया जाये।
मिला है जो कुछ राष्ट्र के, लिये लगाया जाये ॥
राज्याध्यक्ष का हर तरह, हाथ बटाया जाये।
नियम पूर्वक जो बने, उसे दिलाया जाये ॥
प्रजा का पालन हो सके, पाये हर कोई न्याय ।
संचालन में राज्य के, कठनाई नहीं आये ॥
राजा अपने फर्ज को, पूर्ण सदा कर पाये।
प्रजा जनों का फर्ज है, इसका करें उपाये ॥
दुखिया पीड़ित न रहें, नियम बनाया जाये।
प्रीति रीति की नीति से, इसे चलाया जाये ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ६-३१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज्य कार्य के नियमों को, जानें और जनायें ।
आर्थिक दृष्टि से राज्य को, सदैव पुष्ट बनायें ।।

मन वाणी और प्राण से, सेवा में जुट जायें ।
कभी किसी के अपशब्द, कानों में नहीं आयें ।।

अपने कार्यों से सदा, राज्य को बल पहुंचायें ।
राज्याध्यक्ष की आत्मा में, आयें न शंकायें ।।

उसकी निज सन्तानों को, संरक्षण दिलवायें ।
गौ, हाथी, घोड़े सभी, जो मांगे दिलवायें ।।

राज्य के अधिकारी सभी, प्रजाओं के हित चाहें ।
घरेलू चिन्तायें कभी, उनको नहीं सतायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ६-३२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रजा जनों का प्रिय ही, अध्यक्ष बनाया जाये ।
हर व्यक्ति उस राज्य का, उसका साथ निभाये ।।

हर व्यक्ति हर पल घड़ी, काम राष्ट्र के आये ।
ब्रह्मचारी विद्वान सब, इसका करें उपाये ।।

शत्रुओं का संहार कर, न्याय दिलाया जाये ।
राज्य उत्तम ऐश्वर्यों से, युक्त बनाया जाये ।।

योद्धा श्यन पक्षी बने लपट झपट दिखलाये ।
कुशलता से हर शत्रु पर, अपनी धाक बिठाये ।।

धन की दृढ़ता से सदा, राष्ट्र उभारा जाये ।
विद्या के प्रचार को, हर व्यक्ति निकल आये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ६-३३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा का कर्तव्य है, अपना राज्य बढ़ाये ।
राज्य में कोई भी कहीं, आलसी न हो जाये ।।

राज्य के उत्कर्ष में, सबको जोड़ा जाये ।
पुरुषार्थ से धन भण्डारों को, सदा बढ़ाया जाये ।।

सूर्य लोक आकाश तक, राज्य की शोभा बढ़ाये ।
प्रजा जनों के लाभ को, लक्ष बनाया जाये ।।

मुख्यता पर उपकार को, ही अपनाया जाये ।
उत्तमता से राज्य का, कार्य चलाया जाये ।।

हर व्यक्ति इस राष्ट्र का, हर पल रहे सहाये ।
जब-जब भी कठिनाई हो, सीस तली धर आये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ६-३४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विदुषी देवियां जिस तरह, पतियों को हर्षायें ।
पति लोग भी पत्नियों, को सम्मान दिलायें ।।

सुख दें वर्षा की तरह, नई बहारें आयें ।
दोनों परस्पर प्रेम से, गृहस्थ को सुखी बनायें ।

अपनी रीतियों नीतियों, से धन सदा बढ़ायें ।
यज्ञों के अनुष्ठान में, दोनों हाथ बटायें ।।

प्रेम प्यार का यज्ञ भी, दोनों खूब बढ़ायें ।
सिद्धि सारे सुखों की, दोनों करें करायें ।।

गृहस्थ आश्रम धर्म है, दोनों इसे निभायें ।
परस्पर के अनुमोद से, पूर्णता को पायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ६-३५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

स्त्री-पुरुष दोनों कभी, भय से नहीं घबरायें।
उदारता से परस्पर, के पूरक बन जायें ॥
आत्मिक बल और पराक्रम, धारण करें बढ़ायें।
दोनों आपस में इसी, भांति बरतें बरतायें ॥
सूर्य भूमि की तरह, इक जोड़ा बन जायें।
जितना जिससे हो सके, पर उपकार कमायें ॥
दृढ़ता आये बलों में, उससे गृहस्थ चलायें।
नष्ट होवें अपराध सब, नेकी को अपनायें ॥
चन्दा की भांति सदा, कष्टों में मुस्कायें।
शांति और आनन्द का, इक नया नगर बसायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ६-३६ (भावार्थ)'काव्य पाठ'

मात पिता को योग्य है, योग्य सन्तान बनायें।
विद्या आदि भूषणों, से ही उन्हें सजायें ॥
अच्छे-अच्छे गुणों में, प्रवृत्त उन्हें करायें।
शरीर पुष्ट नीरोग कर, उत्साह सदा बढ़ायें ॥
आदर से गुण गायें सब, उनके सभी दिशायें।
निकलें जिधर सब लोग उन्हें, आंखों पर बिठलायें ॥
उन पुत्रों को योग्य है, सेवा धर्म अपनायें।
मात पिता का ऋण कभी, दिल से नहीं भुलायें ॥
पाओं में इनके स्वर्ग है, दृढ़ विश्वास जमायें।
देव तुल्य मानें उन्हें, गृहस्थ स्वर्ग बनायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ६-३७ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

सभापति स्वराज्य में, पाये सदा सम्मान ।
जैसे सारे विश्व में, पुजता है भगवान ।।

पक्षपात से रहित हो, ऐसा करे विधान ।
सबका हित चिन्तन करे, सुख का करे सामान ।।

राज्य धर्म का अनुवर्ति, हो योद्धा बलवान ।
प्रशंसा उसकी करें, दुनियां के विद्वान ।।

दुष्टों को दंड दे सदा, शिष्ट जनों को मान ।
सुसज्जित हर पल रखे, अपना तीर कमान ।।

प्रजाओं की अनुकूलता में, समझे कल्याण ।
सबको सम्मति से चले, जीते हर संग्राम ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

छठे अध्याय का काव्य पाठ

समाप्त

यजुर्वेद ७-१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को योग्य है, परम पिता को ध्यायें।
जिसने जीवों के लिये, प्रदान की वेद ऋचायें।।
सूर्य की किरणें जिस तरह, पदार्थ पवित्र बनायें।
विद्वानों के संग से, आयें सब विद्यायें।।
उत्तम गुण धारण करें, सत्य वचन अपनायें।
बाहर भीतर के लिये, आयें काम भुजायें।।
दिव्य गुण युक्त विद्वानों को, हम सदैव अपनायें।
धर्म की चर्चा के लिये, उनसे मिलें मिलायें।।
नित्य पवित्र परमात्मा, को जानें जनवायें।
ऐसे ही व्यवहारों की, चलायें परम्परायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे प्राणी विश्व के, अपने लिये कमायें।
ऐसे ही साधन सदा, औरों को जुटवायें।।
सम्पादन अन्न आदि का, जैसे करें करायें।
औरों के हित को कभी, दिल से नहीं भुलायें।।
शुभ कर्मों की प्रेरणा, सबको करें करायें।
ऐश्वर्यों की प्राप्ति, को आसान बनायें।।
सत्य धर्म क्रियाओं को, जानें और जनवायें।
वाणी हो मीठी मधुर, सबको मित्र बनायें।।
अच्छे गुण धारण करें, औरों को करवायें।
सत्य कर्मा विद्वान के, गीत हमेशा गायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अनादि रूप यह जीव है, देह निरोग बनाये ।
इन्द्रीय और अंतःकरण, निर्मल इन्हें बनाये ।।
धर्म युक्त व्यवहारों में, प्रेरित इन्हें कराये ।
प्रभू भक्ति में मन तथा, वृति स्थिर हो जाये ।।
दुष्टों का पुरुषार्थ से, नाम निशान मिटाये ।
शिष्टों की रक्षा करे, इसमें न घबराये ।।
वेद विद्या विज्ञान से, पूरा लाभ उठाये ।
प्राप्त करे मस्ती स्वयं, सभी को प्राप्त कराये ।।
अज्ञान रूपी शत्रु से, सबकी जान बचाये ।
आनन्द से खुद भी जिये, सबको सुख पहुंचाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

योग पथिक को चाहिये, यम और नियम अपनाये ।
चित्त की वृतियों को सदा, स्थिर और शान्त बनाये ।।
अंतःकरण पवित्र हो, भला सभी का चाहे ।
अविद्या आदि दोषों में, कहीं भटक नहीं जाये ।।
इन्द्रीयों पर नियन्त्रण रखे, संयम को अपनाये ।
सारी ऋद्धियों सिद्धियों, का फल हर पल पाये ।।
धनी जैसे पुरुषार्थ से, धन को सदा बढ़ाये ।
योग विद्या ऐश्वर्य का, करता रहे उपाये ।।
योग साधना से बड़ा, अदभुत सा बल पाये ।
औरों को सुख दे सदा, स्वयं सुखी रह पाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर का उपदेश है, सब कुछ जाना जाये।
पदार्थ विद्या का ज्ञान है, भिन्न-भिन्न माना जाये ।।
योग साधना के बिना, हाथ न कुछ भी आये।
देखने वाला भी कभी, वास्तविक ज्ञान न पाये ।।
ईश्वर दाता ज्ञान का, नहीं भुलाया जाये।
बिना स्तुति के कभी, हाथ न कुछ लग पाये ।।
विद्वानों के संग से, यह सब जाना जाये।
अन्दर बाहर का तभी, सकल ज्ञान मिल पाये ।।
रीति है उत्तम यही, प्रभू में मन रम जाये।
हृदय मन्दिर में उसे, सदा बिठाया जाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ७-६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रभू का यह आदेश है, करता उसे स्वीकार।
जिसने भी है कर लिया, अपना श्रेष्टाचार ।।
जब तक न स्वीकृत करे, पाये न बल विस्तार।
आत्मिक उन्नति का कभी, मिल नहीं पाये पार ।।
आध्यात्मिक बल के बिना, मिले न सुख का सार।
तीन काल लग न सके, भव सागर से पार ।।
जितेन्द्रय और योगी सदा, पा लेता आधार।
योग की सिद्धि से करें, कुशल सभी व्यवहार ।।
सत्य अनुष्ठान करता सदा, सूर्य समान प्रसार।
ऐसे योगी की सदा, होती जय जय कार ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ७-७ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

पवन तुल्य क्रियाओं को, करे योगी कहलाये।
शम दम आदि गुण धार कर, जीवन सदा सजाये ।।

समस्त गुणों से युक्त हो, पाये अन्न भण्डार।
योगबल आत्म प्रकाश से, पाये जीवन सार ।।

जो बल वह धारण करे, पाये सदा विस्तार।
परम पिता उस योगी को, करता है स्वीकार ।।

अच्छे गुणों को धार कर, करता परोपकार।
सब जीवों के सुखों का, बनता है आधार ।।

अपना हित चाहे नहीं, काम सभी के आये।
समर्थ सभी के बीच में, वह सज्जन कहलाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर से पृथ्वी तलक, साक्षात कर पाये।
पूर्ण योगी और सिद्ध, वह सज्जन कहलाये ।।

यम नियम पालन करे, इनमें ही रम जाये।
इन्हीं साधनों की बना, नौका भव तर जाये ।।

सिद्धों का सेवन करे, उनसे लाभ उठाये।
योग सिद्धि की प्राप्ति, इस विध भी हो जाये ।।

योग शास्त्रों का बड़ा, करे गहन स्वाध्याय।
साधना से ही कष्ट सब, जीवन का मिट पाये ।।

ज्ञान पवन जल अग्नि की, सिद्धि प्राप्त कराये।
उतरने चढ़ने की विधि, प्राणों की आ जाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

परम पिता जगदीश भी, करते उसे स्वीकार ।
प्राण अपान उदान का, पाया जिसने सार ।।
सत्य ज्ञान की विद्या का, करता है विस्तार ।
योग ऐश्वर्य की सिद्धि से, हो जाये भव पार ।।

प्रभू स्तुति को सुने, धारे पर उपकार ।
नियमों का पालन करे, सदा भली प्रकार ।।
शिष्ट पुरुषों का संग कर, करे कुशल व्यवहार ।
योग अभ्यास सदा करे, अपना करे सुधार ।।

सब मनुष्यों को उचित है, लें इसका आधार ।
अपने सब सपने करें, जीवन में साकार ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-१० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को उचित है, भला बुरा लें जान ।
इनकी शिक्षा दे सकें, भली भांति विद्वान ।।
योग धन से हर्षित रहें, बनें वह जग के प्राण ।
उत्तम वाणी धार कर, करें सबका कल्याण ।।

कुशलता हो व्यवहार में, सत्य की हो पहचान ।
मिलता है सत्कार उसे, बनता जो यजमान ।।
विद्वानों का संग कर, करता विद्या दान ।
वेद की वाणी प्राप्त कर, पा लेता सुख धाम ।।

रूखा सूखा खाये के, देता है वरदान ।
गाय जैसे तृण खाये के, करती दूध प्रदान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-११ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

योगी जन मधुर वाणी से, सबको योग सिखायें।
प्राण अपान के योगोचित, नियमों को बतलायें ।।
सर्वस्व अपना योग को, जानें और जनायें।
इनके गूढ़ रहस्यों को, भली भांति समझायें ।।
सूर्य चन्द्र की भांति वह, चमकें और चमकायें।
प्रभात समय की उषा की, भांति अमृत बरसायें ।।
प्रभू को अंग संग जानकर, योग सिद्ध कर पायें।
यम नियम आदि स्वीकार कर, जीवन सफल बनायें ।।
योग निष्ठ नीति सदा, बरतें और बरतायें।
विश्व को अपना लें बना, सभी आश्रय पायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ७-१२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

योग विद्या के पथिक सब, शम दम को अपनायें।
इन्हीं के द्वारा उन्नति, सभी लोग कर पायें ।।
योग बलों की सीढ़ियां, निस्दिन चढ़ते जायें।
कर विध्वंस अंधकार का, उचित सुखों को पायें ।।
योगांगों को जानकर, उन पर चलें चलायें।
नियमों का पालन करें, दोष मुक्त हो जायें ।।
योग क्रियाओं से सदा, लम्बी आयु पायें।
इन्द्रियों को वश में करें, प्रकाश हृदय में पायें ।।
दृढ़ता के भूषण पहन, वीर धीर बन जायें।
ऋषियों मुनियों की तरह, मान सभी से पायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ७-१३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

शम दम आदि गुणों को, जो आधार बनाये ।
योग विद्या जो सीखना, चाहें उन्हें सिखाये ॥
आत्म बल हर एक में, प्रतिदिन सदा बढ़ाये ।
सूर्य सा प्रकाश वह, अपने अन्दर पाये ॥
भ्रमण करे सब पुरुषों को, गुणों से युक्त बनाये ।
धन धानों की उन्नति, हर इक की करवाये ॥
सूर्य पृथ्वी की तरह, महा बली कहलाये ।
सूर्य दीप्ति को प्राप्त कर, विषयों से छुट जाये ॥
योग बल बड़ा अमोल्य है, इसका लाभ उठाये ।
सकल विश्व में कीर्ति, इसकी सदा बढ़ाये ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-१४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

योगियों को यह उचित है, जिज्ञासुओं को समझायें ।
योग और विद्या दान दे, सबका भला कमायें ॥
करें शारीरिक उन्नति, औरों की करवायें ।
आत्म बल से युक्त कर, सम्पन्न उन्हें बनायें ॥
जिससे शुद्ध पराक्रम बढ़े, वही विधि अपनायें ।
योग विद्या के द्वारा ही, धन को पुष्ट बनायें ॥
नीति विद्या सुशिक्षा जनित, सभी लोग अपनायें ।
स्वयं को और संसार को, सुख-मय सदा बनायें ॥
अग्नि तुल्य अध्यापक सदा, विद्या पढ़ें पढ़ायें ।
विद्या के सब रहस्यों को, जानें और जनायें ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-१५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

योगी और विद्वान जन, जैसे करें करायें।
सभी लोगों को उचित है, वैसे कर्म कमायें॥
जैसे परम ऐश्वर्य की, प्राप्ति में जुट जायें।
सभी लोग पद चिन्हों पर, उनके चलें चलायें॥
जैसे भी विद्वान जन, उत्तम कर्म कमायें।
प्रवृत्त हों उनमें सभी, परम सिद्धि को पायें॥
उत्तम वाणी से सदा, सबको मित्र बनायें।
सत्य निष्ठा और शिष्टता, व्यवहारों में लायें॥
यज्ञ आदि उत्तम करम, करें और करवायें।
स्वयं सदा प्रसन्न रहें, सबको तृप्त बनायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-१६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सभा अध्यक्ष को उचित है, श्रेष्ठ गुण अपनाये।
सूर्य चन्दा की तरह, प्रकाश करे कराये॥
व्यवहारों की दुष्टता, किसी में न रह जाये।
सज्जन लोगों को प्रसन्न, करे और करवाये॥
सेना सुसज्जित रहे, राज्य को सदा बढ़ाये।
अपने-अपने मार्ग पर, हर कोई कदम बढ़ाये॥
सूर्य ग्रहों उपग्रहों को, सदा प्रकाश दिलाये।
चन्दा जलों के आकर्षण में, चक्र यह चलता जाये॥
यानों का निर्माण कर, प्रयोग में लाया जाये।
दुष्टों को दण्डित करे, श्रेष्ठों का मान बढ़ाये॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-१७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रजा पुरुष जिस राज्य में, राज्य आश्रय पायें।
राजा लोगों का फर्ज है, सबको न्याय दिलायें॥
शंका का समाधान कर, कार्य में सब जुट जायें।
जिम्मेदारी सब रक्षा की, राजा लोग निभायें॥
सभी राज्य अधिकारी गण, सेवा में लग जायें।
नोकर चाकर सबके सब, समय न व्यर्थ गंवायें॥
यज्ञ कार्यों को सभी, दृढ़ता से अपनायें।
बुद्धि द्वारा तर्क से, समझें और समझायें॥
शत्रुओं को जीतें सदा, वीर धीर कहलायें।
निर्भय हो सब राज्य की, जय जय कार बुलायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ७-१८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

न्याय अध्यक्ष को चाहिये, प्रजा को सुखी बनाये।
धर्म कर्म और यज्ञ से, धरती को महकाये॥
सतपुरुषों की सत्यता, जीवन में ले आये।
प्रजा जनों का कार्य सब, कुशलता से निपटाये॥
राज्य में चाहे हो कहीं, अत्याचार मिटाये।
सूर्य पृथ्वी सी धीरता, हर पल साथ निभाये॥
सूर्य दीप्ति न्याय दीप्ति, अपना असर दिखाये।
अत्याचारी कोई कहीं, खून बहा नहीं पाये॥
निवृति हो अन्याय की, न्याय का करे उपाय।
प्रजा जनों को दुख कोई, कभी सता नहीं पाये॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ७-१६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे प्राण अपान न, लें रुकने का नाम।
जैसे सूर्य चन्द्रमा, और पृथ्वी गतिमान ।।
जैसे आंख और कान सब, करते अपना काम।
राज्य के अधिकारी सभी, कार्य दें सर अंजाम ।।
अपनी-अपनी परिधि में, जैसे हैं सब वर्तमान।
सभी सभासद राज्य के, करें सकल इन्तजाम ।।
राजा प्रजा पालन करें, सारे विधि विधान।
सभी की आवश्यकताओं का, रखें हमेशा ध्यान ।।
न्याय मार्ग छोड़ें नहीं, सभी हैं एक समान।
धरती सबकी माता है, और पिता भगवान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-२० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा और विद्वान सब, उन्नति में जुट जायें।
विद्वान अपनी बुद्धि से, सुझायें नई कलायें ।।
घर-घर में जा कर सदा, सुनायें वेद ऋचायें।
जन साधारण भी सदा, इनका लाभ उठायें ।।
प्रजा जन बिन उपदेश के, सजग नहीं रह पायें।
देश की रक्षा कर नहीं, पायेंगी सेनायें ।।
बिना सुझाये मार्ग के, मिलें नहीं सम्पदायें।
बिना परस्पर प्रीत के, सुखी नहीं हो पायें ।।
ऐश्वर्य जहां पर नहीं, सुख वहां कैसे आयें।
आनन्द प्राप्ति है कठिन, अमल न अगर कमायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-२१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

चन्द्र लोक जैसे करे, कुल जग में प्रकाश ।
वैसे उत्तम राज्य में, कोई न रहे हताष ।।
धर्म अनुकूल आचरण हों, होता रहे विकास ।
प्रजा जन और अधिकारी भी, रहें न कभी निराश ।।
राजा को सहयोग दें, और बटायें हाथ ।
चहों ओर फैले सदा, इन तीनों की साख ।।
गुण उत्तम धारण करे, इन्द्रीयों का बने न दास ।
मान्य करें राजा उसे, धरती और आकाश ।।
न्याय धर्म में सभ्य जन, रखते हैं विश्वास ।
जहां विद्या पुरुषार्थ हैं, सुख वहीं करें निवास ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ७-२२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों को चाहिये, दें वह विद्या दान ।
जिससे अस्त्रों शस्त्रों का, सम्भव हो निर्माण ।।
सेना पति नियुक्त हो, योद्धा और बलवान ।
युद्धों में प्रवीण हो, करे यज्ञ अनुष्ठान ।।
राजा और सेनापति, मिलकर करें विधान ।
राज्य की सीमायें बढ़ें, प्रजा का हो कल्याण ।।
उन्नति के अवसर मिलें, सबको सदा समान ।
प्रजा जन और अधिकारी गण, बनें सभी विद्वान ।।
मिल जुल कर आगे बढ़ें, पायें सुखों की खान ।
कोई समस्या न रहे, प्रजाओं के दरमियान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ७-२३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रजा जनों को उचित है, करायें शास्त्र प्रचार।
सभापति उस को चुनें, समझे इस का सार॥
विद्याओं में हो कुशल, निर्मल हो व्यवहार।
ब्रह्मचर्य पालन करे, प्रीति का विस्तार॥
यज्ञ को धर्म, अर्थ, मोक्ष का, जो माने आधार।
राज्य की रक्षा के लिये, करें उसे स्वीकार॥
शस्त्रों में प्रवीण हो, और उत्तम शिल्पकार।
विद्युत की दिव्य विद्या को, जाने भली प्रकार॥
ब्रह्म ज्ञानी योगी सभी, पायें सदा सत्कार।
उन्नति हो विज्ञान की, वेद की जय जय कार॥

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ७-२४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

धनुर्विद्या में निपुण और, उपकारी विद्वान।
देश की रक्षा के लिये, करें सदा बलिदान॥
शस्त्र-अस्त्र निर्माण कर, करें प्रयोग विमान।
अग्नि अस्त्रों की कला का, जानें सकल विज्ञान॥
सूर्य जैसे तेजवान, पृथिवी से धैर्यवान।
सत्यता हो व्यवहार में, करें सभी सम्मान॥
एक तंत्र हो राज्य में, सभी हों एक समान।
राज्य उन्नति के लिये, सभी लड़ायें जान॥
हर इक का सहयोग हो, राज्य हो स्वर्ग समान।
कोई दुखिया न रहे, हो सब का कल्याण॥

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ७-२५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

पृथिवी और आकाश में, स्थिर रहते भगवान।
विश्व के सारे जीवों में, रहते हैं विराजमान ॥
दिखलाते सन्मार्ग हैं, देते हैं सद ज्ञान।
प्रकाश करते हैं वही, करें वही कल्याण ॥
दुखों के नाशक वही, हैं सुखों की खान।
दृढ़ मन से उत्पत्ति कर, करते मधुर बखान ॥
शत्रुओं से रक्षा करें, ऐसा करें विधान।
करें परस्पर प्यार हम, घनिष्ठ मित्र समान ॥
पाने को उस देव को, करें योग अनुष्ठान।
अन्यथा मिल सकता नहीं, उनका पूरा ज्ञान ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-२६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

उत्तम सामग्री से जो, यज्ञ करें विद्वान।
पवन जलों को शुद्धि से, होता है कल्याण ॥
मेघमंडल और भूमि की, गोद में पाये स्थान।
वह सुगंध सब लोगों के, प्राण करे बलवान ॥
स्वास्थ्य में वह वृद्धि करे, रोग का करे निदान।
याजक की प्रतिष्ठा बढ़े, और मिले सम्मान ॥
मिलती है इन यज्ञों से, ऐश्वर्यों की खान।
आनन्द की हो प्राप्ति, मिले मोक्ष का धाम ॥
उचित सभी को है यही, करें यज्ञ अनुष्ठान।
ऊँची श्रेणी का तभी, कहलाये यजमान ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-२७ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

विद्या वृद्धि के लिये, जो यह यज्ञ रचाये।
पठन और पाठन की क्रिया, को हर पल अपनाये ।।
ऐसे यज्ञ अनुष्ठान से, सबको पुष्ट बनाये।
सर्वोत्तम सन्तोष धन, सबका सदा बढ़ाये ।।
सब मनुष्यों को उचित है, यह प्रक्रिया अपनायें।
विद्या यज्ञ स्वयं करें, औरों से करवायें ।।
वेद विद्या प्रकाश को, कुल जग में फैलायें।
जठराग्नि अन्न आदि का, सबको ज्ञान करायें ।।
प्राण अपान उदान को, सदैव पुष्ट बनायें।
आत्म बलों की उन्नति, सब की करें करायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-२८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

योग विद्या जाने बिना, बन न सके विद्वान।
पूर्ण विद्या के बिना, स्वरूप का न हो ज्ञान ।।
परमपिता की न कभी, हो पाये पहचान।
न्याय कर पाये नहीं, न्यायाधीश विद्वान ।।
प्रजा की रक्षा हो नहीं, असम्भव रोग निदान।
आत्मबल बढ़ता नहीं, मिले न सुख का धाम ।।
सबको ही यह उचित है, यह विद्या अपनायें।
जीवन में अनिवार्य है, इस पर अमल कमायें ।।
निरन्तर सेवन करें, सत्य पुरुष कहलायें।
प्रभू का यह आदेश है, पूरा इसे निभायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-२९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा को यह उचित है, प्रिय व्यवहार अपनाये ।
सेना और सभा सदा, प्रजा के कष्ट मिटाये ।।
उन्नति हर इक की करे, निर्भय उन्हें बनाये ।
रक्षा पंक्ति कुशल हो, तोड़ न कोई पाये ।।
प्रबल सदाचारी सदा, सेवा में पद पाये ।
सारे राज्य की प्रजा, परम सुखों को पाये ।।
भूमि सूर्य और अंतरिक्ष, सुख साधन बन जाये ।
वीरों और रणधीरों की, यह भूमि कहलाये ।।
परस्पर सब में मेल हो, पृथकता कभी न आये ।
राजा और सारी प्रजा, इक परिवार कहाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-३० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा को यह उचित है, समय न नष्ट गंवाये ।
प्रजा जनों के सुखों पर, हर पल ध्यान लगाये ।।
व्यवहारों में शिष्टता, और प्यार दर्शाये ।
हृदयों में सब के सदा, अपनी जगह बनाये ।।
प्रजा का हर व्यक्ति सदा, आज्ञा में चले चलाये ।
उल्लंघन कानून का, कोई नहीं कर पाये ।।
राजा प्रजा अनुकूल हों, मंजिल चलकर आये ।
दुनियां की हर इक खुशी, आशा पुष्प खिलाये ।।
राज्य सभा, राजा, प्रजा, सेना नाम कमाये ।
शत्रु कोई विश्व में, आँख उठा नहीं पाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय. . . .

यजुर्वेद ७-३१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

इकला राजा कर नहीं, सकता सारे काम।
श्रेष्ठ पुरुषों की इक सभा, करे स्वयं निर्माण ॥
आदर और सम्मान से, बढ़ाये उनका मान।
परामर्श से उनकी सदा, करे सभो इंतजाम ॥
राज्य सभा भी राजा को, दे पूरा सम्मान।
सारे मिल-जुलकर करें, राज्य को स्वर्ग समान ॥
राजा अग्नि तुल्य हो, सूर्य समान प्रकाशमान।
वाणी उसकी हो मधुर, करे वह मधुर बखान ॥
बुद्धि पूर्वक सब करें, निश्चित एक विधान।
उसका सब पालन करें, पायें सभी आराम ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-३२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज्य के सारे काम हों, राज्य सभा आधीन।
सभा के सभी सदस्य हों, कुशल और प्रवीण ॥
प्रजा जनों को उन सभी, पर हो पूर्ण यकीन।
वह प्रसन्नता से करें, राज्य सभा आसीन ॥
विचार-विमर्श सारे करें, सभी हों कुशल कुलीन।
कार्य सभी ऐसे करें, जैसे एक मशीन ॥
प्रजा जो-जो बातें रखे, लायें विचार आधीन।
प्रजा में से भी अवश्य चुनें, साथी दो या तीन ॥
परामर्श से ही निकलती, सदैव बात नवीन।
सारे राज्य में न रहे, कोई भी दीन और हीन ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-३३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विदुषी स्त्रियों को योग्य है, दें विद्या का दान।
शूरवीर रणधीर हों, सब बालक विद्वान॥
धनी और राजा करें, ऐसा सदा विधान।
भरण पोषण सब का चले, सब को मिले समान॥
शिक्षक को सन्तुष्ट कर, दें उसको सम्मान।
उन को सदैव प्रसन्न रखें, राष्ट्र के सब धनवान॥
८ वर्ष के बाद न, घर में रहे सन्तान।
ब्रह्मचर्य व्रत धार कर, पायें विद्या दान॥
शिक्षक शिक्षा से उन्हें, करें योग्य विद्वान।
तेजस्वी इतने बनें, अलग रखें पहचान॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ७-३४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों को उचित है, प्रतिदिन पाठ पढ़ायें।
विद्यार्थियों को गुण सभी, विद्या के बतलायें॥
हर इक मास की परीक्षा में, गर वह पास हो जायें।
आगे की विद्या उन्हें, परीक्षक लोग पढ़ायें॥
तीक्ष्ण बुद्धि युक्त को, अधिक परिश्रम करवायें।
विद्या के सारे रहस्य, उन को खोल सुनायें॥
गृहस्थी अपने पुत्रों को, उन के पास ले जायें।
भूषण उत्तम विद्या के, उन से इन्हें दिलायें।
गुरुओं के उत्तम गुण सभी, बच्चों में आ जायें।
विभूति राष्ट्र की बनें, इस का ध्वज लहरायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय...

यजुर्वेद ७-३५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

न्यायाधीश के न्याय को, कोई नहीं ठुकराये ।
राज्य सभा विद्वान की, बात काट नहीं पाये ।।
वेदज्यों की आज्ञा को, भंग किया नहीं जाये ।
उल्लंघन की कोई भी, हिम्मत कर नहीं पाये ।।
सबसे अधिक गुण युक्त हो, सभा पति कहलाये ।
उत्तम नीति से वह सदा, राज्य का कार्य चलाये ।
प्रजा के सन्मुख कोई भी, विघ्न बाधा नहीं आये ।
विद्या रस का पान कर, प्रजा .ों को करवाये ।।
प्रजा के पालन का सदा, नियम निभाया जाए ।
परम ऐश्वर्य संसार का, हर कोई समान पाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-३६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रजाजनों को उचित है, मुखिया उसे बनायें ।
समस्त विद्याओं से युक्त हो, जाने सभी कलायें ।।
शुभगुण युक्त विद्वान हो, उसी को आगे लायें ।
शूर वीर और योग्य हो, सब शत्रु घबरायें ।।
सत्य प्रिय न्याय करे, जय सब लोग बुलायें ।
धर्म कार्यों में सभी, उत्साह उससे पायें ।।
उन्नति के अवसर सभी, समान रूप से पायें ।
सभी लोग सुख चैन की, निद्रा से सो पायें ।।
राज्य के धन ऐश्वर्य को, मिलकर सभी बढ़ायें ।
राजा और प्रजा सभी, नियम उपनियम अपनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-३८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सभा और सेनापति, वह व्यवस्था लायें।
सारी की सारी प्रजा, अति उत्तम सुख पायें॥

भोजन की व्यवस्था का, वह प्रकार अपनायें।
धूर्त कभी खाद्य वस्तुओं में, मिलावट कर नहीं पायें॥

आत्माओं को शिष्टता, का भोजन करवायें।
कुशलतायें व्यवहार की, सबको पुष्ट बनायें॥

स्वास्थ और शिष्टाचार का, ऐसा मेल मिलायें।
कहीं सुनाई न पड़ें, दीनों दुखियों की आहें॥

विजय श्री पा शत्रु पर, जय-जय कार करायें।
ऐसी व्यवस्था करें, सबको न्याय दिलायें॥

बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ७·३७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे जीव इस काया का, रखता पूरा ध्यान।
इसके योग और क्षेम का, जुटाता हर सामान॥

राजा प्रजा पालन करे, जुटाये हर आराम।
प्रजा रहे निर्भय सदा, ऐसा करे विधान॥

सूर्य ज्यों अपनी शक्ति से, मेघों का करे निदान।
जल बरसा कर पृथ्वी पर, करता है कल्याण॥

राजा युद्ध सामग्री से, मिटाये शत्रु का नाम।
चैन का सुख का श्वास लें, धार्मिक और विद्वान॥

दुष्ट दुष्टता छोड़ कर, बने नेक इन्सान।
हर सुन्दर सपना तभी, चढ़ पाये परवान॥

बोलिये वेद धर्म की जय...

यजुर्वेद ७-३९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर के आश्रय बिना, सम्भव न कोई काम ।
प्रजा की रक्षा का नहीं, हो पाये सामान ।।
उसी से मिलती प्रेरणा, उत्तम बने विधान ।
आज्ञा पालन से मिले, हर सुख और आराम ।।
आदि से सब जीवों का, करता है कल्याण ।
देता सबको न्याय से, मन वांच्छित वरदान ।।
इसी भाँति राजा करे, सर्वउत्तम इन्तजाम ।
प्रजा सारी मिलकर करे, राजा का गुणगान ।।
न्याय व्यवस्था दृढ़ रहे, बढ़े देश की शान ।
ध्वज इस का ऊँचा रहे, ऊँचा इसका नाम ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-४० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे मेघ जल सींच कर, पदार्थ पुष्ट बनाये ।
वनस्पतियों और लताओं को, हरा भरा कर पाये ।।
जल समूह संसार के, सारे काम चलाये ।
प्राणि मात्र की तृप्ति का, हर साधन प्रगटाये ।।
ईश्वर योग्य अभ्यासी को, हर पल पुष्ट बनाये ।
त्याग तपस्या साधना, में उस की बल आये ।।
योगी स्वार्थ करता नहीं, सब को सुख पहुंचाये ।
कठिन गुत्थियों को सदा, बुद्धि से सुलझाये ।।
प्रभु की महिमा जानकर, अनन्त सुखों को पाये ।
अपने शुद्ध प्रभाव से, दुनियां नई बसाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-४१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सूर्य की किरणें सदा, प्रकाश जग में लायें।
वस्तुओं की वास्तविकता का, सब को भान करायें।।
मूर्तिमान संसार को, देख दृष्टि से पायें।
यथा योग्य प्रयोग कर, सब का लाभ उठायें।।

सब प्राणी संसार के, कर पायें कृयायें।
आंखें बिन प्रकाश के, देख न कुछ भी पायें।।
वैसे ही बुद्धि बिना, देख न कुछ भी पायें।
विद्या युक्त यह बुद्धियां, ईश्वर को दिखलायें।।

ज्ञान प्रकाश उपदेश से, समझ प्रभु को पायें।
बुद्धि के प्रकाश से, प्रकट हों सभी दिशायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ७-४२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

व्याप्त हर जगह हो रहा, प्रभु आकाश समान।
सूर्य तुल्य है हो रहा, विश्व में प्रकाश-मान।।
वायु के सदृश्य है, हर इक में गतिमान।
सत्य और असत्य का, करवाता है ज्ञान।।

चलते उस के आश्रय, प्राण अपान, समान।
जंगमों और स्थावरों, में रहता द्युतिमान।।
योग साधना से सदा, हो पाये दृष्य-मान।
बिना इसके नहीं आ सके, नजर कभी भगवान।।

वही स्तुति योग्य है, सभी लें ऐसा जान।
योग साधना सीखने का, सब करें विधान।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ७-४३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

भक्ति में प्रीति बिना, सिधे न योग अभ्यास ।
सिधने पर अभ्यास के, रहे न कोई निराश ।।
भक्ति में प्रीति बिना, हो न सके आभास ।
बिना सिधे अभ्यास के, जमे नहीं विश्वास ।।
सत्य वाणी से स्तुति, करे न रहे हताश ।
जहां श्रद्धा और भक्ति है, होता वहीं विकास ।।
स्मरण करता जो सदा, करता उस में वास ।
सच्चे भक्तों साधों की, पूरी करता आस ।।
शीघ्र योग सिद्धि करे, ईश्वर बारह मास ।
करता है प्रदान उसे, चरणों में आवास ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-४४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

युद्ध कला में वीरों का, विधान हो इस प्रकार ।
इक वर्ग वैदिक में हो चतुर, पड़े न कोई बीमार ।।
दूसरा वर्ग करता रहे, वीरों को ललकार ।
हर्ष उल्लास में जीत की, बुलायें जय-जय कार ।।
तीसरा वर्ग सब शत्रुओं को, बतलाये फटकार ।
चोथा उन के विनाश को, करे भरपूर प्रहार ।।
इस नीति का जब लिया, जायेगा आधार ।
अवश्य अवश्य हो पायेगा, शत्रु का संघार ।।
युद्ध कला का है किया, इस भाँति विस्तार ।
विजय श्री पाये वही, जाने जो इसकी सार ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-४५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा प्रजा पालन करे, समझ उसे सन्तान ।
सेना के सब वीरों का, सदा करे सम्मान ।।
सदा रहें प्रसन्न वह, लड़ायें इस में जान ।
ईश्वर तुल्य राजा करे, सब को न्याय प्रदान ।।

राजा राज्य सभाओं से, करवाये सब काम ।
सभी सभाओं में लिए, जायें लोग विद्वान ।।
राज्य सभा, विद्या सभा, का होवे निर्माण ।
धर्म सभा निर्धारित करे, धर्म अनुकूल विधान ।।

राज्य कार्य, प्रचार में, आये नहीं विवधान ।
सत्य असत्य की हो सके, हर इक को पहचान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-४६ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

उत्साही पुरुष प्रयत्न से, जो चाहे सो पाये ।
ऋषियों के योग विज्ञान से, हर सिद्धि दर्शाये ।।
शुभ गुण कर्म स्वभाव को, हर विद्वान अपनाये ।
विपरीत कभी धर्म मार्ग के, इक पग नहीं उठाये ।।

कृपणता दानी में कभी, भूल से भी नहीं आये ।
दक्षणा में प्रशंसनीय, पदार्थ सदा दिलवाये ।।
सुपात्र उसके द्वार से, कभी न खाली जाये ।
पर उपकार के कार्य में, जितना चाहे लगाये ।।

अचल कीर्ति पाये वह, जान जमाना जाये ।
जिधर निकल जाये जहां, आंखों पर बिठलाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ७-४७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

योग्य विद्वानों की परीक्षा ले, अध्यापन कार्य करायें ।
उन से अपने बच्चों को, सुशिक्षा दिलवायें ।।
सर्वोत्तम विद्वान ही, सत्य का बोध करायें ।
पढ़ने वालों के लिए, वास्तविक सुख दर्शायें ।
योग विद्या बल प्राप्ति, के सब राज़ बतायें ।
विद्या की उपयोग्यता, हृदयों में बिठलायें ।।
सर्दी गरमी सह सकें, वह जीना सिखलायें ।
मोक्ष के परमानन्द को, सब को प्राप्त करायें ।।
तीनों अवस्थाओं में सुख मिले, ऐसा योग बतायें ।
प्रीति पूर्वक नाव को, भव से पार लगायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ७-४८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

कर्म फल दाता है प्रभु, भली भाँति लें ज्ञान ।
भलाई और बुराई की, खूब करें पहचान ।।
करें धर्म की कामना, हो सब का कल्याण ।
कोई शत्रु न रहे, ऐसा करें विधान ।
वेदानुकूल ही धर्म है, है यह ही सद्ज्ञान ।
मानव जाति का यही, धर्म है और ईमान ।।
आचरण वैसा ही करें, प्रभु की आज्ञा मान ।
मन वांच्छित मिल जायेगा, सुख का हर सामान ।।
स्वार्थ का जीना छोड़कर, करें सब का उत्थान ।
कुशल रखें व्यवहार को, सब हैं एक समान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय · · · ·

यजुर्वेद ८-१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

चौबीस वर्ष ब्रह्मचर्य का, पालन करें कन्यायें ।
पूर्ण रूप गुण युक्त को, अपना पति बनायें ।।

अड़तालीस का ब्रह्मचर्य, युवा लोग अपनायें।
शास्त्रीय रीति नीति से, उनका गृहस्थ चलायें ॥

पति अधिक बल युक्त हों, करें पूरी इच्छायें ।
ऋतू गामी रहते हुये, अपना फर्ज निभायें ।।

उत्तम संतानें बना, शिक्षा उन्हें दिलायें।
प्रीति पूर्वक रमण कर, ऐश्वर्य सदा बढ़ायें ॥

अप्रीति व्यभिचार के, दोष न आने पायें ।
सब प्रकार सब काल में, रक्षा करें करायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ८-२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

युवा स्त्रि छल कपट रहित, को ही पति बनायें ।
भूल से भी किसी ओर को, दिल में नहीं बसायें ।।

शुद्ध आचरण अपना रखें, विजय इंद्रियों पर पायें।
औद्योगिक और धार्मिक, अपनी वृति बनायें ॥

अपने किसी भी दोष को, कभी भी नहीं छुपायें ।
कर्मशील रहते हुये, दान वृति अपनायें ।।

उत्तम शिक्षा को सदा, धारण करें करायें।
उत्तम धन ऐश्वर्य को, कर पुरुषार्थ बढ़ायें ॥

ऐसे ही विद्वान से, मिल कर गृहस्थ चलायें ।
आनन्दित दोनों रहें, कटुता न अपनायें ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जो प्रमाद करता नहीं, सदा वही सुख पाये ।
वर्तमात और भविष्य को, उज्जवल वही बनाये ।।

विद्या के प्रकाश को, जो सदैव फैलाये ।
धर्म युक्त हर काम की, सिद्धि करे कराये ।।

मन आदि सब इन्द्रियों, पर अधिकार जमाये ।
व्यवहारों में कुशलता, हर पल हर घड़ी लाये ।।

अविनाशी सुख प्राप्त कर, जीवन सफल बनाये ।
सभी आश्रमों को सदा, प्रेम सहित अपनाये ।।

श्रुतू गामी दृढ़ इन्द्रिय को, अपना पति बनाये ।
ऐसी देवी ही सदा, मन वांच्छित फल पाये ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

पति पत्नि दोनों सदा, शुभ गुण हो अपनायें ।
गृह आश्रम व्यवहार को, उज्जवल सदा बनायें ।।

उत्तम शिक्षा विज्ञान को, अपना लक्ष्य बनायें ।
सद व्यवहारों से सदा, अपना आप सजायें ।।

श्रेष्ठ बुद्धि सन्मार्ग की, वृतिया रखें रखायें ।
विद्या का भूषण पहन, आप्त पुरुष कहलायें ।।

स्त्री पुरुष सुख चैन से, अपना गृहस्थ निभायें ।
औरों के सुख के लिये, हर पल कदम बढ़ायें ।।

पर उपकार की भावना, दिल से नहीं भुलायें ।
सौहार्दिता के फूलों की, पहनें सदा मालायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब गृहस्थियों को उचित है, परस्पर प्रीत बढ़ायें।
परीक्षाओं के बाद ही, स्वयंवर विवाह रचायें।।
सत्य आचरणों को सदा, जीवन में अपनायें।
उत्तम धन सन्तानों को, सदैव प्राप्त करायें।।
उन्नति के पथ पर बढ़ें, जीवन सुखी बनायें।
सोमलता सी औषधि, पीयें और पिलवायें।
वाणी में हो मधुर्ता, सत्य मार्ग अपनायें।
वृद्ध अवस्था के कष्ट से, सन्तानें छुड़वायें।
उत्तम धन को प्राप्त कर, वंश का नाम बढ़ायें।
विद्या, ज्ञान की सुगन्ध से, जीवन को महकायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ८-६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

गृहस्थ जनों को चाहिये, समस्त ऐश्वर्य बढ़ायें।
दिन प्रति दिन सबके लिये,सुख की झड़ी लगायें।।
प्रभु कृपा से प्रशंसनीय, मंगल कार्य अपनायें।
बुद्धिमान ग्रह आश्रमी, सुख कारी कहलायें।।
भूत भविष्यत वर्तमान, कष्ट नहीं दे पायें।
सदा पूर्ण प्रयत्न से, इन्हें अनुकूल बनायें।।
बीते की चिन्ता नहीं, वर्तमान सुलझायें।
भविष्य से जोड़ें नहीं, कभी अनुचित आशायें।।
नियमों का पालन करें, सत्य मार्ग अपनायें।
अत्यन्त सुख की प्राप्ति, कर दुख से तर जायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ८-७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विवाहित स्त्री पुरुष, नियम उप नियम निभायें ।
जो देता सन्तान है, उस को इष्ट बनायें ॥
अन्न धन के भंडारों से, घर को युक्त बनायें ।
दिव्य ऐश्वर्यों से सदा, परम सुखों को पायें ॥
गृह आश्रम पालन करें, कष्टों में मुस्कायें ।
सदैव स्वयं प्रसन्न रहें, सब को सुखी बनायें ॥
परस्पर के लाभ के, निज व्यवहार बनायें ।
राष्ट्र हितेषी विद्या से, युक्त सन्तान बनायें ॥
अपना और ओरों का भी, भला हमेशा चाहें ।
प्रीति रीति की नीति की, दुनियां नई बसायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ८-८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वीर्यवान विद्वान को, स्त्री पति बनाये ।
सब ऋतुओं में सुख मिले, गृह को सदा सजाये ॥
नित्य प्रति प्रतिष्ठा बढ़े, ऐसे कर्म कमाये ।
शुद्ध विचारों से भरा, चित्त से चित्त मिलाये ॥
आपसी आवश्यकताओं को, पूरा सदा कराये ।
दिव्य सुखों को स्वयं भी, भोगे और भुगाये ॥
विद्वानों का संग करे, घर में उन्हें बुलाये ।
धर्म मार्ग को जानकर, गृहस्थ को सुखी बनाये ॥
गृहस्थ सबका आधार है, हर कोई आश्रय पाये ।
स्त्री पुरुष का फर्ज है, इस को स्वर्ग बनाये ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

स्त्री पुरुष को उचित है, करें खूब पहचान।
दोनों ही हों पुष्ट और, हों गुण कर्म समान ॥
हों आरोग्य पुरुषार्थी, विद्वान और बलवान।
तभी उपलब्ध हो सके, दिव्य गुण युक्त संतान ॥
दोनों विद्या युक्त हों, जानें सकल विधान।
धर्म अर्थ काम और मोक्ष की, सिद्धि हो आसान ॥
परस्पर का सहयोग हो, घर हो स्वर्ग समान।
सुखों की वर्षा करें, गे स्वयं भगवान।
निरन्तर चिन्तन करें, सोयें न चादर तान।
इस ही रीति नीति से, मिले सुखों का धाम ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ८-१० (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

ब्रह्मचर्य और विद्या गुण, धारे जो बलवान।
स्त्री पति माने उसे, जो हो वीर्यवान ॥
सत्यवाणी से युक्त हो, करे सोम रस पान।
प्रशंसनीय हो आकृति, दे पाये सन्तान ॥
मर्यादा पालन करे, रति क्रिया को जान।
नित्य प्रति जुटाये स्वयं, सुख का हर सामान ॥
पर स्त्री इच्छा कभी, करे नहीं इन्सान।
पर पुरुष का कभी स्वप्न में, करे न स्त्री ध्यान ॥
दोनों संयम से रहें, और हों शक्तिमान।
गृहस्थ का यह ही सार है, इसी में है कल्याण ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-११ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सद गुण विद्या युक्त हो, प्रीति से विवाह रचायें ।
स्त्री पुरुष मिलकर सदा, धन ऐश्वर्य बढ़ायें ।।
युवा अवस्था में पहुंचकर, प्रणय सूत्र में बन्ध जायें ।
अच्छे सारथी की तरह, यह रथ सदा चलायें ।।
परम ऐश्वर्य की प्राप्ति, हमेशा करें करायें ।
इक दूजे की प्रेम से, सेवा करें करायें ।।
पूर्ण वेग से लक्ष को, प्राप्त करें करायें ।
यथा योग्य हर एक से, बरतें और बरतायें ।।
विवाह का आनन्द लें, दुनियां नई बसायें ।
साधन इस को मान कर, परम आनन्द को पायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-१२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

पति पत्नि मिल प्रेम से, गृहस्थ का कार्य चलायें ।
आदर और सत्कार से, खायें और खिलायें ।।
इष्ट मित्रों को भी सदा, भोजन पर बुलवायें ।
उन से हर शुभ कार्य में, मित्रता भाव बढ़ायें ।।
ऋग यजु की और साम की, गायें सदा ऋचायें ।
इक दूजे की स्तुति, करें और करवायें ।।
यथा योग्य सत्कार दें, करें धर्म चर्चायें ।
प्रसन्न मुद्रा में रहें, करें दूर शंकायें ।।
सुसंस्कृत वाणी सदा, बोलें और बुलवायें ।
इस भांति इस गृहस्थ को, स्वर्ग समान बनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-१३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों का फर्ज है, गृहस्थों से पाप छुड़ायें ।
उन के अन्दर दान की, भावना सदा जगायें ।।
जाने अनजाने कभी, अशुभ न करें करायें ।
अपने पूर्ण प्रयास से, उत्तम कर्म कमायें ।।
अधर्म और अपराध को, छोड़ें और छुड़वायें ।
सुखों की वर्षा सदा, सब पर करें करायें ।।
दुष्ट आचरण से दुख मिले, समझें और समझायें ।
भूल से भी इस मार्ग पर, इक पग नहीं बढ़ायें ।।
धर्म कार्यों में सभी, पूरी रुचि दिखायें ।
मन वांच्छित सुख सम्पदा, और सब खुशियां पायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-१४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को उचित है, विद्या पढ़े पढ़ायें ।
विधि पूर्वक अन्न व जल, सेवन करें करायें ।।
शरीरों को निरोग कर, मन बलवान बनायें ।
प्रवेश करा कर धर्म में, मन वांच्छित सुख पायें ।।
कमियों को पूरा करें, उन्नति पथ अपनायें ।
जीवन की न्यूनताओं को, परिपूर्ण कर पायें ।।
मित्रों के सुख के लिए, सदैव हाथ बढ़ायें ।
सुखी बसे संसार सब, ऐसे कर्म कमायें ।।
विद्या के प्रकाश को, कुल जग में फैलायें ।
ब्रह्मचर्य व्रत धार कर, जीवन सफल बनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ८-१५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सत्य विद्या ऐश्वर्य से, युक्त हैं जो विद्वान ।
गृहस्थी जन उन का करें, हर पल घड़ी सम्मान ।।
बच्चों को शिक्षित करें, वेद का करें बखान ।
कुशल हों जो व्यवहार में, करें यज्ञ अनुष्ठान ।।
वाणी हो जिनकी मधुर, सिखायें जो विज्ञान ।
श्रेष्ठ बुद्धि से नित करें, जीवों का कल्याण ।।
सत्य का जो पालन करें, सुख का करें सामान ।
सब को सब प्रकार से, करायें अमृत पान ।।
प्रजाओं को सम्मार्ग पर, चला करें गुणवान ।
गृहस्थी जन उनका करें, आदर और सम्मान ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-१६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

आप्त पुरुष की सुमति, विद्या प्राप्त कराये ।
कला और विज्ञान में, सब की रुचि बढ़ाये ।।
अविद्या आदि दोषों से, मुक्ति सदा दिलाये ।
कल्याण कारी रात दिन, सब के लिए बनाये ।।
हानिकारक कर्म से, सब को सदा छुड़ाये ।
पुष्टि कारक द्रव्यों को, सब को प्राप्त कराये ।।
सब मनुष्यों को उचित है, इसी का करें उपाय ।
धर्म अर्थ काम मोक्ष की, सिद्धि सरल हो जाये ।।
सज्जन पुरुषों के संग से, ज्ञान बढ़ाया जाये ।
इस भाँति मानव जनम, सफल बनाया जाये ।।

बोलिए वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-१७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब गृहस्थों को उचित है, वह रीति अपनायें ।
अच्छे गुण धारण करें, औरों को करवायें ।।
ऐश्वर्यों की उन्नति, करें व उन्हें बढ़ायें ।
योग्य पुरुषों को यथोचित, सदैव दान दिलायें ।।
दुखियों की सहायता करें, दुख से उन्हें छुड़ायें ।
प्रजाओं का पालन करें, उनको योग्य बनायें ।।
शत्रुओं को जीतें सदा, विजय श्री को पायें ।
शरीर आत्मिक बल सम्पदा, सबको पुष्ट बनायें ।।
उत्तम सन्तानें बना, अपनायें सत्य क्रियायें ।
गृह आश्रम को प्रीति से, सेवन करें करायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-१८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

श्रेष्ठ गुणों में रमण कर, कुशल व्यवहार बनायें ।
उत्तम क्रिया और विद्या से, ऐश्वर्य सदा बढ़ायें ।।
जैसे पिता, पति, श्वसुर, पालन करें करायें ।
पुत्र सखा कन्याओं का, आदर करें करायें ।।
पुत्र आदि भी वृद्धों की, सेवा करें करायें ।
यथोचित पुरुषार्थ से, अपना फ़र्ज निभायें ।।
भृत्य भी अपने कार्य को, ऐसा कुशल बनायें ।
सभी बड़ें-बूढ़े सदा, आशीषें दिलवायें ।।
आपस में प्रीति रखें, सब को सुखी बनायें ।
आपस के सहयोग से, गृहस्थ को स्वर्ग बनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ८-१९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

अध्यापक दिव्य स्वभाव हो, शुभ गुण प्राप्त कराये।
सबको शिक्षा धर्म की, प्रीति से दिलवाये॥
गृहस्थी अन्न जल के गुणों, से अवगत हो जाये।
स्वभाव रखे निर्मल सदा, वाणी मधुर बनाये॥
सत्य वाणी से यज्ञों को, करे और करवाये।
श्रेष्ठ बुद्धि की सिद्धि से, सबको सुखी बनाये॥
हर बालक सत्य धर्म का, सत्यव्रति बन जाये।
इसके हो अनुसार सब, कर्म करे करवाये॥
हर व्यक्ति संसार का, जीवन में सुख पाये।
और नहीं इसके बिना, जग में कोई उपाये॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ८-२० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

गृह आश्रमी यज्ञ में, परम सिद्धि को पायें।
विद्या युक्त क्रियाओं को, करें और करवायें॥
शास्त्रोक्त समृद्धि को, प्राप्त करें करवायें।
दान आदि सब श्रेष्ठ गुण, जीवन में अपनायें॥
सतसंग का सेवन करें, निश्चय करें करायें।
विजय पायें सब द्वन्दों पर, दूर करें शंकायें॥
हर रिद्धि और सिद्धि को, प्राप्त करें करवायें।
शान्ति आदि सुख कारी गुण, सबको सदा बतायें॥
जिसमें भी हों प्रवृत, आगे उसे बढ़ायें।
चतुराई से उन्नति, के शिखरों को पायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ८-२१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों को उचित है, सत्य को सदा बढ़ायें।
भूगर्भ की विद्यायें सब, जानें और जनायें।।
उत्तम राज्य की पृथ्वी पर, व्यवस्था करवायें।
उत्तम कार्यों में सदा, सबकी रुचि बढ़ायें।।
विद्या बोध सम्पन्न करें, इन्द्रियां वश में लायें।
गृहस्थों के सुख के लिये, हर साधन अपनायें।।
पर उपकारी सब बनें, ऐसी दें शिक्षायें।
व्यवहारों में उन्नति, सारे करें करायें।।
प्राणी मात्र सुख से रहें, ऐसी विधि चलायें।
उत्तम-उत्तम यज्ञों को, सदैव करें करायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ८-२२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा और प्रजा सदा, मिलकर कदम बढ़ायें।
अपने-अपने धर्म को, भली प्रकार निभायें।।
गृह आश्रमी सतकर्मों में, संगत सदा बढ़ायें।
अपने कर्म स्वभाव को, प्रशंसनीय कर दिखलायें।।
ऋग, यजु, साम और अथर्व की, गायें मधुर ऋचायें।
आत्मा और शरीर को, बलों से युक्त बनायें।।
प्रजा की रक्षा के निमित, कलायें सब अपनायें।
सत्य विद्या और न्याय से, यज्ञ करें करवायें।।
राज्याध्यक्ष अपनी प्रजा, को सन्तुष्ट बनायें।
श्रेष्ठ विद्या फूले फले, सारे लाभ उठायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ८-२३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सभापति गुण युक्त हो, दिलाये सबको न्याये ।
प्रजा जनों को धर्म का, मार्ग सदा दिखलाये ।।
किसी भी हालत में कभी, झूठ नहीं अपनाये ।
खोटे वचन कभी कहीं, वाणी पर नहीं लाये ।।
धर्मात्माओं को कोई, कष्ट न कभी पहुंचाये ।
क्रोध रूपि विषधर कभी, खुद को नहीं बनाये ।।
राजा हो या हो प्रजा, अधर्म करे दण्ड पाये ।
कोई भी अपराध के, दण्ड से न बच पाये ।।
वज्र रूप धारण करे, शत्रु न आंख मिलाये ।
सारी प्रजा प्रीति सहित, अपना फर्ज निभाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-२४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

गृहस्थी अग्नि और जल, की जानें क्रियायें ।
इनके गुणों को जानकर, सद व्यवहार अपनायें ।।
मेघों से अन्न बरसता, मन में इसे बिठायें ।
स्वर्ण दुनियां इसको कहे, इसको नहीं भुलायें ।।
इस विद्या को जानकर, घर-घर अलख जगायें ।
जन-जन तक पहुंचें स्वयं, घी और शक्कर खायें ।।
देह को साधन मानकर, मंजिल तक ले जायें ।
स्वस्थ इसे रखें सदा, सदैव पुष्ट बनायें ।।
सूझ बूझ से काम लें, सारे काम चलायें ।
लाभान्वित सबको करें, यह जल की धारायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-२५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

गृहस्थियों को विद्वान जन, विद्या ग्रहण करायें।
जिसको पाकर वह सदा, गृह के कार्य चलायें॥
यत्न से सिद्धि प्राप्त कर, बल और पराक्रम पायें।
आत्मिक बल को प्राप्त कर, जीवन सफल बनायें॥
सन्तुष्टि के वास्ते, सोम को पियें पिलायें।
जिन वस्तुओं से सुख मिले, सबको सदा खिलायें॥
वेद के वचनों को सदा, सुनें और सुनवायें।
ईश्वर आज्ञा में सदा, सारे चलें चलायें॥
अच्छी-अच्छी बातों में, सारे रुचि दिखायें।
जल विद्या को जानकर, मन वांछित सुख पायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-२६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विदुषी स्त्री विद्वान को, विधि पूर्वक पति बनाये।
उसको आनन्दित करे, अनुकूल उसे बनाये॥
बड़ी प्रसन्नता से सदा, योग्य सन्तान बनाये।
विधि पूर्वक गर्भ को, धारण करे कराये॥
उसकी रक्षा के लिये, उत्तम करे उपाये।
अपने शुद्ध विचारों से, शिशु को युक्त बनाये॥
पति का भी यह फर्ज़ है, सबको सुख पहुंचाये।
उत्तम रीति-नीति से, घर को सदा चलाये॥
प्रसन्नता से सुख मिले, मन में यही बिठाये।
नित्य प्रति उत्साह से, हँसे और हँसाये॥
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ८-२७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

स्त्री अपने पति देव से, नित्य प्रति यह चाहे ।
दोनों आनन्दित रहें, ऐसा करे उपाये ।।
पति भी अपनी स्त्री को, हृदय में बिठलाये ।
अपने पूर्ण पुरुषार्थ से, उसको सुखी बनाये ।।
धर्म पूर्वक सब द्रव्यों को, संचय करे कराये ।
विद्वानों के बीच में, तेजस्वी कहलाये ।।
कामी पुरुष का संग कभी, मुझको नहीं डिगाये ।
ऐसा कोई अपराध भी, मुझसे न हो जाये ।।
ऐसे दुष्टों से सदा, मेरी लाज बचाये ।
पूरा कर कर्तव्य को, मन्द-मन्द मुस्काये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-२८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ब्रह्मचर्य व्रत धार कर, शरीर पुष्ट बनायें ।
स्त्री पुरुष दोनों सदा, आदर्श विवाह रचायें ।।
गर्भ स्थिति में कभी, गफलत न कर जायें ।
पूर्ण समय दस मास तक, रक्षा करें करायें ।।
अपने सद व्यवहार से, बुद्धि युक्त बनायें ।
सद विचारों के द्वारा भी, उत्तम उसे बनायें ।।
क्रम-क्रम से बढ़ता रहे, समन्दर सा गहन बनायें ।
वायु सा बलवान हो, ऐसी दें शिक्षायें ।।
कोई अनियमता न करें, संयम गुण अपनायें ।
योग्य स्वस्थ सुन्दर, शिशु सुदेन में दे जायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ८-२९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

गृहस्थी पुरुष जितेन्द्रीय, और हो वीर्यवान ।
इसकी शुद्धि के लिये, रखे हमेशा ध्यान ॥
पुष्ट करे इसको सदा, और बने बलवान ।
स्त्री भी ऐसा करे, करें फिर गर्भाधान ॥

स्थिति और आरोग्यता, का हो पूरा ज्ञान ।
इसके पूरे ध्यान से, बने योग्य सन्तान ॥
स्त्री पुरुष आनन्द से, पायेंगे वरदान ।
रूपवान गुण कर्म में, योद्धा वीर महान ॥

निश्चय है यह ही विधि, बने वह बुद्धिमान ।
चन्दा सी ले सोम्यता, चमके सूर्य समान ॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-३० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

स्त्री पुरुष गृहस्थ की, विद्या पढ़ें पढ़ायें ।
इस सब पर आरुढ़ रह, प्रवेश इसमें पायें ॥
जानकारियां प्राप्त कर, तब सन्तान बनायें ।
उत्तम शिक्षायें दिला, नियम उप नियम सिखायें ॥
ब्रह्मचर्य पालन करें, सेवा धर्म कमायें ।
अंगों और उप अंगों में, उन्हें प्रवीण बनायें ॥
उत्तम विद्यायें सिखा, उनको सुखी बनायें ।
विश्व शान्ति की तभी, पूरी हों आशायें ॥
हर प्राणी संसार का, मांगे यही दुआयें ।
ऐसी सन्तानें सभी, स्त्री पुरुष बनायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ८-३१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रशंसा के योग्य है, गृहस्थ जो है विद्वान ।
घर में दिव्य स्वभाव का, करे जो सदा बखान ।।
स्वर्ण से घर भरपूर हो, स्वयं गुणों की खान ।
उत्तम रीति नीति का, करता रहे विधान ।।
नम्र सौम्य अपनी रखे, मीठी मधुर जुबान ।
पृथ्वी का पालन करे, इतना हो बलवान ।।
विद्वानों का संग करे, करे वेद का गान ।
ऐसा गृहस्थी पा के, मुंह मांगा वरदान ।।
यमों नियमों का पालन करे, सुख का करे सामान ।
ऐसे गृहस्थी के लिये, गृहस्थ में है आराम ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-३२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

स्त्री पुरुष दोनों सदा, ऐसा गृहस्थ निभायें ।
दिव्य पुरुष की आकृति, देख पति में पायें ।।
पत्नियां शील धारणा करें, प्रशंसनीय कहलायें ।
क्षमा धीरता की सभी, हों उनमें क्षमतायें ।।
व्यवहारों की कुशलता, यह दोनों अपनायें ।
स्वयं रहें सन्तुष्ट और, सबको सुखी बनायें ।।
विद्वानों की सेवा कर, उनसे शोभा पायें ।
प्रसन्नचित्त हर पल रहें, ऐसा गृहस्थ चलायें ।।
उत्तम गुण धारण करें, सदैव साख बढ़ायें ।
मन को कर्म और वचन को, एक समान बनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ८-३३ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

गृहस्थी मेघों की तरह, सब पर सुख बरसाये ।
आकर्षण का गुण सदा, अपने अन्दर लाये ।।
नीरसता आये अगर, ज़रा नहीं घबराये ।
वेद वाणी से शांत हो, शरण प्रभू की आये ।।

सोलह कलायें पूर्ण कर, अपना गृहस्थ चलाये ।
परम ऐश्वर्यों से सदा, परम सुखों को पाये ।।
वेदोक्त हों व्यवहार सब, इन्हीं को पढ़े पढ़ाये ।
लोक भी और परलोक भी, सुधर इसी से जाये ।।

गृहस्थ आश्रम ही सभी, को आश्रय दिलवाये ।
उत्तम रीति से सदा, इसे चलाया जाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-३४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

नाश शत्रुओं का करे, वीर योद्धा बलवान ।
मंजिल पर ले जाये जो, पास हो सदा विमान ।।
विनय पत्र सबके सुने, करे न्याय प्रदान ।
ग्रहण करे सब वस्तुयें, जीते हर मैदान ।।

सोलह कलाओं से पूर्ण हो, सुने वेद का गान ।
परम ऐश्वर्यों से भरा, हो घर का दालान ।।
सेना सुसज्जित रखे, चले जो छाती तान ।
आनन्दित सारे रहें, पायें सभी सम्मान ।।

राज्य की रक्षा में सभी, हो जायें इक जान ।
सबको मिल पाये तभी, सभी सुखों की खान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-३५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

रक्षा हो ऐश्वर्य की, और शत्रु का नाश।
राज्याध्यक्ष ऐसे करे, राज्य का सदा विकास ॥
शूर वीर सेना रखे, रहे न कभी हताष।
वि ानों की राय पर, करे सदा विश्वास ॥
साधारण लोगों को भी, रखे हमेशा साथ।
जनता में कोई रहे, कहीं न कभी निराश ॥
राज्य धर्म में चतुर की, हर पल करे तलाश।
सोलह कला से युक्त हो, न हो धन का दास ॥
ऐसे विधि विधान से, रहे सुखों का वास।
संकट में खोये नहीं, अपने होश हवास ॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ८-३६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

उत्तम ईश्वर से नहीं, और न कोई समान।
सब लोकों में व्याप्त है, देता सबको प्राण ॥
रचता वह संसार का, करता है कल्याण।
सब लोगों को उचित है, करें उसे प्रणाम ॥
स्वामो वह संसार का, हो रहा है द्युतिमान।
सूर्य बिजली और अग्नि को, कर रहा प्रकाशमान ॥
अविनाशी चेतन्य है, और सुखों की खान।
शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वरूप है, ऐसा उसको मान ॥
उसी की करें आराधना, है सर्व शक्तिमान।
और किसी को हृदय में, कभी न दें स्थान ॥
बोलिये वेद धर्म की जय...

यजुर्वेद ८-३७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

चक्रवर्ती और माण्डलिक, राजा राज्य चलायें ।
उत्तम न्याय व्यवस्था से, जीत दिलों को पायें ।।

नम्रता और सुशीलता, के गुण यह अपनायें ।
वीरता से रक्षा करें, सुरक्षित रहें सीमायें ।।

यथा योग्य कर प्राप्त कर, विद्या पढ़े पढ़ायें ।
सत्याचरण सत्यवचन में, कर कमाल दिखलायें ।।

धर्म अर्थ की कामना, पूरी करें करायें ।
प्रजा जनों को हर तरह, सन्तुष्टि दिलवायें ।।

कठिनाई आये कोई, मिलकर चलें चलायें ।
इस सारे संसार को, आनन्द युक्त बनायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-३८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज्य जनों को उचित है, शुभ गुण सदा बढ़ायें ।
उत्तम-उत्तम विद्यायें सब, स्वयं पढ़े पढ़ायें ।।

सभी लोग इस कार्य में, पूरी रुचि दिखायें ।
सु इच्छा से कर्म शुभ, सारे करें करायें ।।

इन ही का प्रचार सब, करें और करवायें ।
उत्तम पराक्रम से सदा, गायें वेद ऋचायें ।।

आये सब में तेज बल, विद्या-अध्ययन करायें ।
विचारशील हर पुरुष की, रीति नीति अपनायें ।।

श्रेष्ठ गुण कर्म प्रचार में, सभी लोग जुट जायें ।
इस सारे संसार में, सबको सुखी बनायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-३९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज्य पुरुषों को योग्य है, भोजन वस्त्र जुटायें ।
शारीरिक और आत्मिक, उन्नति करें करायें ।।

व्यभिचारी दोषी कभी, दंड से न बच पायें ।
प्रवृत प्रजा के जन कभी, इनमें न हो पायें ।।

प्रभु उपासना में लगें, व्यवहार कुशल बनायें ।
व्यवस्था में हर घड़ी, हर पल चलते जायें ।।

सेना सुसज्जित रखें, विजयश्री को पायें ।
सभी दिशायें राज्य की, जय जयकार बुलायें ।।

भय खायें शत्रु सभी, आंख मिला नहीं पायें ।
स्वीकारें नियम उपनियम, सहयोगी बन जायें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ८-४० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे सूर्य किरणें सदा, करती हैं प्रकाश ।
वैसे राजा और प्रजा, गुणों का करें विकास ।।

शुभ कर्मों से उनके सदा, चमकें धरती आकाश ।
बन उत्साही पुरुषार्थी, करें योग अभ्यास ।।

धर्म अर्थ काम और मोक्ष का, हो इनको आभास ।
उन्नति करें समाज की, बनें न धन के दास ।।

शरीर आत्मा और समाज की, मिटायें हमेशा प्यास ।
आलस्य को त्यागें सदा, रहें न कभी निराश ।।

यत्न सदा करते रहें, पूरी होगी आस ।
रहे न फिर संसार में, कोई कहीं हताश ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-४१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

वेद वेता जैसे चलें, और चलें विद्वान ।
वैसे प्राप्त सभी करें, परम पिता का ज्ञान ।।
जैसे वह सेवन करें, करें प्रभु गुणगान ।
वैसे ही सारे करें, दिल से उसका ध्यान ।।

उपासनीय है केवल वही, करते शास्त्र बखान ।
मार्ग और कोई नहीं, और न कोई निदान ।।
उसी की सिद्धि सब करें, दुनियां के विज्ञान ।
यह ही उत्तम धर्म है, और यही ईमान ।।

कण-कण में है रम रहा, अनुपम है प्रमाण ।
कार्य कारण से कर सके, हर व्यक्ति अनुमान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-४२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वान स्त्रियों को योग्य है, स्वयं जैसा अन्न खायें ।
ऐसा परिष्कृत अन्न सदा, पतियों को खिलवायें ।।
इससे विद्या बुद्धि बल, उनका सदा बढ़ायें ।
घर को अन्न धन से भरें, इसको खूब सजायें ।।

चहों ओर सुगन्धि रहे, सोम रस पियें पिलायें ।
वृष्टि सुख की हो सदा, भाग सभी दुख जायें ।।
पराक्रम से निज गृहस्थ को, सुचारू रूप दिलायें ।
शोभा ऐसे गृहस्थ की, बढ़ायें सभी दिशायें ।।

प्रशंसनीय गुण युक्त हों, विद्या पढ़े पढ़ायें ।
इस विद्या प्रकाश को, कुल जग में फैलायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-४३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों से शिक्षा लें, औरों को दिलवायें।
गृहणियां घर की इस तरह, अधर्म से बच जायें ॥
अडिग सदा रहें धर्म पर, आगे कदम बढ़ायें।
बालकों और कन्याओं को, यह भूषण पहनायें ॥
श्रेष्ठ शील गुण युक्त हों, रमण करें करवायें।
वेद ऋचायें खुद पढ़े, औरों को पढ़वायें ॥
अत्यन्त आनन्द प्राप्त कर, औरों को करवायें।
ज्ञाता हों विज्ञान की, सबको बोध करायें ॥
अपने पतियों की सदा, पूरी करें आशायें।
इस भांति विकसित करें, जग में सभी कलायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-४४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा दुष्ट को दण्ड दे, रखे इस प्रकार।
देख के इसको शिक्षायें, ले सारा संसार ॥
शत्रुओं को जीते सदा, पापी का करे सुधार।
अति खोटा अन्यायी जो, तुरन्त उसे दे मार ॥
या उसे देश निकाला दे, निश्चिंत हो सरकार।
चैन से सुख से सो सके, फिर हर इक परिवार ॥
सूर्य मिटाता जिस तरह, दुनियां से अन्धकार।
दे मिटा इस संसार से, सारा भ्रष्टाचार ॥
अधर्म कहीं कोई न करे, करे न अत्याचार।
उत्तम गुणों का राज्य में, हो पूरा विस्तार ॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-४५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सभापति जो कर्मों को, जान के करता न्याय ।
प्रजा जनों का हर तरह, रहता सदा सहाये ।।
किसी भी हालत में कभी, छल को न अपनाये ।
अपनाये जिसके सहाय से, मोक्ष सिद्धि को पाये ।।

धर्मशील होवे प्रजा, परमार्थ अपनाये ।
व्यवहारों की सिद्धि से, दुनियां शीष झुकाये ।।
सब कलाओं में कुशलता, हर शिल्पी अपनाये ।
आदर और सत्कार वह, सारी प्रजा से पाये ।।

परम पिता के द्वार पर, हर इक व्यक्ति जाये ।
कर्म साधना प्रेरणा, से वांछित फल पाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-४६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

बुद्धिजीवी ज्ञानी जन, राज्य अध्यक्ष बनायें ।
प्रजा जनों की रक्षा की, जाने जो सभी कलायें ।।
सारे प्रजा जन पुरखों की, मानें सब शिक्षायें ।
सभापति सब दुष्टों को, यथोचित दण्ड दिलायें ।

अपनी व्यवस्थाओं में, चमत्कार दिखलायें ।
अनेक साधन राज्य की, रक्षा के अपनायें ।।
सारे प्रजा जन भी सदा, उसका साथ निभायें ।
धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की, सिद्धि सभी कर पायें ।

राज्य की रक्षा में जुटी, रहें सभी सेनायें ।
प्रजा के सारे लोग फिर, मन वांछित सुख पायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ८-४७ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

सब मनुष्यों को उचित है, वह शिक्षक अपनायें।
ऋग्वेद आदि वेदों की, क्रिया का बोध करायें।।
पदार्थ विद्या और अग्नि का, साधन रूप समझायें।
जो सबको दिलवा सकें, अच्छी-अच्छी शिक्षायें।।
किसी को शिक्षा के बिना, सूझ न पायें राहें।
खड़ी करे अज्ञानता, पग-पग पर बाधायें।।
दिव्य गुण कर्म स्वभाव का, सबको ज्ञान दिलाये।
त्रिष्टुप गायत्री छन्द की, बारीकी समझायें।।
परम ऐश्वर्य की प्राप्ति, करें, और करवायें।
सभी से अपनी विद्वता, को स्वीकार करायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-४८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सूर्य की किरणें जिस तरह, पदार्थ शुद्ध बनायें।
दुष्ट पुरुष को सन्मार्ग पर, लायें अच्छी शिक्षायें।।
या स्त्रियां उपदेश से, समझा इनको पायें।
या फिर राज्य दरबार की, रोकें इन्हें सजायें।
पुरुषों को यह उचित है, मन नहीं कभी डिगायें।
व्यभिचार आदि दोषों को, भूल से न अपनायें।।
शरीर आत्मा का बल कभी, व्यर्थ नहीं लुटायें।
उत्तम चोला है मिला, निष्फल नहीं बनायें।।
धर्म अर्थ काम और मोक्ष की, सिद्धि न कर पायें।
दुष्ट पुरुष संसार में, सिर धुन कर पछतायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-४९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रजा जनों को उचित है, राजा उसे बनायें।
उत्तम गुण सम्पन्न को, शासन पर बिठलायें ।।
हमेशा गुण वर्णन करें, जिसके सभी दिशायें।
विद्या न्याय और वीरता, को सब शीष झुकायें ।।
मित्र भाव बरते सदा, नियुक्त करे सभायें।
बल पराक्रम और धैर्य की, मिलें नहीं उपमायें ।।
हो जितेन्द्रीय आरोग्य और, जाने वेद ऋचायें।
प्रीति की रीति पर रहें, मोहित सभी प्रजायें ।।
प्रशंसा अर्जित करे, महकें सदा हवायें।
सुन्दर रूप और तेज की, प्राप्त करें प्रतिभायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ८-५० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा दिव्य गुण सम्पन्न हो, ऐश्वर्य सदा बढ़ाये।
रक्षा के व्यवहार में, योग्यता सदा दिखाये ।।
दान शील जितेन्द्रीय बन, परम ऐश्वर्य को पाये।
धार्मिक विद्वानों के संग, सदैव प्रेम बढ़ाये ।।
करे विद्या अध्ययन और, सर्वत्र प्रकाश फैलाये।
जैसे तैसे हो सके, सबको मित्र बनाये ।।
जाने हर विज्ञान, को इसका करे उपाये।
आचरण को निर्मल करे, सबका बने सहाये ।।
बिना इसके सन्मार्ग का, पता नहीं लग पाये।
उपलब्धि भी लक्ष, की सम्भव हो नहीं पाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-५१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा और सारी प्रजा, तब तक न सुख पायें।
पिता पुत्र के तुल्य अगर, सम्बन्ध नहीं बनायें॥
सत्य धैर्य व्यवहार को, जब तक न अपनायें।
परस्पर के प्यार को, जब तक नहीं बढ़ायें॥
पर उपकार की भावना, दिलों में गर नहीं लायें।
निरन्तर सुख को प्राप्ति, कभो नहीं कर पायें॥
स्त्री पुरुष मिलकर अगर, इसको नहीं बढ़ायें।
स्वर्ग तुल्य इस गृहस्थ को, कभी बना नहीं पायें।
दोनों मिलकर प्रेम से, रमण करे करवायें।
दूधो नहायें पूतों फलें, पहुंच लक्ष पर जायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-५२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

बिना आप्त वि ान के, मोक्ष नहीं मिल पाये।
विद्या रूपो अमूल्य धन, प्राप्त नहीं हो पाये॥
धार्मिक राजा के बिना, रक्षा हो नहीं पाये।
साधनों में निर्विघ्नता, कोई नहीं ला पाये॥
मोक्ष सुख से कोई और सुख, मन को नहीं लुभाये।
पृथ्वी आदि लोकों में, वृद्धि हो नहीं पाये॥
राजा प्रजा व्यवहार को, यज्ञ रूप दिलवाये।
सतसंग और आदेशों से, समृद्ध इसे बनाये॥
विज्ञान के प्रकाश से, लाभ उठाया जाये।
सारे जोवों को सदा, सुखी बनाया जाये॥
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ८-५३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सभापति सेनापति, दोनों हों बलवान ।
आगे बढ़कर सेना की, सम्भाल सकें कमान ।।
युद्ध में प्रवृत हो नहीं, सकते वीर जवान ।
विजयश्री की प्राप्ति, होता मुश्किल काम ।।
शत्रुओं की सेनाओं का, हो नहीं सके निदान ।
प्रजा जनों को मिल नहीं, पाये कभी आराम ।।
प्रजा न सुख से जी सके, चल नहीं सके विधान ।
पालन पोषण का कोई, मिलता न सामान ।।
जब तक सभापति न हो, चतुर व बुद्धिमान ।
सम्भव हो पाये नहीं, जीवों का कल्याण ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ८-५४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर वेद की विद्या का, देता न गर ज्ञान ।
मनुष्य इस संसार का, रह जाता नादान ।।
संसारी इन जीवों का, होता न कल्याण ।
प्राप्त करना सुख चैन का, होता न आसान ।।
गुण और कर्म सुधार का, लेता न कोई नाम ।
फैला रहता हर जगह, अन्धकार अज्ञान ।।
करना प्राप्त सम्भव नहीं, किसी का पदार्थ ज्ञान ।
बिना ज्ञान की प्राप्ति के, मिलता न आराम ।।
कहीं भी सद व्यवहार का, मिलता नहीं निशान ।
प्राणी पशुओं की तरह, फिरते बिना लगाम ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ८-५५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को चाहिये, प्राप्त करें सब ज्ञान।
बिजली पवन और मेघ का, जानें सकल विज्ञान॥
स्तुति योग्य अपने सखा, की कर लें पहचान।
धनंजय वायु की व्याप्ति का, समझें सकल विधान॥
आत्माओं में साक्षी, हर पदार्थ में जान।
सबके निकट मौजूद है, हिरण्य-गर्भ भगवान॥
प्रकाश उसका हर जगह, फैला हुआ समान।
व्यवहारों की सिद्धि से, गृहस्थ चढ़ें परवान॥
क्रिया कुशलता पर सदा, देवें पूरा ध्यान।
उपयोग और प्रयोग से, मिलता है धन धान॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ८-५६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब गृहस्थियों को उचित है, तर्क विधि अपनायें।
वादानुवाद से ऐश्वर्य समूह, का निर्णय करवायें॥
जल समूह में ईंधन क्रिया, को समझें समझायें।
सहकारी पुरुष की तरह, इससे लाभ उठायें॥
प्रशंसा के योग्य हैं, अग्नि की क्रियायें।
ग्रहण करने योग्य हैं, बिजली की सेवायें॥
तर्क बिना देती नहीं, लाभ कभी विद्यायें।
बिन विद्या प्रयोग में, पदार्थ कैसे लायें॥
इस सृष्टि में विचर कर, जान सभी कुछ जायें।
उचित प्रयोग को जानकर, दुनियां सुखी बनायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ८-५७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हे विद्वानों विश्व में, सद व्यवहार अपनाओ।
बिजली सब में व्याप्त है, इसका लाभ उठाओ॥
सूरज सबको कर रहा, है प्रकाशमान।
व्यापक अव्यक्त है हर जगह, पुष्ट किया हुआ प्राण॥
पवित्रता को प्राप्त पराक्रम, इसे लें साधन मान।
सेवन करने योग्य है, दुग्ध इसे लें जान॥
प्राप्त हुये सब पदार्थों को, समझें आश्रय समान।
इनसे शरीर आत्मा समाज को, सदा करें बलवान॥
सेवन करके युक्ति से, हों सब देदीप्यमान।
यह विद्यायें जानकर, सम्भव है कल्याण॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ८-५८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

करें जो अपनी बुद्धि से, विद्या का विस्तार।
उन विद्वानों का सदा, होता है सत्कार॥
सुगन्धि पुष्टि के लिये, करें यज्ञ आधार।
आहूति गुण युक्त पदार्थों की, देवें बारम्बार॥
मधुर रोगनाशक जिन्हें, समझें भली प्रकार।
उन्हीं का करते हैं सदा, यज्ञों में प्रसार॥
शुद्ध वायु से वर्षा जल, बरसे मूसलाधार।
औषधियां फूलें फलें, आये नई बहार॥
उनके सेवन से सदा, उत्तम बनें विचार।
ऐसे यज्ञ कर्ताओं की, प्रशंसा करे संसार॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ८-५९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जिनका जीवन यज्ञ है, यज्ञ ही है व्यवहार ।
ऐसे पवित्र आत्मा, पाते हैं सत्कार ॥

लोकान्तरों में हो रहा, है जिनका विस्तार ।
करते हैं अति श्रेष्ठ को, वह दिल से स्वीकार ॥

अति पराक्रम से जो सदा, रखते नेक विचार ।
और मूर्खों को सदा, देते अयोग्य करार ॥

श्रेष्ठ सज्जनों से सदा, करते दिल से प्यार ।
यज्ञ कर्म को जो बना, लेते हैं आधार ॥

सुखी हमेशा वह रहें, सुखी करें संसार ।
छत्रछाया देता उन्हें, हर पल क्षण करतार ॥

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-६० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जिससे विद्या प्रकाश हो, वह यज्ञ करें करायें ।
दिव्य भोगों की प्राप्ति, हर इक को करवायें ॥

मेघमंडल को प्राप्त हो, वर्षा जल बरसायें ।
भद्र पुरुष संसार के, जिससे लाभ उठायें ॥

बरस के जो संसार का, धन ऐश्वर्य बढ़ायें ।
जिसके करने से सदा, बसंत ऋतुयें आयें ॥

हर ऋतु सुखकारी बने, वह रीति अपनायें ।
मस्त हवायें फैल कर, लोक-लोक में जायें ॥

धर्मात्मा लोगों का सदा, जो कल्याण करायें ।
ऐसी यज्ञ विधि को हम, जीवन अंग बनायें ॥

बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ८-६१ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

आठ वसू ग्यारह रुद्र, आदित्य बारह जान।
इन्द्र प्रजापति, प्रकृति का, प्राप्त करें सब ज्ञान ॥
सुख उत्पत्ति का सदा, सूत्र इन्हें लें मान।
यज्ञों द्वारा देते हैं, अन्न आदि का दान ॥
सत्य क्रियायें ही करें, रखें मधुर ज़बान।
जीवन में करते रहें, यज्ञों का अनुष्ठान ॥
ऐसे यज्ञों में सदा, बिठलायें विद्वान।
तब ही सम्भव हो सके, जीवों का कल्याण ॥
गुण दोषों को जानकर, करें सबकी पहचान।
तब ही सम्भव हो सके, पाना सुख का धाम ॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-६२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को उचित है, यज्ञ करें करवायें।
संगति करने योग्य ही, सब विद्वान बुलायें ॥
सभी दिशाओं में सदा, सुगन्धियां फैलायें।
सामग्री उत्तम प्रकार की, डालें और डलवायें ॥
जिस यज्ञ को आरम्भ करें, पूर्ण उसे करायें।
प्रजाओं को धन धान्य से, समृद्धि प्राप्त करायें ॥
जीवन में करते रहें, सदा यज्ञ क्रियायें।
ऐसे शुभावसर सदा, लौट-लौट कर आयें ॥
सत्य युक्त क्रियाओं से, प्राप्त हों सफलतायें।
अत्यन्त सुख को प्राप्त कर, दूर करें चिन्तायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ८-६३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सोमेश्वर्य का स्वामी बन, गृहस्थी गृहस्थ चलाये।
सत्य क्रियाओं से सदा, स्वर्ण ऐश्वर्य जुटाये॥
घोड़े आदि उत्तम पशु, द्वार पे सदा सजाये।
प्रशंसनीय वीरों धीरों को, सहायक सदा बनाये॥
पुष्ट इन्द्रियों को करे, वश में इनको लाये।
आनन्ददायक यज्ञ सदा, करे और करवाये॥
इनसे सम्बन्धित रहे, आश्रय इनसे पाये।
भली भांति संसार को, शुद्ध पवित्र बनाये॥
बिना इनके यज्ञ पूर्ति, कभी नहीं हो पाये।
गृह आश्रम की उन्नति, इन्हीं से करे कराये॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

आठवें अध्याय का काव्य पाठ

समाप्त

वेद से जिस को प्यार नहीं। सम्भव उसका उद्धार नहीं॥

यजुर्वेद ९-१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज्य पुरुषों का यज्ञ है, दें विद्या का दान।
प्रजाओं का पालन करें, न्याय का करें विधान॥
सम्पूर्ण दिव्य गुण युक्त हों, करायें वेद बखान।
सबके सुख के वास्ते, जुटायें हर सामान॥
रक्षक पुरुष इस राज्य के, पायें सदा प्रेरणायें।
प्रशासन के कार्य में, आयें न बाधायें॥
पृथ्वी को धारण करें, शुद्ध बुद्धि अपनायें।
प्रचलित हों प्रजाओं में, सभी सत्य विद्यायें॥
भोगों को भोगें सदा, करें सत्य क्रियायें।
सत्य वाणी से प्रजाओं के, जीत दिलों को पायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ९-२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज्य प्रजाजन इस तरह, का आचरण बनायें।
धर्म अर्थ काम और मोक्ष की, सिद्धि सभी कर पायें॥
देता जैसे जगत पिता, सबको सब सुविधायें।
ऐश्वर्य भोगें सभी, वह रीति अपनायें॥
योग विद्या के अंगों पर, चलें और चलवायें।
निश्चल विद्या और विनय, को आधार बनायें॥
दूध घी की नहरें बहें, विमान सदा उड़ायें।
शत्रु सब दब कर रहें, आंख मिला नहीं पायें॥
न्याय को प्रकाशित करें, सब सन्तुष्टि पायें।
विद्वानों की इस कार्य में, प्राप्त करें सेवायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा को यह उचित है, प्रजाओं को समझाये ।
उनके शरीर और आत्मा, का बल सदा बढ़ाये ।।
औषधि विद्या ब्रह्मचर्य, का सेवन करवाये ।
योग विद्या में सब जनों, को सिद्धि नज़र आये ।।
रोग रहित सारे रहें, ऐसा करे उपाये ।
सभी बनें पुरुषार्थी, मिले सभी को न्याय ।।
सूर्य के प्रकाश सा, जीवन सदा बनाये ।
वीर्यवान बनकर सदा, अपनी चमक दिखाये ।।
परम सुखों की प्राप्ति, करे और करवाये ।
सुखी रहे सारी प्रजा, जय-जयकार बुलाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ९-४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सुखी रहें वही राज्य में, जो दें विद्या दान ।
दुष्टाचरणों से छुड़ा, बनायें बुद्धिमान ।।
कर्म करें कल्याण के, सुधर जाये सन्तान ।
संग छुड़ायें दुष्ट का, और करें कल्याण ।।
प्रबन्ध करें सतसंगों का, करायें मधुर व्याख्यान ।
लोक परलोक की सिद्धि का, करते जो सामान ।।
राज्य और गृह–आश्रम, बनें सुखों के धाम ।
प्रसन्न चित्त सारे रहें, पायें सुख आराम ।।
अधर्मी पुरुष से पृथक रहें, करें प्रभू गुणगान ।
बांटें खुशियां विश्व में, यही है धर्म ईमान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ९-५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

हे मनुष्यो इस भूमि को, समझो मात समान।
सौभाग्य की दाता यही, करती है कल्याण॥
सबकी रक्षा करत है, चढ़ाती है परवान।
सबको धारण कर रही, यह लो निश्चित जान॥
लोहा इसकी प्रसिद्धि का, लो हृदय से मान।
राज्य की प्राप्ति हो सके, ऐसा करो विधान॥
विद्या न्याय और धर्म का, बनाओ विधि विधान।
ऐसा योग मिलाओ फिर, मिलें सभी वरदान॥
राज्य अखंडित बना रहे, बढ़ाओ इसकी शान।
भरा रहे ऐश्वर्य से, कहलाये धनवान॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ९-६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सभी स्त्रियों को चाहिये, गम्भीर हों समुद्र समान।
शांत स्वभाव सदा रखें, दें उत्तम सन्तान॥
जल की भांति स्थिर रहें, इन्हें हो औषधि ज्ञान।
जलों के गुणों को जानकर, करायें सदा सोपान॥
वायु जल के गुण जानकर, पुरुष भी बनें महान।
उनकी जो संगत करें, उन्हीं का हो कल्याण॥
विजयश्री को प्राप्त कर, पायें सब वरदान।
रोग रहित सबको करें, पायें सुख आराम॥
बल पराक्रम अपनायें सब, जीतें सब संग्राम।
सुखी बसे संसार सब, ऐसा करें विधान॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ९-७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्राण अपान समान का, जो रखते हैं ज्ञान ।
जिन की आज्ञा में चलें, सदा उदान व्यान ॥
नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त धनंजय उप प्राण ।
मन के संग दस इन्द्रियां, करें जिसे प्रणाम ॥
सूक्ष्म भूतों और वायु का, जो रखते हैं ध्यान ।
राज्य स्थापित कर सकें, ऐसे ही बलवान ॥
जो गुण कर्म स्वभाव को, ठीक-ठीक लें जान ।
अपनी स्त्री से खुश रहें, बनते वही महान ॥
ऐश्वर्यों का सिन्चिन करें, जुटायें सुख सामान ।
राज्य स्थापित कर सकें, ऐसे वीर जवान ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज्य पुरुषों को उचित है, अभिमान में नहीं आयें ।
सब की उन्नति देखकर, मन्द मन्द मुस्कायें ॥
विद्वानों के परामर्श से, रक्षा करें करायें ।
विमान आदि यानों की, उपलब्ध करें सेवायें ॥
सभी देशों में भ्रमण कर, अनुशासन में लायें ।
जितेन्द्रिय सदा रहें, प्रजा को सुख पहुंचायें ॥
प्रजा रहे प्रसन्नचित, वह रीति अपनायें ।
कृया कुशलता से सदा, सब को मित्र बनायें ॥
वेग हो वायु की तरह, बढ़ायें राज्य सीमायें ।
सम्पदा वृद्धि को प्राप्त हो, जय जय सभी बुलायें ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा को यह उचित है, हो पूर्ण बलवान ।
शरीर आत्मा पुष्ट हो, रहे सदा सावधान ।।
श्येन पक्षी की तरह, हो इतना वेग वान ।
शत्रु पर पाये विजय, लड़ाये अपनी जान ।।

सेनाओं की इस तरह, संभाले रखे कमान ।
सब अधिकारी और प्रजा, करें न्योछावर प्राण ।।
शिक्षित सुख युक्त हों सभी, पायें हर सामान ।
पंक्ति वध तैय्यार हो, राष्ट्र का हर इक जवान ।।

कोषों में भरपूर हों, स्वर्ण और धन धान ।
बड़ी सुगमता से सदा, जीते हर संग्राम ।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ९-१० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा और प्रजा सकल, वैर विरोध मिटायें ।
धनुर्विद्या की कलाओं से, विजय शत्रु पर पायें ।।
वेदों और वेदांगों की, शिक्षा सदा दिलायें ।
शुभ गुण कर्म स्वभाव को, सब के सब अपनायें ।

सत्य न्याय और विनय से, जीवन सदा सजायें ।
विदीर्ण करें सब दुष्टों का, राज्य ऐश्वर्य बढ़ायें ।।
परउपकार की भावना, सभी लोग अपनायें ।
चक्रवर्ती साम्राज्य के, सपने सभी सजायें ।।

सब सुखों को प्राप्त हों, और सब को करवायें ।
विद्या प्रिय सब लोग हों, दुख से उन्हें छुड़ायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ९-११ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा को यह उचित है, वह साधन अपनाये ।
वेद की विद्या सहज से, फैल विश्व में जाये ।।
जीतना शत्रु का कभी, कठिन नज़र नहीं आये ।
हर उपदेशक इस तरह, वातावरण बनाये ।।
पठन पाठन की प्रवृति, हर इक की बन जाये ।
विजय के आभूषण पहन, हर कोई शोभा पाये ।।
धर्म की हो वृद्धि सदा, पाप नष्ट हो जाये ।
हर इक का यह फर्ज है, ऐसा करे उपाय ।।
विद्वत मंडल राज्य की, सेवा में निकल आये ।
राज्य धर्म पालन करे, युद्ध में इसे जिताये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-१२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा और अधिकारी गण, वचन को सदा निभायें ।
दृढ़ प्रतिज्ञ रहें सदा, सत्य सदा अपनायें ।।
सत्य पुरुष ही राज्य के, अधिकारी बन पायें ।
सारी प्रजा को राज्य का, निष्ठावान बनायें ।।
ऐसे अधिकारी सिर्फ, विश्वास प्रजा का पायें ।
सुखों के साधन जुटा, सब को सुखी बनायें ।।
सूर्य किरणों की तरह, सब को न्याय दिलायें ।
तन मन धन अर्पण करें, राज्य को सदा बढ़ायें ।।
विनय और पुरुषार्थ से, सत्य उपदेश करायें ।
ऐश्वर्यों को प्राप्त हो, राष्ट्र का मान बढ़ायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-१३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

योद्धा सेनाध्यक्ष की, लेवें हमेशा राय।
सारी की सारी प्रजा, उन की रहे सहाय॥
हर व्यक्ति जैसे भी हो, उन का हाथ बटाये।
ऐसी आकांक्षा करे, जीत के सेना आये॥

शत्रु इक पग न बढ़े, ऐसी रोक लगाये।
उपद्रव स्थल जहां भी हो, उसे मिटाया जाये॥
परिस्थितियां जैसी भी हों, वश में लाया जाये।
सेनाध्यक्ष को उचित है, ऐसा करे उपाये॥

अपनी गतियों का सदा, वेग बढ़ाया जाये।
इतनी हो गतिशीलता, शत्रु उभर नहीं पाये॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ९-१४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सेनापति चतुराई से, सेना को लड़वाये।
ऐसी हो सेना सदा, जीत शत्रु को पाये॥
वीर पुरुष मैदान में, युद्ध कौशल दिखलाये।
उस के कदमों में सदा, सफलता चल कर आये॥

शिक्षित हों योद्धा सभी, ऐसा करें उपाय।
सारी की सारी प्रजा, कदम से कदम मिलाये॥
बढ़े मनो बल सेना का, वह जय घोष लगाये।
सेना बलिदानी बने, शत्रु पर छा जाये॥

संकेतों और चिन्हों की, सारी कला सिखाये।
सिंह गरजना करते हुए, वीर गति को पाये॥
बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद ९-१५ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

राज पुरुष जो सतर्कता, और पराक्रम अपनाये ।
श्येन पक्षी की तरह, पहुंच दूर तक जाये ।।
जहां कहीं हो दुष्टता, दृष्टि उधर घुमाये ।
उपद्रव जहां जो करे, उस को सदा दबाये ।।
जहां हो जैसी स्थिति, काबू उस पर पाये ।
शुभ लक्षणों से युक्त हो, राज्य कार्य चलाये ।।
सारी प्रजाओं की सदा, सन्तुष्टि करवाये ।
अपने पूर्ण पुरुषार्थ से, अनुकूल उन्हें बनाये ।।
वह ही शत्रु पर सदा, विजय श्री को पाये ।
कहीं भी कोई उपद्रवी, आंख उठा नहीं पाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ९-१६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रजा जनों का जो सदा, भरण पोषण कर पाये ।
रोग की भाँति शत्रु का, नाम निशान मिटाये ।।
प्रजा जनों के कष्ट का, जो कर पाये उपाये ।
राज पुरुष सुख चैन से, सदा वही सो पाये ।।
स्वयं नियमों में चले, प्रजा को सदा चलाये ।
दिलों में सब प्रजाओं के, अपनी जगह बनाये ।।
मेघों की भाँति सदा, पर उपकार कमाये ।
दुष्टों चोरों डाकुओं को, समुचित दंड दिलाये ।
युद्ध कला में कुशल हो, विद्वानों का सहाये ।
सारी प्रजाओं को सदा, सुखी वही कर पाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-१७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज्य की रक्षा के लिए, सारे टैक्स चुकायें।
राज पुरुष इस काम को, भली प्रकार निभायें।।

बुद्धिमान इस काम में, सदा लगाये जायें।
जो इस काम में हों निपुण, जानें सब विद्यायें।।

जानें सब को आत्म वत, भला सभी का चाहें।
संग्रामों में सब सदा, साधन सभी जुटायें।।

राज पुरुष इस के लिए, करते रहें सभायें।
हर वाद और विवाद को, सुनें और सुलझायें।।

यथा स्थिति का सदा, सब को बोध करायें।
राज पुरुष वह ही सदा, सुखी राष्ट्र कर पायें।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ९-१८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज पुरुषों को चाहिये, वेद विद्या अपनायें।
विद्वानों के मार्ग पर चलें, मार्ग दर्शायें।।

आत्मा और शरीर का, बल सदैव बढ़ायें।
परीक्षा किये हुये सदा, वैद्यों को अपनायें।।

पके हुये अन्न आदि का, सेवन करें करायें।
उत्तम रस द्वारा सदा, सब को पुष्ट बनायें।।

प्रसन्न रखें प्रजाओं को, निरन्तर सुख पायें।
कोरे भाषणों की कला, कभी नहीं अपनायें।।

संग्रामों में शत्रु पर, विजयश्री को पायें।
लोग सभी आराम से, और सुख से सो पायें।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ९-१९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों का संग कर, जो सीखें विद्यायें ।
उत्तम शिक्षायें सभी, हृदयों में बिठलायें ।।
उन के ही अनुसार सब, सदैव अमल कमायें ।
लोक में और परलोक में, परमेश्वर्य वही पायें ।।
मिलें उत्तम माता पिता, निरोग काया पायें ।
आत्मा और शरीर के, सभी बल उनमें आयें ।।
विचारों की शुद्धि मिले, सुख उन के घर आयें ।
मन वांच्छित हर भोग को, भोगें और भुगायें ।।
चहुं और प्रकाश और, राज्य भूमि का पायें ।
जीतें हर संग्राम को, जग में शोभा पाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय · · · ·

यजुर्वेद ९-२० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को उचित है, प्राप्त करें विद्यायें ।
इस के लिये मधुरतागुण, जीवन में अपनायें ।।
अच्छी शिक्षायें दिला, सब को शिष्ठ बनायें ।
घरों में चल कर आयें सब, सम्पदायें प्रतिभायें ।।
अपनायें सब सदैव ही, सभी सत्य क्रियायें ।
बुद्धि वृद्धि के लिए, निस्दिन पढ़ें पढ़ायें ।।
काल गति और गणित को, समझें और समझायें ।
युक्ति युक्त विज्ञान से, सब को सुखी बनायें ।
नीच और मूर्ख स्वभाव को, बुद्धिमान बनायें ।
आलस्य त्याग पुरुषार्थ से, दिलायें उन्हें शिक्षायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ६-२१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर का उपदेश है, धर्म युक्त बन जाओ ।
गुण कर्म और स्वभाव को, निर्मल सदा बनाओ ।।
क्षुद्राषय व्यक्ति कभी, राजा नहीं बनाओ ।
मुझ जैसे न्यायाधीश की, आज्ञा में चलो चलाओ ।।
सब कुछ धर्मानुकूल ही, करो और करवाओ ।
इस लोक और परलोक में, परम सुखों को पाओ ।।
न्याय से जो पालन करे, उस ही के गुण गाओ ।
ऐसे उत्तम स्वभाव को, राज्याध्यक्ष बनाओ ।।
सभी कलाओं में पूर्ण हो, उसका मान बढ़ाओ ।
सन्तानें तुम को कहे, उस को पिता बनाओ ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ६-२२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर का आदेश है, पुरुषार्थ अपनाओ ।
आलस्य और प्रमाद में, प्रवृत न हो जाओ ।।
पृथिवी आदि से सदा, अन्न आदि उपजाओ ।
इन भंडारों की सदा, रक्षा करो कराओ ।।
पर उपकार के काम में, इस को सदा लगाओ ।
ऐसे नियम चलाने में, पूरा जोर लगाओ ।।
हर इक का शुभ काम में, सदैव हाथ बटाओ ।
अपने ऊँचे लक्ष्य पर, आगे बढ़ते जाओ ।।
मन और इन्द्रियों को सदा, अनुशासन में लाओ ।
सब में सब की सांझ है, दिल में यह बिठलाओ ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ९-२३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

शिष्ट पुरुषों को योग्य है, खूब समझ यह जायें ।
राज्य अधिकार पाये वही, जाने सब विद्यायें ॥
रोग रहित और चतुर हो, कुशल हों सभी क्रियायें ।
राष्ट्र की रक्षा के लिए, जाने सभी कलायें ॥
वैद्य और राजा सदा, निरोग्यता अपनायें ।
राज्य गद्दी के योग्य है, करे खूब सेवायें ॥
सज्जनों को रक्षा करें, दुष्ट सजायें पायें ।
राजा और प्रजा पिता, पुत्र तुल्य बन जायें ॥
हितकारी सारे रहें, सत्य क्रिया अपनायें ।
जागरूक सारे रहें, सुरक्षित हों सीमायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ९-२४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

रक्षा में जो समर्थ हो, राजा उसे बनायें ।
चक्रवर्ति शासन करे, बढ़ा सके सीमायें ॥
करों की प्राप्ति के लिये, जुटाये जो सुविधायें ।
ऐसे कामों में सदा, मन्त्री हाथ बटायें ॥
सेनापति वह ही बने, नियन्त्रित करे सेनायें ।
विजय शत्रुओं पर पा सके, तोड़े सब बाधायें ॥
न्यायाधीश वह ही बने, जाने सब विद्यायें ।
धार्मिक और विद्वान हो, जाने सब धारायें ॥
कोषाध्यक्ष वह ही बने, कोष न घटने पायें ।
परस्पर मेल मिलाप से, शासन सभी चलायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-२५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर का आदेश है, राजा उसे बनाओ।
प्रशंसित गुण युक्त हो, रहे जो शांत स्वभाव ।।
रक्षा में जो समर्थ हो, राष्ट्र का करे बचाव।
प्रजा जनो उस व्यक्ति को, सदैव आगे लाओ।।
आप्त नीति से चक्रवर्ति, राज्य का करे बढ़ाव।
सभाध्यक्ष के वास्ते, उस का करो चुनाव ।।
ज्ञाता सकल विद्याओं का, शत्रु पे रखे दबाव।
प्रजाओं में उत्पन्न न हो, कभी कहीं अलगाव ।।
सभी मांडलिक राजाओं में, हो न कभी टकराव।
समस्यायें सब हल करे, ऐसा हो प्रभाव ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ९-२६ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

ईश्वर का आदेश है, राजा करो स्वीकार।
ब्रह्मचर्य पालन करे, जाने इस का सार ।।
व्रत ले विद्या ग्रहण का, पाये इस का पार।
ऐसे व्रति ब्रह्मचारी को, राजा करो स्वीकार ।।
सच्ची नीतियों को सदा, बढ़ाये दे विस्तार।
रक्षा करने योग्य हो, चला सके सरकार ।।
जो अग्नि तुल्य कर सके, शत्रुओं का सहार।
शांत, गुण संपन्न हो, उत्तम हो व्यवहार ।।
तेजस्वी हो सूर्य वत, वेद का ले आधार।
ऐसे विद्या युक्त को, राजा करो स्वीकार।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ९-२७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ईश्वर का आदेश है, राजा हो विद्वान ।
न्याय प्रिय धर्मात्मा, दे सब को सम्मान ।।

प्रेरणा विद्या वृद्धि की, सब को करे समान ।
अविद्या का नाश हो, सुखी हो सकल जहान ।।

धर्म अनुसार सभी चलें, ऐसा करे विधान ।
सारे राज्य में न रहे, कोई बे-ईमान ।।

पक्षपात बरते नहीं, सब को मिले आराम ।
वेद वाणी से युक्त हो, जाने सब विज्ञान ।।

हर स्त्री और पुरुष हो, राज्य का निष्ठावान ।
ऐश्वर्यों से युक्त हो, सब का हो कल्याण ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद ९-२८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा को आदेश है, सत्य का करे बखान ।
वाणी के माधुर्य से, हों सब निष्ठावान ।।

प्रजा और सेनाओं को, दे इतना सम्मान ।
उन की अनुमति से सदा, करों का करे विधान ।।

घरों में उन के भरा रहे, सदा अन्न धनधान ।
कोई दुखिया न रहे, सब का हो कल्याण ।।

शरीर आत्मा का बल बढ़े, पायें सभी आराम ।
शत्रुओं को पराजय करे, जीते हर संग्राम ।।

प्रजा को पाले धर्म से, उपलब्ध हो हर सामान ।
प्रजा भी राजा के लिये, करे न्यौछावर प्राण ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-२९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

माता पिता राजा करें, सदा सत्य उपदेश ।
प्रजा पुत्र और पुत्रियां, सुख में पायें प्रवेश ।।
अच्छी विद्या शिक्षा से, मिटते सकल क्लेश ।
चहुं ओर आनन्द हो, स्वर्ग हो सारा देश ।।
शरीर आत्मा पुष्ट हों, सादा हो परिवेश ।
पहुंचे घर-घर विद्या और, शिक्षा का सन्देश ।।
वाणी हो सब की मधुर, मानें सब आदेश ।
कठिनाई आये नहीं, किसी को भी दर–पेश ।
भरण और पोषण सब का हो, रहे न कोई शेष ।
चहुं ओर आनन्द हो, पूरा हो उद्देश्य ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-३० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रजा जनों को योग्य है, राजा उसे बनायें ।
ईश्वर प्रेमी पराक्रमी, जाने सब विद्यायें ।।
जितेन्द्रिय धर्मात्मा, जाने सभी कलायें ।
पुष्ट हो सत्यवादी भी हो, नियन्त्रित करे सेनायें ।।
प्रजाओं का पालन करे, करे पूरी आशायें ।
राज्यभिषेक तभी करें, लें पूरी परीक्षायें ।।
राजधर्म की उन्नति, में सब ज़ोर लगायें ।
जय-जय कार करने लगें, उस का सभी दिशायें ।।
नित्य प्रति सुख से रहें, दूर करें बाधायें ।
एकम चन्दा की तरह, बढ़ती रहें कलायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-३१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा गायत्री छन्द से, उत्तम नीति अपनाये।
इसी के द्वारा प्रजाओं को, गुणों से युक्त बनाये ।।
ऊषणिक छन्द द्वारा सदा, ऐसे करे उपाये।
हर व्यक्ति इस राज्य का, मनन शील बन जाये ।।
अनुष्टुप छन्द से पार सदा, सब लोकों का पाये।
प्रजा जनों को भी सदा, इस का राज़ बताये ।।
ब्रहति छन्द द्वारा करे, उत्तम सभी जो पाये।
प्रजा का हर व्यक्ति सदा, उन का लाभ उठाये ।।
राजा रहेगा हर घड़ी, प्रजाओं का जब सहाये।
प्रजा भी उसके वास्ते, क्यों नहीं जान लड़ाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-३२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जिस व्यक्ति की कीर्ति, गायें सभी दिशायें।
प्रजा का पोषक जो बने, जाने सब विद्यायें ।।
ऐश्वर्यों से युक्त हो, जाने सभी कलायें।
पशुओं का रक्षक हो जो, पवित्र हों सदा निगाहें ।।
ज्ञाता हो जो वेद का, आती हों उसे ऋचायें।
राज्यभिषेक उसका करें, प्रजा और सेनायें ।।
उन्नति राष्ट्र की करें, वह नीति अपनायें।
चहुं ओर सुख चैन हो, सब सुख से सो पायें ।।
त्रिष्टुप, जगती, याजुशी, समझ छन्दों को पाये।
सभी बढ़ें, बढ़ते रहें, आयें न बाधायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-३३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज पुरुषों को उचित है, सब को मित्र बनायें ।
प्रजा जनों को दें सदा, सर्वोत्तम शिक्षायें ।।
उत्तम गुणों से युक्त कर, विद्वान उन्हें बनायें ।
जिस से सब ऐश्वर्यों के, वह भागी बन जायें ।।
याजुषी आसुरी, साम्नी, गायत्री उन्हें समझायें ।
कर्म उपासना में सदा, सब की रुचि बढ़ायें ।।
तृष्टुप छन्द जानें सभी, इस का लाभ उठायें ।
जगती छन्दों में कही, नीतियों को अपनायें ।।
विद्वानों की रीति से, बरतें और बरतायें ।
सच्चे अर्थों में सभी, राज भक्त कहलायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-३४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

ब्रह्मचर्य पालन करें, ज्ञान छन्दों का पायें ।
पदार्थ समूहों की श्रेष्ठता, हृदयों में बिठलायें ।।
चवालीस वर्ष के ब्रह्मचर्य में, विद्या पढ़ें पढ़ायें ।
दश इन्द्रिय मन बुद्धि को, सदैव वश में लायें ।।
अड़तालीस वर्ष के ब्रह्मचर्य से, पूर्णता को पायें ।
शरीर आत्मा का बल सदा, प्रकाष्ठा तक पहुंचायें ।।
चारों वेदों उपवेदों को, सदैव पढ़ें पढ़ायें ।
छः अंग और क्रिया शीलता, स्तुति योग्य बनायें ।।
प्रमाण, प्रमेय, सोलह पदार्थ, जानें और जनायें ।
वर्णाश्रम ध्यान आदि से, मोक्ष लक्ष्य को पायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-३५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

उत्तम विद्याओं से युक्त हो, काम प्रजा के आयें ।
वेदोक्त रीति नीति से, सब सुख प्राप्त करायें ।।
सब प्रकार की शिक्षा को, प्राप्त करें करवायें ।
विद्वानों के मार्ग से, सदैव चलें चलायें ।।
पूर्ण विद्या युक्त धार्मिक, को अधिकार दिलायें ।
जितेन्द्रिय रह कर न्याय से, जो सब काम चलायें ।।
चक्रवर्ति राज्य लाने में, वही समर्थ हो पायें ।
मिथ्याचारी व्यभिचारी तो, काम यह न कर पायें ।।
विद्वानों की सम्मति, लेकर कदम बढ़ायें ।
ऐसे राजा की कभी, रुकें नहीं सेनायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-३६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

पूर्व दिशा के लोगों की, सत्य वाणी अपनायें ।
अहिंसा आदि में सदा, पूर्णता को लायें ।।
दक्षिण में योगी रहें, सब को न्याय सिखायें ।
पश्चिम वाले पृथिवी की, कलाओं को समझायें ।।
दंड नीति बतलायें वह, मिटायें सब शंकायें ।
उत्तर वाले प्राणों की, जाने सब विद्यायें ।।
ब्रह्मांड के विज्ञान से, पर उपकार करायें ।
ऊँचे पद पर बैठ कर, धर्म प्रचार करायें ।।
सोम आदि सब औषधियां, सेवन करें करायें ।
द्वीप द्वीपान्तरों में सदा, पहुंचायें यह विद्यायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद ९-३७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा सब विद्याओं से, जग में शोभा पाये।
अच्छी शिक्षा से युक्त कर, सेना करे सहाय।।
अजय रहे स्वयं सदा, विजय शत्रु पर पाये।
भूमि का विस्तार कर, यशस्वी कहलाये।।
धर्म युक्त स्वयं रहे, सारा राज्य चलाये।
बल और शिक्षा वृद्धि का, सदैव करे उपाय।।
आनन्दित सारे रहें, कष्ट न कोई पाये।
प्रजा को जो दुख दे कभी, उस को दूर भगाये।।
विद्या बल और न्याय को, धारण करे कराये।
दृढ़ता से आगे बढ़े, कदम न कभी हटाये।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ९-३८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रजाओं को यह उचित है, राजा उसे बनायें।
सत्यवादी जितेन्द्रिय, जाने सब विद्यायें।।
समर्थ हो रक्षा करने में, सिर नहीं दुष्ट उठायें।
निवारणार्थ उन के स्वयं, जाने सभी कलायें।।
धर्म में सब प्रवृत रहें, विद्या पढ़ें पढ़ायें।
नम्र स्वभाव सब का बने, ऐसी दें शिक्षायें।।
धर्म और विद्या का सभी, प्रचार करें करायें।
सुखी रहें स्वयं सभी, सब को सुखी बनायें।।
ऐश्वर्यों की सिद्धि को, करें सत्य क्रियायें।
ऐसे राजा की सभी, जय जय कार बुलायें।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ९-३९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा उत्तम पुरुषों का, संग करे करवाये।
धर्म अनुष्ठान की प्रेरणा, सदैव करे कराये॥
ऐश्वर्यों के सूर्य की, तरह चमके चमकाये।
पावक के सदृश सदा, पर उपकार कमाये॥
शुभ गुण कर्म स्वभाव से, जीत दिलों को पाये।
वेद ऋचाओं को सदा, सुने और सुनवाये॥
गऊओं की रक्षा करे, इस का वंश बढ़ाये।
वायु यज्ञ अनुष्ठान से, शुद्ध करे करवाये॥
सब के सुख और शान्ति का, करता रहे उपाये।
ऐसे राजा को प्रजा, आंखों पर बिठलाये।

बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ९-४० (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

प्रजा जनों उस व्यक्ति को, सभाध्यक्ष बनाओ।
जिस का सब से श्रेष्ठ हो, गुण कर्म और स्वभाव॥
ब्रह्मचर्य पालन करे, सब से करे निभाव।
प्रजा के पालन में रहे, जिस का सदा झुकाव॥
बढ़ाये बल शरीर आत्मा का, कभी न खाये ताव।
विषयों में डूबे नहीं, जीवन की यह नाव॥
सुशिक्षित गुण युक्त हो, भरे सभी के घाव।
पूरी शक्ति से करे, राज्य का सदा बचाव॥
प्रजाओं में आये नहीं, कभी कहीं भटकाव।
ऐसे राजा की नियुक्ति का, सभी करें प्रस्ताव॥

बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ६-३७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा सब विद्याओं से, जग में शोभा पाये।
अच्छी शिक्षा से युक्त कर, सेना करे सहाय॥
अजय रहे स्वयं सदा, विजय शत्रु पर पाये।
भूमि का विस्तार कर, यशस्वी कहलाये॥
धर्म युक्त स्वयं रहे, सारा राज्य चलाये।
बल और शिक्षा वृद्धि का, सदैव करे उपाय॥
आनन्दित सारे रहें, कष्ट न कोई पाये।
प्रजा को जो दुख दे कभी, उस को दूर भगाये॥
विद्या बल और न्याय को, धारण करे कराये।
दृढ़ता से आगे बढ़े, कदम न कभी हटाये॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ६-३८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रजाओं को यह उचित है, राजा उसे बनायें।
सत्यवादी जितेन्द्रिय, जाने सब विद्यायें॥
समर्थ हो रक्षा करने में, सिर नहीं दुष्ट उठायें।
निवारणार्थ उन के स्वयं, जाने सभी कलायें॥
धर्म में सब प्रवृत रहें, विद्या पढ़ें पढ़ायें।
नम्र स्वभाव सब का बने, ऐसी दें शिक्षायें॥
धर्म और विद्या का सभी, प्रचार करें करायें।
सुखी रहें स्वयं सभी, सब को सुखी बनायें॥
ऐश्वर्यों की सिद्धि को, करें सत्य क्रियायें।
ऐसे राजा की सभी, जय जय कार बुलायें॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद ९-३९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा उत्तम पुरुषों का, संग करे करवाये।
धर्म अनुष्ठान की प्रेरणा, सदैव करे कराये॥
ऐश्वर्यों के सूर्य की, तरह चमके चमकाये।
पावक के सदृश सदा, पर उपकार कमाये॥
शुभ गुण कर्म स्वभाव से, जीत दिलों को पाये।
वेद ऋचाओं को सदा, सुने और सुनवाये॥
गऊओं की रक्षा करे, इस का वंश बढ़ाये।
वायु यज्ञ अनुष्ठान से, शुद्ध करे करवाये॥
सब के सुख और शान्ति का, करता रहे उपाये।
ऐसे राजा को प्रजा, आंखों पर बिठलाये।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद ९-४० (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

प्रजा जनों उस व्यक्ति को, सभाध्यक्ष बनाओ।
जिस का सब से श्रेष्ठ हो, गुण कर्म और स्वभाव॥
ब्रह्मचर्य पालन करे, सब से करे निभाव।
प्रजा के पालन में रहे, जिस का सदा झुकाव॥
बढ़ाये बल शरीर आत्मा का, कभी न खाये ताव।
विषयों में डूबे नहीं, जीवन की यह नाव॥
सुशिक्षित गुण युक्त हो, भरे सभी के घाव।
पूरी शक्ति से करे, राज्य का सदा बचाव॥
प्रजाओं में आये नहीं, कभी कहीं भटकाव।
ऐसे राजा की नियुक्ति का, सभी करें प्रस्ताव॥
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद १०-१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को उचित है, शुद्ध जल करें प्रयोग ।
इस के द्वारा ही मिटें, सारे जग के रोग ॥
प्राण उदान वश में करें, सीखें इन का योग ।
शत्रुओं पर विजय के लिए, विद्युत करें प्रयोग ॥
आपस में प्रीति रखें, सुखी रहें सब लोग ।
मिल जुल कर सारे रहें, सहे न कोई वियोग ॥
बरतें सारे इस तरह, सभी करें सहयोग ।
हंसते खेलते सब करें, सुखों का उपभोग ॥
प्रकाश से रहें युक्त सब, करें राज्य का भोग ।
नज़र कहीं आये नहीं, किसी के घर में सोग ॥
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद १०-२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जो दुष्टों को जीत कर, श्रेष्ठ को दे सत्कार ।
चक्रवर्ति राज्य का, है उसको अधिकार ॥
शोभा सदा बढ़ाये जो, कभी न माने हार ।
सत्य नीतियों पर चले, करे कुशल व्यवहार ॥
राज्य की रक्षा के लिये, उठाये सदा हथियार ।
वाणी हो सुन्दर मधुर, सत्य का ले आधार ॥
सेना आनन्द युक्त हो, और पुष्ट सरदार ।
सारी प्रजा मिल कर करे, उन की जय जय कार ॥
सुख की वृष्टि हो सदा, विद्या का प्रसार ।
ऐसे परोक्ष पुरुष को, दें सारे अधिकार ।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद १०-३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज्यधिकारी पुरुष और, स्त्रियां करें विचार ।
भूल से भी कभी न करें, किसी का भी तिरस्कार ।।
लायें न मन में ईर्ष्या, आयें न बुरे विचार ।
कोई भी उत्पन्न न हो, कभी कहीं गद्दार ।।
सब की उन्नति ही सदा, चाहें हर प्रकार ।
अधिकार पायें सदा, योग्यता के अनुसार ।।
चक्रवर्ति शासन चले, कुशल रहे व्यवहार ।
राज्य की हानि न करे, कोई किसी प्रकार ।।
सत्य नीतियां ही बनें, शासन का आधार ।
जो भी स्तुति योग्य हो, मिले उसे अधिकार ।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

न्याय और विद्या प्रकाश में, जो हैं सूर्य समान ।
गऊओं की रक्षा करें, शुभगुण युक्त महान ।।
सब को आनन्दित करें, शोभायमान बलवान ।
विवाह करें उस से सदा, समान हो गुणवान ।।
रहें स्वाधीन स्वयं सदा, चलायें राज्य का काम ।
औरों का सहयोग लें, राष्ट्र को करें महान ।।
सुखों का उपभोग कर, पायें सब वरदान ।
पूर्ण सदा करते रहें, औरों के अरमान ।।
जो सेवा करते नहीं, रह जायें नादान ।
ख्याति न उनकी बढ़े, पायें न सम्मान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सभी लोग इच्छा करें, शुभ गुण उन में आयें ।
सत्यवादी धर्मात्मा, सब प्रजायें बन जायें ।।
राजाओं के गुण सभी, उन में भी आ जायें ।
शुभ गुण कर्म स्वभाव हैं, जो उन के अपनायें ।।

विद्या के प्रकाश से, प्रकाशित हो जायें ।
सत्य वाणी बोलें सदा, सब को मित्र बनायें ।।
औषधियों के ज्ञान से, सब परिचित हो जायें ।
वेद की विद्या जान कर, गायें सदा ऋचायें ।।

आत्म बोध कर पायें सब, योग साधन अपनायें ।
श्रेष्ठ कार्य की नीतियां, सारी उन को आयें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज पुरुष को उचित है, शिक्षित हों कन्यायें ।
शुद्ध विद्या से युक्त ही, अध्यापिकायें लगायें ।।
शिक्षा पा कर देवियां, बनें वीर बालायें ।
वीर पुरुषों को जन्म दें, कष्ट क्लेश मिटायें ।।

धर्म ज्ञान जितेन्द्रियता, सभी लोग अपनायें ।
ब्रह्मचर्य पालन करें, घरों को स्वर्ग बनायें ।।
शुभ गुण कर्म स्वभाव की, जानें सभी कलायें ।
विद्या के अध्ययन से, मन वांच्छित सुख पायें ।।

शुद्ध आचरण दोनों के हों, ऐसा गृहस्थ चलायें ।
सूर्य की किरणें सदा, खुशियां लेकर आयें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा को यह उचित है, स्त्री शिक्षा चलाये।
विदुषी हों सब देवियां, कोई अनपढ़ न रह जाये॥
बालक विद्या युक्त हों, वह प्रबन्ध कराये।
धाया का प्रबन्ध करे, शिष्टाचार सिखाये॥
विद्या शिक्षा के बिना, कोई न रह जाये।
कोई स्त्री राष्ट्र की, निर्बल न हो जाये॥
सभी लोग प्रसन्न रहें, ऐसा करे उपाये।
शान्ति युक्त जल की तरह, हर देवी बन जाये॥
आभूषण धारण करे, चतुर गृहणी कहलाये।
कभी किसी से न दबे, किसी को नहीं दबाये।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जो विधान कन्याओं को, विद्या सदा दिलाये।
बालकों स्त्री पुरुषों को, विद्यावान बनाये॥
राज्य की सीमायें वही, आगे सदा बढ़ाये।
नाश शत्रुओं का वही, दृढ़ता से कर पाये॥
प्रवृति धर्म आदि में, सब की सदा बढ़ाये।
सब भाँति से राष्ट्र की, वही रक्षा कर पाये॥
सभी दिशाओं में सदा, राष्ट्र का ध्वज लहराये।
कोई भी शत्रु कभी, इसे झुका नहीं पाये॥
राष्ट्र की रक्षा में कभी, कमी न कोई आये।
प्रजाओं को यह ही सदा, दिलवा सकता न्याय।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

मनुष्य लोग जब तक नहीं, जानेंगे विज्ञान।
तब तक हो नहीं पायेगा, किसी का भी कल्याण ।।
विदुषी माता, विद्वान का, मिला न गर वरदान।
जीवन में मिल पायेगा, न सुख न आराम ।।
प्रसिद्ध पदार्थों का अगर, प्राप्त न होगा ज्ञान।
पूरे हो नहीं पायेंगे, जीवन के अरमान ।।
दुख की न होगी निवृति, बने न समर्थवान।
इष्ट की सिद्धि में कभी, लग पाये नहीं ध्यान ।।
बिजुली भूमि से सुख मिलें, ऐसा लें सब जान।
सत्य व्रतों से मिल सके, सब सुखों का धाम ।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद १०-१० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जो मनुष्य विद्याओं से, होते कीर्तिमान।
उन को शत्रु का जीतना, हो जाता आसान ।।
ऐश्वर्यों की प्राप्ति, लगे न मुश्किल काम।
पूर्व दिशा में प्रसिद्धि का, अमृत करते पान ।।
पढ़ते हैं गायत्री छन्द, करें साम का गान।
मन वाणी और शरीर को, करते हैं बलवान ।।
स्तुति योग्य बसन्त है, लें सब ऐसा मान।
वेद, ईश्वर, ब्रह्म ज्ञान का, रखते पूरा ध्यान ।।
भंडारों में भरा रहे, हर उत्तम धन धान।
कहलाते हैं विश्व में, वह व्यक्ति गुणवान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद १०-११ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा जो विद्या प्राप्त कर, क्षत्रिय कुल को बढ़ाये ।
शत्रु भी उस का कभी, तिरस्कार नहीं कर पाये ।।

तृष्टुप छन्द को जान कर, साम वेद को गाये ।
पांच प्राण पांच इन्द्रियों, को नियन्त्रित कर पाये ।।

पांच भूतों को समझ कर, औरों को समझाये ।
क्षत्रिय धर्म पालन करे, स्तुति योग्य बन जाये ।।

प्राप्त हुये धन धान को, युक्ति से सदा लगाये ।
दक्षिण दिशा में खर्च कर, ख्याति सदा बढ़ाये ।।

जाने हर विज्ञान को, सिद्धियां प्राप्त कराये ।
हर ऋतु में सुख से रहे, सब को सुखी बनाये ।

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-१२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज पुरुष जो वैश्यों की, उन्नति करें करायें ।
भं.ारों में लक्ष्मी, सदा वही भर पायें ।।

जगती छन्द को जान कर, साम वेद को गायें ।
पांच इन्द्रियों पांच भूतों को, समझें और समझायें ।।

पांच विषय, कारण, कार्य इन, सत्रह को समझ पायें ।
वर्षा ऋतु में वैश्य जन, द्रव्य प्राप्त कर पायें ।।

पश्चिम दिशा को आरूढ़ हो, धन को सदा जुटायें ।
सदैव ही सुरक्षित रखें, राज्य की सीमायें ।।

इस पद्धति और नीति से, राज्य वृद्धि को पायें ।
प्रजा जनों के पास सब, खुशियां चल कर आयें ।।

बोलिये वेद धर्म की जय . . .

यजुर्वेद १०-१३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जो आलस्य को छोड़ कर, करें पुरुषार्थ अनुष्ठान ।
अच्छे फलों को भोगते, हैं वही वीर महान ।।
उत्तर दिशा में प्रसिद्ध हो, होते शोभायमान ।
स्तुति दूसरों की करें, पाते हैं सम्मान ।।
सोलह कला चार पुरुषार्थ और, कर्ता को पहचान ।
पूर्ण ज्ञान को प्राप्त कर, चढ़ते हैं परवान ।।
शरत ऋतु ऐश्वर्यों का, करें सदा गुण गान ।
सेवा कारक सेवा के, कार्य को कहें महान ।।
अनुष्टुप छन्द के अर्थों को, भली भाँति लें जान ।
अपने सारे राज्य को, करते स्वर्ग समान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-१४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब ऋतुओं में जो सदा, करता युक्त आहार ।
योग अभ्यास सतसंगों में, करता सदा विहार ।।
सेवन हर इक का करे, समयों के अनुसार ।
हर ऋतु में सुख भोग का, मिले उसे अधिकार ।।
चोर आदि आ पायें न, कभी भी उस के द्वार ।
पीड़ा न होती उसे, करे न हाहाकार ।।
शिक्वरी रेवती छन्द से, युक्त हो करे प्रचार ।
तैंतीस बसुओं नौ अंगों का, लेता सदा आधार ।।
हैमन्त और शिशिर ऋतु, में विद्या प्रसार ।
तीन काल भरता रहे, ऐश्वर्यों से भंडार ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०–१५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

धार्मिक और विद्वान जो, अपना इष्ट बनाये ।
अपनी प्रजाओं के लिये, सदैव वैसा चाहे ॥
प्रजाओं का सहयोग जो, भली भांति ले पाये ।
उनकी रक्षा के लिये, वह सर्वस्व लगाये ॥
पराक्रमी प्रकाश युक्त, जीवन सदा बनाये ।
प्रजाओं का भी विद्याओं से, भाग्य उदय कर पाये ॥
सबके हित के वास्ते, ऐश्वर्य सदा जुटाये ।
सबके दिलों में कीर्ति, अपनी सदा बढ़ाये ॥
उत्तम रीति नीति ही, राज्य में सदा चलाये ।
ऐसा राजा ही सदा, सुख से समय बिताये ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-१६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सूर्य चन्दा की तरह, जो उपदेश सुनायें ।
बढ़ती है वहां सम्पदा, बढ़ती हैं विद्यायें ॥
बोध सत्य असत्य का, सदा करें करवायें ।
वहां न भ्रम रहता कोई, अनपढ़ न रह पायें ॥
सुख देने वाले रहें, सेनापति सेनायें ।
शत्रु ऐसे राज्य में, आंख उठा नहीं पायें ॥
उपदेशों के वास्ते, उपदेशक घर-घर जायें ।
नश्वर और अविनाशी का, सबको फर्क बतायें ॥
सबको सब प्रकार की, शिक्षायें सिखलायें ।
मन वांछित खुशियां सदा, घरों में चलकर आयें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-१७ (भावार्थ) 'काव्य-पाठ'

प्रजा जनों को उचित है, अधिकार उसे दिलायें।
जितेन्द्रीय गुण युक्त हो, जाने सब विद्यायें ।।
राजा को यह उचित है, पूरी करे आशायें।
कभी खतरे में न पड़ें, राज्य की सीमायें ।।
अति श्रेष्ठ विद्या, धर्म की, बहें मधुर धारायें।
प्रकाश से प्रकाश युक्त हों, राज्य की सभी दिशायें ।।
प्रजा पुरुष उस राज्य के, सारे सदा सुख पायें।
शांत गुण कर्म स्वभाव की, जय जयकार बुलायें ।।
बड़े प्रेम और प्यार से, विद्या पढ़े पढ़ायें।
ऐसे राजा को सभी, शत्रु शीष झुकायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद १०-१८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राज पुरुष प्रजाओं की, उन्नति सदैव चाहें।
उनके हित के वास्ते, क्यों न लड़ें प्रजायें ।।
वेद और ईष उपासना, सारे करें करायें ।।
सर्वत्र विद्या धर्म की, शिक्षायें फैलायें ।।
श्रेष्ठ गुणों से युक्त हों, सब प्रशंसा पायें।
क्षत्रिय सुरक्षित रखें, देश की सब सीमायें ।।
माण्डलिक राजा भी सदा, अपना फर्ज़ निभायें।
प्रजा के सुख के वास्ते, सब ऐश्वर्य जुटायें ।।
राज्य के भरे भंडार हों, सदैव सभी सुख पायें।
शत्रु कहीं भी और कभी, शीष उठा नहीं पायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय....

यजुर्वेद १०-१६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

कारीगरों को चाहिये, विमान करें निर्माण।
द्वीप द्वीपान्तरों का भ्रमण, हो जाये आसान ।।
मेघ भूमि पर बरस कर, करें पूरे अरमान।
वह जल फिर आकाश में, पा लेता है स्थान ।।
ऊपर नीचे जल रहे, बनायें ऐसे यान ।
भूमि जल और आकाश में चलें जो एक समान ।।
मेघों के ऊपर चलें, पायें सब आराम।
मेघों के नीचे चलें, जुटायें सब सामान ।।
व्यापक वायु में चलें, ले विद्युत से काम।
सुख शांति से जी सकें, दुनियां के इन्सान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-२० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

व्यापक है जो विश्व में, है वह ही भगवान।
दुष्टों को दण्ड देत है, सर्वत्र है वर्तमान ।।
रक्षा करता है सदा, माता पिता समान।
उपासना के वही योग्य है, करें उसी का ध्यान ।।
कामनायें पूरी करे, करे जो अनुष्ठान।
उपलब्ध कराता है सदा, सुख का हर सामान ।।
प्रत्यक्ष और परोक्ष का, उसे है पूरा ज्ञान।
चक्रवर्ती साम्राज्य का, करता वही विधान ।।
करे मुक्त हर कष्ट से, करे वही कल्याण।
सत्यवाणी से हो सके, प्राप्त उसका धाम ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-२१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

विद्वानों को उचित है, दें विद्या का दान।
राजा और अधिकारी गण, बनें सब वीर महान ।।
धर्म अर्थ की सिद्धि करें, हो सबका कल्याण।
कोई पीड़ित न रहे, ऐसा करें विधान ।।
शत्रुओं को जीतें सदा, इतने हों बलवान।
भंडारों में रहे प्रचुर, मात्रा में धनधान ।।
हानि न हो सम्पत्ति की, ऐसा हो इन्तज़ाम।
प्रजाओं को मिलता रहे, सुख का हर सामान ।।
योगाभ्यास चिन्तन करें, पायें सब आराम।
निश्चिन्त हो जीवन जियें, राज्य हो स्वर्ग समान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-२२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रजा राज्य से न करे, कभी अयोग्य व्यवहार।
राजा प्रजा से न करे, अन्याय अत्याचार ।।
वेद की आज्ञा मानकर, ऐसा करें व्यवहार।
रहन सहन हो एक सा, जैसे हो इक परिवार ।।
एकता सब में हो सदा, सबका हो उद्धार।
छोड़ आलस्य प्रमाद को, सदा रहें तैयार ।।
छोड़ें नास्तिक भाव को, करें वेद प्रचार।
इससे ही होता सदा, बुद्धि का विस्तार ।।
मिल जुल कर शासन करें, देश की जय जयकार।
कहीं दिखाई न पड़े, देश में भ्रष्टाचार ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-२३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा और प्रजा सदा, जानें सुख का सार।
परस्पर के हित के लिये, रहें सदा तैयार ॥

माताओं को उचित है, बतायें विद्या सार।
मूर्खता और अविद्या से, हो न सकें भव पार ॥

मन्द बुद्धि सन्तानों से, सम्भव न उपकार।
जीव, मन, इन्द्रियों का कभी, हो नहीं पाये सुधार ॥

सन्तानों को उचित है, बड़ों को दें सत्कार।
कभी निरादर न करें, कुशल रखें व्यवहार ॥

द्वेष भावना छोड़कर, सत्य का लें आधार।
अनुकरणीय जीवन बनें, होवे जय जयकार ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-२४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सर्वत्र व्यापक जो रहे, जपें उसी का नाम।
उपासना उस ही की करें, पायें सब वरदान ॥

पदार्थों की शुद्धि करे, है वह बड़ा महान।
बिना उपासना के कभी, सम्भव न कल्याण ॥

धर्म अर्थ काम और मोक्ष का, हो नहीं पाये ज्ञान।
बिना इनके नहीं मिल सके, परम सुखों का धाम ॥

कण-कण में है रम रहा, सदा कर उसका ध्यान।
पृथ्वी जल आकाश में, है वही दैदीप्यमान ॥

सत्य विद्याओं का करे, सबके लिये बखान।
हृदय में उसी अनन्त की, कर सदैव पहचान ॥

बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-२५ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

प्रकाश स्वरूप परमेश्वर, दो पराक्रम का दान ।
आपकी भांति बन सकूँ, मैं अनन्त बलवान ।।
हृदय से मैं करता रहूं, सदा तेरे गुणगान ।
सुन्दर जीवन का मुझे, प्राप्त हो हर विज्ञान ।।

सुखों को भोगूँ सदा, हो मेरा कल्याण ।
तेरे आश्रय के बिना, जीना न आसान ।।
पराक्रम की न हो प्राप्ति, न चल पायें प्राण ।
जीवन में नहीं मिल सके, परम सुखों का धाम ।।

योग की विद्या देत हो, करते वेद बखान ।
केवल घड़ी आधी घड़ी, कर लें तेरा ध्यान ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद १०-२६ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा की रानी करे, सदा स्त्रियों का न्याय ।
राजा सारी नीतियां, उसे सदा समझाये ।।
रानी क्षात्र धर्म का, पालन सदा कराये ।
कभी किसी के साथ भी, अन्याय न हो जाये ।।

स्त्रि पुरुष को लज्जा से, बता न सब कुछ पाये ।
सच्चे अर्थों में तथ्यों को, प्रकाश में ला नहीं पाये ।।
भंय से आतंकित रहे, राज़ खोल नहीं पाये ।
इस कारण गुत्थी नहीं, पुरुषों से खुल पाये ।।

रानी ऐसे राज़ की, गहराई में जाये ।
किसी भी देवी की कोई, शिकायत रह नहीं जाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद १०-२७ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे राजा पुरुषों का, करता हर पल न्याय।
स्त्रियों को न्याय मिले, रानी करे उपाय॥

सत्य आचरण अपना करे, औरों से करवाये।
राज्य में पीड़ित और दुखी, कोई नहीं रह जाये।

ब्रह्मचर्य धारण करे, औरों से करवाये।
चक्रवर्ती शासन करे, सबको सुखी बनाये॥

नीति विद्या धर्म से, अपना ज्ञान बढ़ाये।
सुन्दर रीतियां नीतियां, राज्य में सदा चलाये॥

न्याय कारणी बन सदा, ऐसी धाक जमाये।
प्रजा सुखी होकर सदा, जय जयकार बुलाये॥

बोलिये वेद धर्म की जय ....

यजुर्वेद १०-२८ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

कीर्ति प्राप्ति जैसे करें, जग में पुरुष महान।
देवियों का अधिकार भी, इतना ही है लें जान।

प्राप्त करें वह भी सदा, धनुर्वेद का ज्ञान।
अथर्ववेद में भी सदा, होवें सुघड़ सुजान॥

सुखी रहें सब राज्य में, ऐसा करें विधान।
इतनी समर्थवान हों, कर पायें कल्याण॥

परिचित हों राज्य धर्म से, करें सदा अनुष्ठान।
पहुंचायें सबको सदा, सुख का हर सामान॥

रिद्धि सिद्धि प्राप्त कर, वह भी बनें महान।
शोभा सदा बनी रहे, उनकी ही मेहमान॥

बोलिये वेद धर्म की जय ...

यजुर्वेद १०-२९ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा भी और रानी भी, सबको न्याय दिलाये ।
पक्षपात को छोड़कर, सबको सुखी बनाये ।।
अग्नि सूर्य प्रकाश में, द्रव्यों में सुगन्ध लाये ।
वायु जल और औषधियों, को सुखदाई बनाये ।।

हर प्राणी संसार का, इनसे लाभ उठाये ।
राजा और रानी सदा, ऐसे कर्म कमाये ।।
न्याय प्रिय आचरण हों, ऐसा करें उपाये ।
राज्य में कोई भी कहीं, कभी न कष्ट उठाये ।।

सत्यकामी अधिकारी हों, त्रुटि न इसमें आये ।
सारी धरती राज्य की, स्वर्ग भूमि कहलाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-३० (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा सूर्य गुण युक्त हो, राजा वही कहाये ।
पिता तुल्य रक्षा करे, सबका बने सहाये ।।
आज्ञाकारी जो रहे, वही प्रजा कहलाये ।
पुत्र तुल्य सुविधायें सब, वही राज्य से पाये ।।

पशुओं का पालन करे, राज्य समृद्ध बनाये ।
वेद ज्ञान की शिक्षायें, चहों ओर फैलाये ।।
जल की भांति शांत रह, सबको शान्त बनाये ।
चन्दा की भांति सदा, चमके और चमकाये ।।

शुभ गुण कर्म स्वभाव से, जग में शोभा पाये ।
ऐसे राजा का सदा, बनता प्रभू सहाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-३१ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सब मनुष्यों को उचित है, सत्य धर्म अपनायें ।
आप्त पुरुषों उपदेशकों, से पायें शिक्षायें ॥
शुद्ध कर्म धर्म आचरण से, जीवन सदा सजायें ।
आत्मा योग के अंगों से, निर्मल सदा बनायें ॥
सम्पत्ति की प्राप्ति, सदैव करें करायें ।
ईश उपासना को कभी, दिल से नहीं भुलायें ॥
आपस में प्रीति रखें, मिल कर कदम बढ़ायें ।
मित्र भावना से सदा, सबका भला कमायें ॥
दृढ़ता से सारे सदा, अपना फर्ज निभायें ।
अच्छे गुणों से युक्त हो, परम सिद्धि को पायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-३२ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

जैसे कृषक परिश्रम करें, अन्नों को उपजायें ।
पृथ्वी देती है उन्हें, फल-फूल सोम लतायें ॥
उसकी रक्षा के लिये, दिन रात एक बनायें ।
सारे खर पतवार को, खेत से सदा हटायें ॥
राजा को प्रजायें सब, कर और कर्ज़ चुकायें ।
राजा परिश्रम से सदा, प्रजा को सुखी बनायें ॥
न्याय के आचरण से, ऐश्वर्य सदा बढ़ायें ।
सुपात्रों को दें सदा, सम्पदायें सुविधायें ॥
मिल जुल कर आनन्द सुख, भोगें सभी भुगायें ।
खुशियां हर प्रकार की, नई बहारें लायें ॥
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-३३ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

सभापति सेनापति, अपना फर्ज़ निभायें।
सूर्य चन्दा की तरह, चमकें और चमकायें ।।
दुष्ट जनों की दुष्टता, उनसे सदा छुड़ायें।
चेष्टावालों की प्रवृति, को निर्विघ्न बनायें ।।
राज पुरुषों के अनुकूल ही, रहें सभी प्रजायें।
इस भांति स्थिरता सदा, सारे राज्य में लायें ।।
दोनों मिलकर शेर की, भांति करें सेनायें।
राज्य के सभी मनुष्यों को, निर्भय सदा बनायें ।।
मेघों की भांति सदा, खेतों को लहलहायें ।
रमण करें सब खुशियों में, प्राप्त हों सब सुविधायें ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

यजुर्वेद १०-३४ (भावार्थ) 'काव्य पाठ'

राजा बुद्धि बल बढ़ा, मान सभी से पाये।
विद्या शिक्षा से सदा, वाणी मधुर बनाये ।।
वीर्यवान बनकर सदा, अपना गृहस्थ चलाये।
दिव्य गुणों से युक्त को, पत्नि सदा बनाये ।।
पिता तुल्य प्रजाओं के, सुख का करे उपाये।
रक्षा सदा ऐसे करे, कोई सता नहीं पाये ।।
सत्य पुरुषों की रीति से, राज्य को सदा बढ़ाये।
प्रजाओं को सन्तान तुल्य, सदैव सुखी बनाये ।।
राजा प्रजा का, प्रजा राजा का, हर पल हाथ बटाये।
हर इक का आशा सुमन, खिले और महकाये ।।
बोलिये वेद धर्म की जय . . . .

वैदिक संध्या की सम्पूर्ण आरती

तर्ज : ओम जय जगदीश हरे

दुख हरने वाला, प्रभु दुख हरने वाला, उसका ध्यान धरें हम।
उसकी शरण पड़ें हम, सुख देने वाला, प्रभु दुख हरने वाला।।

※ है प्रकाश स्वरूप वह, प्राणों से प्यारा। प्रभु प्राणों से प्यारा।
शुभ कर्मों का प्रेरक, सब का मार्ग दर्शक, तेजोमयी देवता — प्रभु दुख . . .

※ है वह सर्व व्यापक, कण-कण रमा हुआ, प्रभु हर मन बसा हुआ।
मन वांछित फल दाता, मन वांछित फल दाता, सुख की करे वर्षा–प्रभु . , .

※ करें पवित्र इन्द्रियां यह शुभ कर्म करें, प्रभु यह शुभ कर्म करें।
सन्मार्ग पर चलकर, प्रेम मार्ग पर चलकर, हम सब श्रेष्ठ बनें — प्रभु . . .

※ सभी दिशाओं का स्वामी, है अन्तर्यामी, प्रभु है अन्तर्यामी।
सुन्दर सृष्टि रचा कर, सूरज-चाँद सजाकर, नियन्त्रण में रखता–प्रभु . . .

※ करता सबकी रक्षा, अन्न बिजली द्वारा, प्रभु जल औषधि द्वारा।
देता ज्ञान की शिक्षा, देता वेद की शिक्षा, ऋषि, मुनियों द्वारा–प्रभु . . .

※ अन्धेरे से दूर उत्तम ज्योति वाला, प्रभु अमृत की धारा।
प्रलय के भी पीछे, सृष्टि के भी पीछे न्याय वही करता–-प्रभु दुख . . .

※ सुध सबकी है लेता देवों का है देवता, प्रभु देवों का है देवता।
झण्डियां हिला-हिला कर, संकेत दिखा-दिखाकर, मार्ग दर्शाता–प्रभु . . .

※ सुन्दर सृष्टि रचियता, ऋषियों का दृष्टा, प्रभु सबका है सृष्टा।
आकाश पृथ्वी आदि, सब के हृदय आदि, प्रकाशित करता–प्रभु दुख . . .

※ देखें सुनें सौ वर्ष तक, गुण गायें तेरा, प्रभु दर्शन करें तेरा।
इससे अधिक भी जियें तो, इस से भी अधिक जियें तो।
जीवन हो सुख से भरा–-—प्रभु . . .

※ शरण में तेरी हर पल सिर, झुकता मेरा, प्रभु नत-मस्तक मेरा।
अहसान तेरा मुझ पर, अति कृपा तेरी मुझ पर, हे आनन्द दाता–-प्रभु . . .

आठ प्रार्थना मन्त्रों की आरती

तर्ज : ओम जय जगदीश हरे

सब दुर्गुण हर ले, प्रभु सब शुभ गुण भर दे।
सकल जगत के स्वामी, दाता अन्तर्यामी, सुख साधन कर दे, प्रभु सब . . .

※ संसार की रचना से मौजूद थे पहले, सदा सृष्टि प्रलय करते।
सूरज चाँद सजा कर, जग सारा धारण कर, निर्मल मन करते—प्रभु सब . .

※ आत्म ज्ञान के दाता, बल देने हारे, प्रभु दुख सबके टारे।
अमृत तेरा छाया, दुखी है जिसने भुलाया, स्वीकार हमें कर ले—प्रभु . . .

※ अप्राणी प्राणि जगत की, तुम रचना करते, प्रभु नियन्त्रण में रखते।
गऊ इत्यादि बना कर, सब ऐश्वर्य दिलाकर, कल्याण हो करते--प्रभु . . .

※ सूरज पृथ्वी आदि, सब को किया धारण, प्रभु मोक्ष के हो साधन।
लोक लोकान्तर सजाये, आकाश भ्रमण कराये, कुल जग नमन करे-प्रभु . . .

※ सकल प्रजा के स्वामी, हो सबके प्यारे, करते वारे न्यारे।
कामना जिसकी जैसी, पूर्ति करते वैसी, घर धन से भरते--प्रभु सब . . .

※ विश्व के हो सुख दाता, भ्राता तुम्हीं सब के, ज्ञाता लोकों जन्मों के।
हे संसार के राजा, न्याय से है खुश प्रजा, तुम हो गुरु सबके---प्रभु सब . . .

※ स्वराज्य की प्राप्ति हो, चला उसी पथ पर, हम चलें सदा डट कर।
पूर्वज जिस पर चले थे, डंके उनके बजे थे। हममें वह बल भर दे--प्रभु . . ,

※ जीवन सफल करें हम, पास तेरे पहुँचें, प्रभु दुख सागर से तरें।
कुटलता हमसे छुड़ाकर, पापों से हमें बचाकर, गुण सम्पन्न कर दे--प्रभु . . .

※ वेद का पाठन पठन जब और जहाँ हो जायेगा।
शान्त सारी धरती सारा आस्मां हो जायेगा।
खूं बहायेगा किसो का न कोई संसार में।
चप्पा-चप्पा धरती का फिर स्वर्ग सम नज़र आयेगा।

—सम्पादक



